

# श्रीजैनप्रतिमा-लेखसंग्रह ।



संपादक और संचोदक—

इतिहासप्रेमी—क्याङ्गपानवाचस्पति—

जैनाचार्य श्रीमद् विजयपतीन्द्रसूरीश्वरजी  
महाराज



संपादक और अनुवादक—

जैन-बगरी के लेखक और प्राग्बाद-इतिहास-कर्ता—  
वीरसिंह सोडा 'अस्मिन्' बी ए



सर्वतत्रस्वतत्र विश्वपूज्य परमयोगिराज—  
 प्रभु श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ।



# श्रीजैनप्रतिमा-लेखसंग्रह ।

संपादक और सयोजक-

इतिहासप्रेमी-व्याख्यानवाचस्पति-  
जैनाचार्य श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी  
महाराज ।



संपादक और अनुवादक-

जैन-जगती के लेखक और प्राग्वाट इतिहास-कर्ता-  
शैलतसिंह लोढ़ा 'अरविंद' बी. ए.



अर्थसहायक

काव्यप्रेमी मुनिराजश्री विद्याविजयजी के मदुपदेश से  
मकुवरदेशान्तर-बालीनगरवास्तव्य-प्राग्वाटज्ञातीय-  
सौधमबृहत्तपोगच्छीय-श्वेताम्बरजैनसंघ ।



प्रकाशक

श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन, धामणिया ।

प्रतिष्ठान—

- १ श्री राजेन्द्रप्रबोधन-कार्यालय,  
छुवाछा वो अन्नना (मालवा)
- २ श्री पर्णीग्र-साहित्य-सदन  
धामपिया (मेवाड़)  
वे कछोछा-उमरवा

प्रथम संस्करण

मूल्य रु ३)

वीर मे २४५८ दि. स ९ ८, ई. स १९५१ एप्रिल में ४५.

मुद्रक—

साह गुज्जरर्षि कम्पन्सर्स,  
भी प्रहोद्व प्रिन्टींग प्रेस  
राजपीठ-माधवगढ़.

# प्रस्तावना



श्रीसौधर्मवृहत्तपागच्छीय आचार्यदेव श्रीमद् विजय-  
यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज का विक्रम संवत् २००४ में  
चातुर्मास थराद (थिरपुर) वनामकांठा, उत्तरगुजरात में  
था। कार्तिक माह में आपश्री डब्लु निमोनिया से इतने  
अधिक पीड़ित हुए कि जीवन की आशा भी नहीं रही।  
दूर-दूर के नगर, ग्राम एवं प्रान्तों से अनेक भक्तगण दर्श-  
नार्थ दौड़े जा रहे थे, मैं भी गया था। स्थिति सुधार पर  
थी, परन्तु आपको अधिक भाषण करने से तथा आये हुए  
भक्तजनों को दर्शन तक देने में भी होनेवाले श्रमसे बचने  
की चिकित्सकों की सम्मति थी। मुझ को दर्शन करने की  
आज्ञा मिल गई थी। आचार्यदेवने मुझ को कर-सङ्केत से  
धर्मलाभ देकर चिकित्सक महोदय की ओर देखा। चिकि-  
त्सक आचार्यदेव की अभिलाषा को समझ गये और मुझ से  
कुछ क्षण चर्चा करने की सम्मति दे दी। आचार्यदेवने  
पुस्तकों की एक ग्रन्थी खोली और उममें रही हुई शिला-  
लेखों के अक्षरान्तर की दो प्रतियाँ देखने को दीं। मैंने  
प्रतियों को सहज दृष्टि से देखीं तो ऐतिहासिक दृष्टि से वे  
अमूल्य प्रतीत हुई। चर्चा के अन्तर में आचार्यदेवने

कि—मैं इतना अस्वस्थ और अशक्त हूँ कि थिला-लेखों का अनुबाद, अनुक्रमणिका आदि करने में अपन को असमर्थ पाता हूँ। मेरी प्रार्थना पर वे प्रतियें मुझको दे दी गईं। मुझ से बेसा बन पढ़ा, बेसा संपादन एवं अनुबाद पाठकों के सामने हैं।

संपादन कला—

ऐसी पुस्तकें नहीं तो मैंने लिखी ही हैं और नहीं संपादित ही की हैं। थिला-लेख सम्बन्धी पुस्तकों का संपादन भी एक बलम कला है। उस पर दो शब्द लिखना कमी भी अप्रासंगिक नहीं है। थिला-लेखों का अनुबाद करने बैठने के पूर्व थिला-लेख सम्बन्धी साधन-सामग्री अधिक से अधिक संग्रह करनी चाहिये। तत्पश्चात् प्रारम्भ में प्रतिष्ठा करानवाले आचार्यों की वर्षानुक्रम से अनुक्रमणिका का पण्ड, संवत् और लेखाहों के ठरलेख के साथ साथ निर्माण करना अत्यन्त लाभदायक है। जब यह अनुक्रमणिका विनिर्मित हो जाए तब ऐसी अन्य पुस्तकों की अनुक्रमणिकाओं को इस दृष्टि से देखिये कि आप की पुस्तक में आये हुए आचार्यों के नाम उन पुस्तकों की अनुक्रमणिकाओं में आये हैं? एक ही नाम के अनेक आचार्य हो गये हैं, लेकिन इससे पश्चान की कोई आवश्यकता नहीं। एक ही नाम के पणपि एक और विभिन्न-विभिन्न गण्टोंमें

अनेक आचार्य हो गये हैं, परन्तु वे आगे पीछे हुए हैं और अगर कुछ एक ही नाम के एक ही समय में भी हो गये हैं तो भी गच्छ अलग अलग होने से वे थोड़े श्रम से अलग अलग वर्गीकृत किये जा सकते हैं। एक ही गच्छ में एक नाम के दो या अधिक आचार्य कभी भी एक समय में नहीं हो सकते, उनमें कुछ अन्तर रहता ही है ऐसी मर्यादा है। ऐसा करने से संवत्‌ों की भूल भलें न निकले, लेकिन आचार्यमय गच्छ अनुक्रमणिकाओं में परस्पर एक और अनेक संवत्‌ों में मिल जाते हैं। कभी कभी गुरुपरम्परायें भी मिल जाती हैं। कभी एक ही आचार्य के दो या अधिक कुछ या मर्वाशतः मिलते हुए लेख एक या अन्य पुस्तकों में इस प्रकार यत्न और श्रम से निकल आते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि संवत्‌ों की त्रुटियाँ भी यथासंभव दूर की जा सकती हैं और शासनकाल और शताब्दियों की त्रुटियाँ तो अनेक सुधारी जा सकती हैं। लेखों में आये हुए गृहस्थों के नामों की भी अगर वर्णानुक्रम से अनुक्रमणिकायें ज्ञाति, गोत्र और संवत्‌ लेखाङ्क के साथ साथ हो तो एक ही दिन, तिथि और माह-संवत्‌ के कभी कभी एक ही वंश के एक ही पुरुषों या कुछ पुरुषों के नामों से गर्भित एक-दो लेख एक या अन्य पुस्तकों में क्रम से मिल जाते हैं और आचार्य के नाम और गच्छ में रही त्रुटियाँ बहुत अधिक दूर की जा सकती हैं और इनसे उनकी



भी । उक्त अनुक्रमणिका के बन जाने तथा उसकी तुलना अन्य पुस्तकों की अनुक्रमणिकाओं से कर लेने के पश्चात् अनुवाद का कार्य सठाना अधिक उपयुक्त एवं सुविधाजनक होता है, क्योंकि उस समय तक शिक्षा-लेखों का अनेक समय अबसोदन वैसा अनुक्रमणिका बनाने का कारण बार-बार करना पड़ता है, हो गया होता है और लेखों का सुधार एवं संशोधन भी जो इसी काय के साथ साथ अनिवार्यता पड़ता था समाप्त हो जाता है । अन्य अनुक्रमणिकाएँ अनुवाद कार्य के पश्चात् बनाई जा सकती हैं ।

### शिक्षा-लेखों का क्रम—

आचार्यदेव का चतुर्मास धराद में होना निश्चित हो गया था और सुबाला ( मारवाड़ ) से आपका विहार पतवर्ष धराद की ओर छुटाई सन् १९४७ में प्रारम्भ हो गया था । खीरापल्ली से सगा कर आपके मार्ग में ब्रितने ग्राम, नगर, पुर पड़ आपसे अधिकांश मन्दिरों के और प्रतिमाओं के लेख लिये, जिनका सठारना सुविधा, अबसर से बन सका । जैनप्रतिमा-लेखसंग्रह का निमित्त कारण धराद में चतुर्मास का निमित्त होना है तथा अन्य धराद के २७३ दोस्रो तिहत्तर पातुप्रतिमा एवं पाषाणप्रतिमा लेख हैं । इन दो कारणों से इस पुस्तक में अधिक प्रशस्तता धराद की है । अतः लेखों का क्रम धराद के लेखों से ही प्रारम्भ किया

है। थराद के लेखों के पश्चात् जीरापल्ली (जिरावला) तीर्थ से मार्ग में आये हुए गाँवों के लेखों का अक्षरान्तर क्रम से दिया है। जैनघरों की तथा मन्दिरों की संख्या तो आपने अपने मार्ग में आये प्रत्येक ग्राम, नगर की ली है जो अलग विहार-दिग्दर्शन शीर्षक से लिखी गई है।

अनुवाद—

१. भले कोई समझे कि अनुवाद में अधिक श्रम नहीं पड़ता है, क्योंकि आदर्श और आधार मानने होते हैं। लेकिन अनुवाद एक ऐसा निश्चित, सीमित निर्दिष्ट पंथ है कि जिसमें होकर सफलता पूर्वक पार हो जाना भाग्यशाली का कर्म है। यतीन्द्रजैनलेखसंग्रह के लेखों की रचना प्रायः अधिकतर एक-सी मिलती हुई होने पर वाक्य-विन्यास इतना शिथिल है कि अभीष्ट की प्राप्ति में उलझन पड़ जाती है। सर्व से अधिक जो द्विधा रहती है, वह है लेख के न्यास करनेवाले की शोधने की। अनेक लेखों से पता ही नहीं चलता कि प्रतिमा का करानेवाला कौन व्यक्ति है?, जैसे देखिये 'धरणा पुत्र वेला भार्या विमलादे पुत्र खेमा, गेला, गजादिनि०' प्रतिमा करानेवाला धरणा है या वेला? 'धरणापुत्र वेला' इस प्रकार के लेखन से तथा धरणा की स्त्री का नामोल्लेख भी नहीं होने से तथा वेला तीन या अधिक लड़कों का पिता है से यही ध्वनि निकलती है कि

इस प्रतिमा का करानेवाला बेला था और प्रसिद्धा के समय से पूरा संभवतः मातापिता मर चुके थे। यही अनुमान सत्य है—मेरा यह दावा नहीं है।

२ लम्बाइ ७७ में 'जीवितस्वामि' पद का प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि दरबारन अवतार माता-पिता की जीवितवस्था में ही जीवितस्वामिप्रतिष्ठित करवाया, परन्तु इससे यह सिद्धान्त स्थिर नहीं किया जा सकता कि बिम सेन में 'जीवितस्वामि' पद का प्रयोग नहीं हुआ हो क्योंकि लल क सिम्हानवाले के माता, पिता, या पति उस समय से पूर्व मर चुके थे। लम्बाइ १८, २१, २६, ३०, ४३ ४६, १३९, १६१ में भी इस पद का प्रयोग है। अथर्व करानवाली कबल स्त्रियाँ हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि 'जीवितस्वामी' पद का प्रयोग सौ० स्त्रियों के चित्तालसोंमें 'अधिक' मिलता है।

३ कबल मंगलशुभक शब्दों एवं कुछ पदों को छोड़ कर शेष प्रत्येक लल का पूरा पूरा अनुवाद किया है। जहाँ एक ही शब्द के अधिक लल प्राप्त हुए हैं, वहाँ उनका भ्रम चक्र भी देने का प्रयत्न किया गया है। परस्पर मिलनवाले दो या अधिक लेखों के नीचे चरण-लेख दिया गया है। बिम सेन में दुर्बोधता एवं अस्पष्टता है, उनको यथाशक्य स्पष्ट करने का पूरा पूरा प्रयत्न किया गया है। प्रत्येक लेख

के अनुवाद को तत्सम्बन्धी ग्राम, तीर्थ, नगर और जिनालय के नाम से तथा देवकुलिका की क्रम-संख्या से शीर्षाङ्कित किया गया है। अर्थात् ग्राम, तीर्थ, नगरवार; सेरी, मोहला और मन्दिरवार तथा देवकुलिकाओं की संख्यावार उनको वर्गीकृत किया गया है। ऐमा करने का उद्देश्य पाठकों को सुविधा देना तो है ही, परन्तु कार्य को सुगम बनाना प्रथम है और अतः अनिवार्य है।

लेखों की भाषा, शैली और लिपि—

लेखों में वर्णित विषय गद्य में है। समूचे पृस्तक में केवल ५ श्लोक आये हैं। लेखों की भाषा संस्कृत होते हुए भी अशुद्धता लिये हुए है, परन्तु निश्चित और संमत है और वाक्यविन्यास की दृष्टि से अप्रौढ़ है, फिर भी व्यवहारिक है। वाक्यों में शब्दों का क्रम कलापूर्ण नहीं है परन्तु, सोदेश है। अशुद्ध, अप्रौढ़, कलाविहीन होते हुए भी भाषा निश्चित-सी हो गई है। ग्यारहवीं शताब्दि के और सतरहवीं अठारहवीं शताब्दि के लेखों की भाषाओं में कोई अन्तर नहीं दिखाई देता। निम्न उदाहरण देखिये:—

लेखाङ्क ३३१--सं० १०११ आपाढसुदि ३ शनीश्वरे  
सनढमार्या नयणादेवी पुत्र वसीया भार्या वयजलदेवी पुत्र  
लाखसिंह तेन श्रीपार्श्वयुग्म कारितः, वृहद्गच्छीयपरमानन्द-  
सूरिशिष्यश्रीयक्षदेवसूरिमिः प्र० ।

सन्नाह ३१९—सं० १८६९ पौषसुदि १२ गुरौ श्री  
 ऋषभदेवकी पादुकाभ्यो नमः, म० श्रीविश्वयलक्ष्मीस्वरिभिः  
 प्रतिष्ठित लोटीपुरपञ्चणे ।

भापा का यह स्वरूप आज तक ज्यों का त्यों चला  
 आ रहा है । आज क प्रतिमा लखों में भी अब कि भापाओं  
 की उन्नति आयातीत होती चली जा रही है, हमार ग्रिला  
 लेख लिखनवाले भापा को बिकास नहीं द रह हैं । उसी  
 स्वरूप को आस और छात्रीय मान बैठ हैं, और पैली को  
 भी बूढ़ घना दिया है ।

१ अ-प्रत्येक लेख की आदि में संबत् ।

ब-उत्पन्नात् माह, तिथि और दिवस ।

अधिक प्राचीन लेखों की आदि में अधिकतर कबल  
 संबत् का ही उल्लेख मिलता है । जैसे सन्नाह १८७, ३२१,  
 ३२३, ३३३ को देखिये । तेरहवीं शताब्दि स संबत्, माह,  
 तिथि, दिवस का उल्लेख नियमित रूप से मिलता है ।

२ संबत्, दिवसादि क पन्नात् व्यवहारी, भेष्टि के ग्राम,  
 जाति, गोत्र और कहीं गण्ड का उल्लेख होता है । ग्राम का  
 नाम लेखों क अन्त में भी पाया जाता है । किसी किसी  
 लेख में स सर्वाङ्ग न होकर कम भी होत हैं ।

३ उत्पन्नात् व्यवहारी—भेष्टि का नाम या उसके पूर्वजों

के नाम मय -विशिष्ट पद चिह्न जैसे संघवी, मंत्री और मह-  
त्तम आदि अनुक्रम से होते हैं । कहीं कहीं आचार्यादि नाम  
भी इस स्थल पर मिलते हैं । ऐसे लेख बहुत कम हैं जिनमें  
श्रेष्ठ पुरुष के नाम नहीं हैं । ऐसे भी लेख हैं जिनमें पूर्वजों  
के नाम नहीं हैं ।

४ तत्पश्चात् उस स्त्री और पुरुष का नाम होता है  
जिसके श्रेयार्थ वह पुण्यकार्य किया जाता है । अगर व्यव-  
हारी अपने श्रेयार्थ ही वह पुण्यकार्य करवाता है तो वहाँ  
आत्मश्रेयार्थ या स्वश्रेयार्थ लिखा होता है ।

५ तत्पश्चात् विम्ब और पट्ट का उल्लेख होता है ।

६ तत्पश्चात् गच्छ, गच्छान्तर, शाखादि के साथ प्रतिष्ठा  
करनेवाले आचार्य, साधु का नाम, उनके गुरु आदि पूर्वाचार्यों  
के नाम-अनुक्रम से होते हैं । गच्छ का नाम कहीं कहीं  
लेखों के अन्त में भी होता है । ऐसे पांच लेख हैं जिनमें  
प्रतिष्ठा-कर्त्ता आचार्यों के नाम नहीं हैं । अन्य उगन्तीम  
लेख ऐसे हैं जिनमें से नौ में गच्छ और आचार्य के और  
बीस में गच्छ के नाम नहीं हैं ।

७ क्रियापद कहीं आचार्यादि के नाम के पहिले और  
कहीं पश्चात् होता है ।

८ शुभं भवतु, श्री श्री आदि मंगलसूचक शब्द हमेशा  
जहाँ कहीं भी होते हैं लेखों के अन्त में रहते हैं ।

लिखा और प्रतिमा के छेखों की लिपि देवनागरी होती है । अक्षरों का आकार प्राचीन लिपि का होता है । परन्तु यह कहना पड़ेगा कि समय की गति के साथ लिपि की गति भी परिवर्तित होती रही है । अक्षरों का आकार उत्तरोत्तर परिमार्जित होता चला आया है । अधिकतम प्राचीन लेखों के अक्षरों का आकार इतना विविध होता है कि उनका पढ़ना उस पुरुष के लिये ही संभव और सम्भव है कि जो प्राचीनतम लेखों के पढ़ने का अभ्यासी हो । दो बातें जो स्पष्ट होती हैं—एक यह है कि ऐसे भी लेख हैं जिनकी रचना से यह पता नहीं चलता कि लेख को उत्कीर्ण करानेवाला तथा पुष्पकर्म करने करानेवाला व्यक्ति कौन है ? तथा उस लेख में वर्णित व्यक्तियों में से कौन उस दिन उपस्थित या जीवित था ? कोई एक सिद्धान्त स्थिर करके ही यह जाना जा सकता है ।

दूसरी बात यह है कि ऐसे भी लेख हैं जिनसे प्रतिष्ठा कहीं हुई ? किस ग्राम के वासीन करवाई का पता चलना भी कठिन होता है । जैसे 'राजपुर' अर्थात् प्रतिष्ठा राजपुर में हुई, परन्तु प्रतिष्ठा करानेवाला भेष्टि राजपुर का था या अन्य ग्राम का ? प्रश्न रह जाता है । ऐसी स्थिति में वह भेष्टि राजपुर का ही निवासी था मानना अधिक उपयुक्त एवं संयत होता है । इसी प्रकार राजपुर निवासीने प्रतिष्ठा करवाई का अर्थ 'राजपुर' शब्द के अभाव में राजपुर में

प्रतिष्ठा करवाई अर्थ लेना पड़ता है । जहाँ प्रतिष्ठा हुई हो, अगर ग्राम का नाम भी दिया हो तब तो कोई प्रश्न ही नहीं बनता है ।

**व्यवहारी, श्रेष्ठि के नामों की विचित्रता—**

प्रथम बात जो यहाँ कहनी है वह यह है कि नामों में आजकल जो लाल, चन्द्र, राज, सिंह, देव, मल आदि प्रत्यय होते हैं वे १६ वीं शताब्दि से पूर्व के नामों में प्रायः नहीं मिलते, अर्थात् नाम एक-शब्दात्मक ही होते थे या लिखे जाते थे । एक-शब्दात्मक नाम का रूप भी कहीं कहीं ऐसा विचित्र मिलता है कि इस विकास के युग में भी जिनका अर्थ और रूप समझना बड़ा कठिन हो जाता है । उस समय के पुरुषों और स्त्रियों के नामों के उच्चारण की ध्वनि उस युग के वातावरण की अनुमारिणी थी—यह ऐतिहासिक या वैज्ञानिक तत्त्व इन नामों की बनावट में ओत-प्रोत समाया हुआ है, या यों कहना चाहिये कि उस युग ने ही नामों की ऐसी एक-शब्दात्मक रचना की । दशवीं शताब्दी से भारत में यवनों के आक्रमणों का जोर बढ़ चला था । चारों ओर क्रोध, उत्साह, घृणा, जुगुप्सा, आक्रोश के भाव बढ़ते चले जा रहे थे, जिनका अन्त अकबर बादशाह के समय में जा कर होना प्रारम्भ हुआ । अकबर बादशाह के समय में बाहरी आक्रमणों का अन्त पूर्णतः हो गया था और सर्वत्र



अत्याचार, बडास्कार रुक-से गये थे। प्रेम और धान्ति का वातावरण पुनः आप्रत होने लगा था। मनुष्य अब कोपातुर, आक्रोश में होता है, अबका राग-द्वेष मरे क्षम्यों में बोलता है या किसी मय पुरुष के साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करता है, उस समय वह मेघराज क स्थान पर मेघा, रामचन्द्र क स्थान पर रामा बोलता है। युद्ध करत समय देवहन्, पश्यन्, मरहन्, माञ्जन् राउल आदि नामों का प्रयोग प्रिय, महान् एव उत्साह बनेक होता है।

रामाद, मावहन्, माञ्जन् आदि स्त्रियों के नामों से हमें उस समय क वीरपुरुषों की देवी अर्थात् रणचण्डिका के प्रति आस्था और भद्रा का परिचय मिलता है और माय ही स्त्रियों में भी रौद्रभाव अबका ओजस्व मरा होता है और उस समय में स्त्रियों में रह हुए ये भाव आप्रत और इर्द्धि मत्त रहने चाहिये ये का परिचय मिलता है। रामा और रामू का प्रयोग प्रेममरा भी कहा जा सकता है, लेकिन मात्र बर्षों क छिन्न। एक ही नाम को भिन्न भिन्न रमातिरेक में किस प्रकार तोड़मरोड़ कर अपभ्रंशित कर बोला जाता है का उदाहरण नीचे देखिये। इस उदाहरण के देने का मूल अर्थ यह है कि उस काल में किस रम का अतिरेक था। पाठक भक्तिविषय समझ सकेंगे। शृङ्गार, धान्त और करुण रस सतोगुणी हैं, हास्य, वीर और रौद्र रसोगुणी तथा मया नक, वीमत्स और अपहृत रस तमोगुणी हैं।

१ शृङ्गार-रामचन्द्र, रामलाल, प्रेमचन्द्र, वृद्धिचन्द्र ।

शान्त-राम, प्रेम, वृद्धिचन्द्र, वृद्धा ।

करुण-राम, रामू, प्रेम, प्रेमू, वृद्धु, वृद्धा ।

२ वीर-रामसिंह, रामल, प्रेमल, प्रेमसिंह, वृद्धिसिंह ।

रौद्र-रामसी, प्रेमसी, वृद्धसी, वरदसी ।

हास्य-रामो, प्रेमो, वरदो ।

३ भयानक-रामा, प्रेमा, वरदा ।

बीभत्स-रामला, प्रेमला, वरदा ।

अद्भुत-राम्या, प्रेम्या, वरद्या ।

प्रस्तुत पुस्तक में आये हुए नाम रजोगुणी एवं तमोगुणी रसों की रचना है । यवन आततायियों का हिन्दुओं पर अत्याचार, गजा राजाओं में परस्पर मान एवं मिथ्या गौरव को लेकर द्वन्द्वता और उममें मोली प्रजा का सर्वनाश, व्यापार एवं कृषिकी हानि, तलवार के घनियों का निर्बल पर, व्यापार एवं कृषिप्रियतथा शूद्र जातियों पर आतंक और अत्याचार, रात-दिन युद्ध में लगे रहनेवालों के लिये व्यापारी एवं कृषकवर्ग को तथा शूद्रों को आयुभर बैठ और बैगार करते रहना, योद्धाओं का म्यान और योद्धाओं की सुविधा के लिये व्यापारी, शूद्र और कृषकवर्ग के इस प्रकार अमानुषिक उपयोगने युग की शान्ति को भंग कर दिया, गृहस्थ का सुखमरा जीवन

नष्ट कर दिया, प्रेम, स्नेह और सहानुभूति की इतिभी कर दी। इस प्रकार व्यापारी, शूद्र एवं कुपकुर्बर्ग लगभग ५०० वर्षों तक पददलित और आर्तक्षिप्त रहा, उस समय विप्र पूजनीय और शूत्री योद्धा होने के कारण सम्माननीय थे। शूत्री लोग, व्यापारी, शूद्र एवं कुपकुर्बर्ग के पुरुषों को एक-वृन्दारमक और वह भी अपमानजनक नाम लेकर बोलाते थे। जैसे मूछपन्त्र को मूछा, मूछ, मूछिया, मूस्या और योद्धाओं को मस्त्रण, मूछण, मूछसी एवं मूछसिंह कह कर बोलाते थे। इस प्रकार यह हुआ कि इन वर्गों के नाम ऐसे ही रहने और पढ़ने लगे। अंतर इतना हुआ कि मूछा, मस्त्रण, मूछम व्यापारी एवं कुपकुर्बर्ग के पुरुषों के नाम रहे और मूछिया, मूस्या, मूछा शूद्रवर्ग के पुरुषों के नाम पड़े। धीरे विचार से अब पाठक समझ गये होंगे कि नामों की इस वैचित्र्यपूर्ण रचना और आकृति में वह अज्ञान्त युग झुलक रहा है। ये नाम उस युग की वैज्ञानिक एवं रासायनिक प्रक्रियाएँ हैं, उस युग के वातावरण के, पारस्परिक व्यवहार के, सम्पत्ता नैतिकतापूर्ण सम्बन्ध के चट्ट हैं, पाठ हैं। नामों की यह आकृति उपहास एवं विस्मय की वस्तु नहीं, बरन इतिहास की संरक्षणीय एवं संग्रहणीय संपत्ति है।

**अनुक्रमणिका का महत्त्व—**

बिना हमी के एक ठाँवा खोजने में कितना समय

लग जाता है और इसके उपरान्त चित्त को कितनी बेचेनी और पीड़ा होती है, मस्तिष्क में कैसा धक्का लगता है—यह या तो वे जानते हैं जो अनुभवी हैं, या वे जिनकी कभी कुंजियाँ गुम गई हों, जहाँ सैकड़ों तालों की कुंजियाँ हों ही नहीं या गुम गई हों, फिर वहाँ तो व्याकुलता का पार ही नहीं रहता। अनुक्रमणिकाओं के बिना ऐसी ऐतिहासिक पुस्तकें अकारण झंझट हो जाती हैं। लेखक या संपादक अनुक्रमणिकाएँ बना कर पाठकों को एक अद्भुत सुविधा तो प्रदान करते ही हैं, साथ में पुस्तक की उपयोगिता भी अनन्त बढ़ जाती है। इस पर-सुविधा के अतिरिक्त लेखक तथा संपादक को अनुक्रमणिकामें विनिर्मित करते समय लेखों में स्थान तथा आचार्य और पुरुषों के नामों में, वर्ष, माह, तिथि और दिनों में, जाति, गोत्र, संप्रदाय, गच्छ, सन्तानीय, शाखा, प्रशाखा, आचार्य और पुरुषों की सन्तति की परम्पराओं में जो त्रुटियाँ नेत्रदोष के कारण लेखों की प्रतिलिपि करते समय आ जाती हैं, अथवा मूल लेखों में वर्षा, आतप, भूकंप, जैसे प्रकृति के सगों के कारण जीर्णता और भग्नता, अधिक काल व्यतीत हो जाने के कारण जीर्णता, और विधर्मी आततायियों के दुष्प्रहारों के कारण भग्न होने से विकृति, और अस्पष्टता आ जाती है, वे पूर्ण समान अथवा कुछ अंशों में मिलनेवाले लेखों के परस्पर मिलान से अत्यधिक दूर हो जाती हैं। लेखक का श्रम सफल हो

जाता है और पुस्तक अत्यन्त उपादेय और एक ऐतिहासिक सत्य बन जाती है ।

ज्यों ज्यों अनुक्रमणिकायें बनती जाती हैं, लेखकमें अधिकधिक साधन सामग्री ज्ञान क मास बढ़ते जाते हैं और लेखक में अधिक धर्म, अनुशीलन, मनन और विवेचन करने की मधुर रुचि बढ़ती जाती है और इस प्रकार पुस्तक अधिकतम सत्य एवं सुन्दर बन जाती है । झिळा एवं प्रतिमा-छेत्नों में आये हुए संघर्ष, काँति, मोक्ष, कुल, धात्वा, ग्राम, नगर, तीर्थ, गृहस्थ, गन्ध, आचार्य, रामा, मन्त्री, भेटी आदि सर्व की परिचायिका अनुक्रमणिका है । दोषकों का यह समय और बन बचानेवाली हैं । इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए प्रमुल प्रमुल सर्व प्रकार की अनुक्रमणिकायें देने का प्रयत्न किया है ।

अन्तिम निवेदन ।

मैंने पुस्तक को साधनसामग्री एवं योग्यतानुसार अधिकतम ऐतिहासिक एवं रुचिकर और उपादेय बनाने का प्रयत्न तो किया है, लेकिन फिर भी अनेक त्रुटियों एवं कमियों का रह जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है । मेरी शक्ति के बाहर की बातों के लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ । एक बात जो मेरे साधियों से निवेदन करनी है वह यह है कि मैंने इस कार्य को जिस छौंठी एवं मार्ग से पूर्ण किया है

और वह शैली एवं मार्ग किस प्रकार असुविधाओं से खाली पाया जा सकता है जिसका विवेचन मैंने स्थल स्थल पर दिया है को वे मनन, अनुशीलन कर अपने श्रम, समय और पैसे की पर्याप्त बचत कर सकते हैं ।

आचार्यदेवने मुझको यह कार्य देकर जो मेरा मान और अनुभव बढ़ाया है, मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ और उसके लिये आपका अमर आभारी रहूँगा । मुनि श्रीविद्याविजयजी साहब तथा सागरविजयजी का भी इस पुस्तक में अनेक भांति से श्रम मिला हुआ है, वे भी अनेक धन्यवाद के पात्र हैं ।

महावीरजयन्ती	}	श्रीवर्धमान जैन	{	संपादक-
चैत्र शु० १३ बुधवार		योडिंग हाउस		दौलतसिंह लोढ़ा जैन
विक्रम स० २००५		सुमेरपुर(मारवाड़)		'अरविन्द' वी. ए.



# १ विहार—दिग्दर्शन ।

[ श्रीराण्छीतीर्थ से प्रारंभ हुआ ]

ग्राम वनर.	अंतर (शे.)	वेग (मि.)	वेग (मी.)
बदमाज	३	१	३
संभार	४	२	२५०
भारणी	२३	१	१४
कुशावादा	६	०	८
फनरोवरा	१	०	२
रायो	१	०	३
जाबल	१ <sup>१</sup> / <sub>२</sub>	०	३
बईवादा	२	०	५
बनोदा	२	०	५
बदनाल	४	०	२
मीछदिवा	१	२	४
नेहवा	१ <sup>२</sup> / <sub>२</sub>	१	२०
बेरगाढ़	१	०	३
मानपुर	१ <sup>२</sup> / <sub>२</sub>	०	०
नारायण	१	०	०
बासुम	१	१	२५
बासणा	१ <sup>२</sup> / <sub>२</sub>	१	३५

लुआणा	३	१	२५
खोरला	३	०	१
मसुपुर	३	०	०
थराद	१	१२	६००
पावड़ मोटी	३	१	१८
जेतड़ा	२ $\frac{१}{२}$	१	२५
पड़ादर	३ $\frac{१}{२}$	०	०

## २ लेखोंकी ग्राम, नगर, तीर्थ क्रम से अनुक्रमणिका

ग्राम नगर, तीर्थ	लेखाङ्क
थराद ( वनास कांठा )	१ से २७३
जीराडला तीर्थ ( सिरोही )	२७४ से ३१७
छोटाणा तीर्थ       ,,	३१८ से ३२१
सेलवाड़ा               ,,	३२२
महावीरमुछाला ( घाणेराव )	३२३, ३२४
वरमाण	३२५ से ३२८
आरस्ती	३२९, ३३०
दयाणा तीर्थ	३३१
काछोली	३३२
पिंढवाड़ा	३३३
भीलड़िया तीर्थ	३३४ से ३४४
नेसड़ा	३४५, ३४६



बास्पम	३४७, ३४८
बासना ( पाकमपुर )	३४९ से ३५३
सुभाषा	३५४ से ३६८
मोटी पावड़ ( बाब )	३६९
मेठड़ा ( बराह )	३७० से ३७४

## ३ लेखों की स्थान क्रम से अनुक्रमणिका—

धराद—	मोमकों की सरी—
सेठों की सेरी—	
१ बीरचैतान्दमैठ वास्तुपूज्य चैत्य वास्तुमय पंच तीर्थियाँ १ से २२	४ हरचन्द्रपमदेव चैत्य वास्तुमय मूर्तिर्बो २०५ से २२७ देवार्थियों की सेरी
२ बीरचैत्य में चौबीसी पंच तीर्थियाँ २३ से ३४	५ विमलमाधव चैत्य चौबीसी, पंच तीर्थियाँ २२८ से २५१ सुमारों की सेरी—
३ बीरचैत्य में आदिनाथ चैत्य चौबीसी पंच तीर्थियाँ ३४ से १०४	६ पार्थनाथ चैत्य वास्तु चौबीसी पंचतीर्थी २५२, २५३ आमली सेरी— ७ सुपार्थनाथ चैत्य—

धातु चौबीसी,	३ मंडपगत सपरिकर
पंचतीर्थियाँ २५४ से २५९	प्रतिमा ३२०
राशिया सेरी--	४ धातुमय पंचतीर्थी ३२१
८ अभिनन्दनस्वामी चैत्य	सेलवाडा--
धातु पंचतीर्थी	धातुमय पंचतीर्थी ३२२
चौबीसी २६०, २६१	महावीर मुलाला--
मोदियों की सेरी--	१ मन्दिर की भमती
९ विमलनाथ चैत्य--	की छत में ३२३
धातुपंचतीर्थी	२ प्राचीनखडित
चौबीसियाँ २६२ से २६७	पद्मासन ३२४
सुतारों की सेरी--	वरमाण तीर्थ--
१० आन्तिनाथ चैत्य	१ कायोत्सर्गस्थ-प्रतिमा
धातुपंचतीर्थी, चौबी-	३२५, ३२६
सियाँ २६८ से २७३	२ पटचतुष्टिका के
जीराउलातीर्थ--	स्तम्भ पर ३२७
१ देवकुलिकाओं	३ पद्मशिला पर ३२८
के लेख-२७४ से ३१६	आरखी--
२ चतुष्टिका स्तम्भ पर ३१७	धातुमय पंचतीर्थी
लोढाना तीर्थ-चैत्य--	३२९, ३३०
१ कायोत्सर्गस्थ--	दयाणा तीर्थ--
प्रतिमा ३१८	कायोत्सर्गस्थ-प्रतिमा ३३१
२ ऋषभदेव-पादुका ३१९	



## काठोठी

पार्श्वनाथ-मन्दिर ३३२

## विहवाडा-

बीरचैत्र में पातु प्रविभा ३३३

## मीठडिया तीर्थ

१ पंच तीर्थों ३३४, ३३५

२ पातुका युगल ३३६, ३३७

३ भूमिपूजा पंच

तीर्थों ३३८, ३३९

४ पद्यासम की मीठ

पर ३४०

५ मोपान के पास

स्थान पर ३४१

मीठडीग्राम (गृहमन्दिर में)

१ मूकनायक प्रविभा ३४२

२ अम्बिका मूर्ति ३४३

३ अम्बिकायक मूर्ति ३४४

## मेसडा-

पार्श्वनाथ मन्दिर ३४५, ३४६

## वात्पम-

१ पातुमय पंचतीर्थी ३४७

२ चरणपातुका ३४८

## वासणा ।

१ पातु पंचतीर्थी ३४९

२ चम्पूप्रम बिज के

नाम भाग में ३५०

३ चम्पूप्रम बिज के

दाहिने भाग में ३५१

४ चम्पूप्रम-बिज

मूकनायक ३५२

५ पद्यासम के नीचे ३५३

## सुभाणा ।

१ बिमलनाथ बिम्ब ३५४

२ महावीरबिज बिम्ब ३५५

३ पातु चौबीसी पंच

तीर्थों ३५६ से ३६८

## मोटी पावड़ ।

पातु चौबीसी ३६९

जेठडा (गृहमन्दिर)

३७० से ३७४

## ४ संवत्सरवार अनुक्रमणिका ।

संवत्	लेखाङ्क	संवत्	लेखाङ्क
ग्यारहवीं शताब्दि ।			
१००१	३३३	१२४२	३२८
१०११	३२१, ३३१	१२४४	२१६, ३४५
१०४६	१८७	१२६१	२०३
१०६२	३२३	१२६३	५१, ३०८ (अ)
<u>४</u>	<u>५</u>	<u>१२९१</u>	<u>३४</u>
		<u>११</u>	<u>१२१</u>
बारहवीं शताब्दि ।		चौदहवीं शताब्दि ।	
११३०	३१८	१३०३	३३२
११४४	३२०	१३०९	१०६, १९९
११४८	१८०	१३३४	३३९
११५९	२२७	१३४१	१४९
<u>४</u>	<u>४</u>	१३४४	३४३, ३४४
तेरहवीं शताब्दि ।		१३४९	२०
१२०४	१७३	१३५१	३२५, ३२६
१२०९	२५९	१३४७	५५
१२१४	३२४	१३५९	१५८
१२१७	२००	१३६४	१११
१२२०	८५	१३६७	३३४
१२४०	३४९	१३६९	५७, ३४६

१३७३	१५९	१४३२	२१
१३७४	१९२	१४३३	७
१३८७	१७९	१४३४	१०२
१४९२	२४९	१४३५	९९
१३९४	१९३	१४३६	११२, १७०
१३९९	१ ७	१४३७	२०९
<u>१८</u>	<u>२२</u>	१४४२	१६१, ३२८
		१४४९	१५९, ३४७
		१४५०	१३६
		१४५२	१८१
		१४५३	६२, १८४
		१४५६	१८२
		१४६२	१०३
		१४६५	१८३
		१४७१	७५, १५२
		१४७२	३६९
		१४७४	२८७
		१४७९	६६, ११३, २ ६
		१४८०	२०५
		१४८१	२१८ २७४,
			२७५, २७६
		१४८२	६०, १५४

पन्द्रहवीं शताब्दि ।

१४०१	९१		
१४ ४	१७८		
१४ ६	३३०		
१४११	२२४, ३१		
१४१२	२०१, ३११		
१४१३	३०९		
१४१७	१३		
१४२१	६, ३०३ (अ)		
	३०४ (अ)		
१४२२	२४५		
१४२४	२९२ (अ)		
१४२५	३७२ ३७४		
१४२९	१५		
१४३०	१०५		

## सोलहवीं शताब्दि ।

१४८३ २३, २०८, २६८,  
 २७८ से २८६,  
 २८८, २८९, २९०  
 से ३०१, ३०३ (ब),  
 ३०४ (ब), ३०५ से  
 ३०८, ३१२, ३१३

१४८४ १६९, १८६

१४८५ ७०, १७६, २३०

१४८६ ३२७

१४८७ २७७, २७८, ३१६

१४८८ ५८, २३७, ३७३

१४८९ १८८, १९८

१४९२ ३१४

१४९३ ७३, ९८, १६३,  
 २४४

१४९४ १९६, २७३

१४९५ १४

१४९६ १८५

१४९७ ५४

१४९९ ५०, ७८, १३२,  
 १९०, २३८, २५५

४८

११०३

१५०१ ४, १६, ६५, ९१,

९६, १५३

१५०३ १५०, १६०,

१६२, २१०, २१९

१५०५ १, २४, ६९, ९७,

१३९, १४२, २०९,

३६०

१५०६ ४३, ४६, ७७,

१०४, ११९, १५६,

२२८, २४३

१५०७ ६४, १४८, १९७,

२४८, ३३८

१५०८ ४५, ७४, २५२,

२५४, २५६

१५०९ १९, २२

१५१० ४२, ४८, ८१,

८८, १००, १४७,

१५७, २२१, ३६५

१५११ १८, ६७, ८६,

९४, ११८, १२१,

३५६

୧୫୧୨	୨	୧୨୧	୧୫୧୮	୫, ୧୨, ୧୩, ୧୪,
୧୫୧୩	୩, ୧୩, ୧୮, ୧୩୩,		୪୨, ୩୧୨	
	୧୩୪, ୧୨୦, ୧୩୩	୧୫୧୯	୮୧, ୧୪୩, ୧୩୧	
୧୫୧୫	୨ ୧୩, ୫୩, ୧୪୪,	୧୫୨୦	୨୦	
	୧୫୪, ୧୨୧, ୧୧୨,	୧୫୨୧	୧୨୪, ୧୩୨,	
	୧୩୩, ୧୩୮		୨୩୩, ୧୩୧	
୧୫୧୬	୩୨ ୩୧ ୮୩,	୧୫୨୨	୩୨, ୧୩୮, ୨୧୫	
	୧୪୦, ୧୪୧	୧୫୨୩	୩୮ ୫୨, ୧୩୫,	
୧୫୧୭	୩୦, ୪୪, ୫୨, ୩୧,		୩୦୧	
	୮୪, ୩୩ ୧୩୦,	୧୫୨୫	୩୩, ୩୧, ୩୩୫	
	୧୨୫, ୩୨୧	୧୫୨୬	୧୧, ୨୫, ୧୩୦,	
୧୫୧୮	୨୩୫, ୨୩୨		୧୩୨	
୧୫୧୯	୮, ୩୫ ୧୩୧,	୧୫୨୭	୧୩୩, ୧୩୩, ୧୩୫	
	୨୩୩, ୧୩୩	୧୫୨୮	୨୧୩	
୧୫୨୦	୧୪୩ ୧୩୨ ୧୩୪	୧୫୨୯	୧୨୩	
୧୫୨୧	୧୨୩	୧୫୩୦	୧୧୩	
୧୫୨୨	୪୦ ୩୫୩	୧୫୩୧	୧୧୩	
୧୫୨୩	୧୨୮ ୨୪୨ ୩୫୮	୧୫୩୨	୧୨୪	
୧୫୨୪	୨୨, ୧୪୫ ୧୫୫	୧୫୩୩	୧୨୪	
୧୫୨୫	୨୫ ୮୩ ୧୧୪,	୧୫୩୪	୧୩୩, ୧୮୨	
	୨୪୦	୧୫୩୫	୩୮, ୧୩	
୧୫୨୬	୩୨, ୧୩୪ ୧୩୮,	୧୫୩୬	୧୨୩	
	୧୫୧, ୧୩୫	୧୫୩୭	୧୧୧	

૧૫૬૦	૧૨૨, ૧૨૫	૧૬૧૨	૨૨૫
૧૫૬૧	૮૯	૧૬૧૩	૧૧૭
૧૫૬૩	૩૧	૧૬૧૫	૫૩, ૮૭
૧૫૬૪	૨૪૬	૧૬૧૭	૨૭, ૧૧૪, ૧૧૫,
૧૫૬૫	૨૨૨	—	૨૫૩, ૨૭૧
૧૫૬૭	૨૫૮	૧૬૧૮	૪૭
૧૫૬૮	૨૩૩	૧૬૨૪	૨૫૧, ૩૬૨
૧૫૬૯	૨૩૪	૧૬૫૪	૩૩
૧૫૭૨	૧૦૧, ૦૦૪	૧૬૬૧	૨૬૫
૧૫૭૮	૧૧૬	૧૬૬૨	૧૧૦, ૨૬૬
૧૫૮૦	૨૫	૧૬૬૫	૩૬૬
૧૫૮૧	૮૦, ૨૪૧, ૨૪૭	૧૬૮૧	૨૫૦
૧૫૮૨	૨૦૭, ૩૬૭	૧૬૮૩	૧૦૫, ૨૫૭
૧૫૮૩	૧૦	૧૩	૨૧
૧૫૮૪	૨૩૧	અઠાસઘર્વી શતાન્દિ ।	
૧૫૮૭	૨૭૦	૧૭૦૮	૧૦૮
૧૫૯૦	૩૬૪	૧૭૫૭	૪૧
૧૫.	૧૭૭	૧૭૮૨	૩૪૮
૫૯	૧૮૦	૧૭૮૫	૨૨૩
		૪	૪

સત્તરઘર્વી શતાન્દિ ।

૧૬૧૧ ૨૩૨

ત્રીમર્વી શતાન્દિ ।

૧૮૩૩ ૩૭૦, ૩૭૧



१८३७	३३६, ३३७	बीसवीं छायादि ।	
१८५१	३१७	१९९५	३५०, ३१, ३५१,
१८६९	३१९		३५४, ३५५
१८९२	३४२	१९९७	३५३
<u>५</u>	<u>७</u>	<u>२</u>	<u>६</u>

### ५ गच्छधार अनुक्रमणिका ।

पञ्च	मेकादश	गच्छ	मेकादश
वीचकागच्छ १६ २३ ३३,		वपसगच्छ	} १०, ४० ३०३ (अ) १२१
३४, १२०, १३७,		वपकेसगच्छ	
१४६, १७५, १८९,		वपेसगच्छ	
१९४, १९५, २०९,		काष्ठोडीगच्छ	३३२
२३७, २३९, २५४,		कृष्णविंगच्छ	२८८, २९१
२३३, २७२, २७७,		कङ्कामासिगच्छ	१ ८, १०९,
२९४, २९५ (अ)			२२३, २६५
२९६, २९७ २९८,		कोरिङगच्छ मत्ता	} ७ २०५
२९९, ३ ७, ३०१,		चार्य सम्प्राप्तीय	
३४७ ३ ८ (अ)		कारवरगच्छ	४८ ६६, ७२,
३६१			७३, ८४, ९७,
आगमगच्छ १ ७५, ८२			१३६, ३३९.
९४७, ३०४ (अ)			

चैत्रगच्छ } ३, १७, ३७, ६७,  
 धारणपदीय } १०६, १५५,  
 २१३, ३६७.

नीरापहीगच्छ (पृष्ठद्वगच्छीय)

६२, ९९, १३८,

२५६, ३०९, ३१०.

तपागच्छ } ३०, ३८, ४१,

वृद्धशाखा } ४७, ४९, ८५,

सविज्ञपक्ष } ९२, १२५,

१२७, १२८, १३५,

१४७, १५१, १५४,

१६३, १६७, १७९,

२१०, २१४, २३६,

२४२, २७१, २७४,

२७५, २७६, २७८,

२७९, २८०, २८१,

२८२, २८३, २८४,

२८५, २८६, २८९,

२९३, ३०३, ( ऋ )

३०४, ( ऋ ) ३०५,

३०६, ३०७, ३०८,

३१२, ३३५, ३३६,

३३७, ३३८, ३४२,

३५०, ३५१, ३५२,

३५३, ३५४, ३५५,

३५७, ३५८, ३६४,

३६६, ३७०, ३७१,

३७३.

धारापद्मीगच्छ ६१, ६५,

१४२, १६५, १७२,

२०६, २२९, २६८.

निगमप्रभावक ८०, २४१.

निर्युतिकुल ३१८

पिप्पलगच्छ { ५,

त्रिमवियापिप्पल { १२,

धर्मदेवसूरिसतानीय { १३,

२२, ३४, ३५, ३६,

४२, ४३, ४६, ५०,

५८, ५९, ६०, ६८,

७४, ७७, ७८, ८१,

८३, ८६, ८९, ९०,

१००, १०२, १०५,

११२, ११८, १३०,

१३१, १३२, १३४,

१४३, १४४, १४५,

१५२, १५३, १६१,  
 १६४, १८५, १८६,  
 १९, १९६, १९८,  
 २०२, २२८, २३०,  
 २३८, २४५, २४८,  
 ३१६,

पुर्मिमा गच्छ	}	२	८, ११,
कच्छोष्ठीय		१८,	२९,
ह्रीमन्निषा		३१	३२,
प्रथमपञ्चाशीय		५३	५४
मीमपञ्चीय		५६	७०,
साधुपुर्मिमा	}	७१,	७९,

९३, ९४, ९५, १०१  
 ११९, १२१ १२६  
 १३९, १४०, १४१,  
 १६६, १६८ १७८,  
 २ ७, २१७, २२१,  
 २२६, २४६ २६,  
 २६१, २६२, २६७,  
 २७३, ३५६, ३६०,  
 ३६२, ३६३, ३६८

बृहद्गच्छ,	}	२१९,
बृहद्गच्छ सप्तपुरीय		२२०,
२९२ (ब), ३३१		
ब्रह्माण्डगच्छ		१४, २३, २४, २५, ४४, ६९, ८७, ९१, १२९, १३३, १४८, १४९, १५८, १६०, १७१, १७७, १७९, १८८, २००, २२४, २३३, २४०, २४३, ३११, ३२२, ३२५ ३२६, ३२७, ३२८, ३७१

भावहारगच्छ	}	९,
काष्ठिकाचार्यसंवासीय		२०,
८८, ११३, १२४, १५० १५७, १६२, १७५ १९१, २३५, २५५		

महाहृदीयगच्छ १०३ ३३४  
 यक्षधारीयगच्छ २९२ (ब)  
 पञ्चोमहसुरिसंवासीय ३२४

विमलगच्छ ३५९	१९३, २०१, २०३,
षडेरकगच्छ १७३, २०८	२०४, २११, २१६,
सरस्वतीगच्छ १७४, २६४	२२२, २२५, २२७,
सैद्धान्तिकगच्छ ४, १९,	२३१, २३२, २३४,
४५, १५३, २१२,	२४४, २४९, २५०,
२५२	२५१, २५३, २५७,
मिश्रित १५, २१, ३३, ५१,	२५८, २५९, २६६,
५२, ५५, ७६, १०४,	२७०, ३८७, ३०२,
१०७, ११०, १११,	३१३, ३१४, ३१५,
११४, ११५, ११६,	३१७, ३१९, ३२०,
११७, १५९, १७०,	३२३, ३२९, ३३०,
१८०, १८१, १८२,	३३३, ३४०, ३४१,
१८४, १८७, १९२,	३४३, ३४४, ३४५,
	३४६, ३४८, ३४९,
	३७४

## ६ आचार्य, साधुओं की अनुक्रमणिका ।

आचार्य गच्छ लेखाङ्क	आचार्य गच्छ लेखाङ्क
अमरदेवसूरि १११	अमररत्नसूरि (आगम) ८२
अमरचन्द्रसूरि(पिप्पल) ३५,	अमरसिंहसूरि (आगम) ७५
९०	आनन्दसागरसूरि (निग.
अमरदेवसूरि (चैत्र) २१३	मप्रभावक) ८०, २४१
अमरप्रभसूरि (धर्मघोष) १९९	

हरपचमूरसुरि ( श्रीरा- पदी )	१३८ २५६
हरसदेवसुरि ( विष्णुछ )	२२, ७७, ८३, ११८, १४५
हरबामन्दसुरि ( विष्णुछ )	१३, ११२
ककसुरि ( कपकेछ )	४०, ३०३ ( अ )
, ( कोरेठ )	२०५
कमळप्रमसुरि ( पूर्विमा )	५३ १६८, २०७
कमळकसुरि ( वपा )	१२५
कमळसुरि ( पूर्विमापछ )	१६८ ३६३
कीर्तिदेवसुरि ( सरस्वती )	१७४
क्षेमसेसरसुरि ( विष्णुछ )	८१
गुणवीरसुरि ( पूर्विमा )	३२ ९५, १४०
गुणदेवसुरि ( भागेन्द्र )	३९, २१५
, ( विष्णुछ )	१३
गुणरत्नसुरि ( विष्णुछ )	१३०

गुणसमुद्रसुरि ( पूर्विमा )	७१, १४०, ३६०
, ( भागेन्द्र )	३६५
गुणाकरसुरि ( भागेन्द्र )	६
खानचमूरसुरि ( बर्मयोष )	१९९
खानदेवसुरि ( चैत्र )	३७
खामविमळसुरि ( वपा )	४१
खामसागरसुरि ( भागेन्द्र )	३७
, ( हरवपा )	४९
चमूरप्रमसुरि ( विष्णुछ )	२४८
चमूरविहसुरि ( महाद्वज )	३१४
चारिचमूरसुरि	२६०
जखगसुरि	१४, १७९
जयकीर्तिसुरि ( अंबछ )	१६ २७७, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१,
जयकेसरसुरि ( अंबछ )	२६, ६३ ६४, १२०, १३७, १४६, १७५, १९५, २०६, २३९

२५४, २६३, २७२,  
 ३६१,  
 जयचन्द्रसूरि (तपा) २७८,  
 २७९, २८०, २८१,  
 २८२, २८३, २८९,  
 २९३, ३०३ (व) ३०४  
 (घ) ३०५, ३०६, ३०७  
 ३३८  
 जयतिलकसूरि (पिप्पल) २०२  
 जयप्रभसूरि (पूर्णिमा) २६१,  
 २७३,  
 जयविजय ३४८  
 जयवह्मसूरि १९३  
 जयशेखरसूरि (पूर्णिमा) २८,  
 ५४  
 जयसिंहसूरि (कृष्णर्षि)  
 २८८, २९१  
 " (पूर्णिमा) २६१  
 जिनचन्द्रसूरि (पूर्णिमा) ७२,  
 ८४,  
 " २४९  
 " (बृहद्) ३०९, ३१०  
 ३

जिनदेवसूरि (भावहार) १९१  
 जिनप्रबोधसूरि (स्मरतर) ३३९  
 जिनभद्रसूरि (स्मरतर) ४८,  
 ६६, ८४, ९७  
 जिनमाणिक्यसूरि १०४  
 जिनरत्नसूरि (बृहत्तपापक्ष)  
 ३५७  
 जिनराजसूरि (स्मरतर) ४८  
 जिनवह्मसूरि (स्मरतर) १३६  
 जिनसुन्दरसूरि (बृहत्तपा)  
 १२७, ३०३ (घ)  
 ३०४ (व)  
 जिनहर्षसूरि (स्मरतर) २६७  
 जिनेश्वरसूरि (स्मरतर) ३३९  
 दिन्नविजयसूरि (बृहद्)  
 २९२ (अ)  
 देवगुप्तसूरि (उपकेश)  
 ३०३ (अ) ३२१  
 देवचन्द्र (पिप्पल) ३१६  
 देवचन्द्रसूरि (पूर्णिमा) १४१,  
 " (बृहद्) ३०९, ३१०

देवसुन्दरसूरि (पूर्णिमा)	२१७
देवसूरि	२१, १९२
देवाचार्य	३२०
देवेन्द्रसूरि	२४९
जनविष्णुसूरि	१८४
जनरत्नसूरि (बृहत्पदा)	३९४
जनेश्वरसूरि	३३०
जरसंपदसूरि (नागेश्वर)	२७
जर्मभोगसूरि (कृष्णविं)	३०८ (ब)
जर्मदेवसूरि (विष्णु)	१०५
जर्मप्रमसूरि (विष्णु)	५८
	६०, ८९, १५२
जर्मशेखरसूरि (विष्णु)	४३,
	४६ ५० ६० ७८ ८६
	१३२, १४३ १५६ ३१६
जर्मसुन्दरसूरि (विष्णु)	८९
जर्मसूरि ( विष्णु )	१४३
जर्मसागरसूरि (विष्णु)	५,
	१२, ५९, ८९ १००,
	३५९
जरप्रमसूरि	१५, २१
नित्यविष्णु	३४८

पद्मसूरि (महाप्र)	१४, ४४
	६९, ९१, १६०, २४१
पद्मचन्द्रसूरि (नागेश्वर)	५७
पद्मशेखरसूरि (ममभोग)	९८
पद्मानन्दसूरि	६८, ९६,
	१२३, १३१ १९७,
	२१८, २३९, ३२९
परमानन्दसूरि (बृहत्)	३३१
पार्श्वचन्द्रसूरि	१५९, १७०,
	२१९
पुण्यविष्णुसूरि	१८१
पुण्यप्रमसूरि (कृष्णविं)	२८८
	२९१, ३२७
पुण्यरत्नसूरि (पूर्णिमा)	११,
	२९, ७१, ७९
प्रद्युम्नसूरि	२४, २००
प्रसन्नसूरि	३४५
प्रीतिसूरि ( विष्णु )	१ ५
	३१४
शुद्धिसागरसूरि (महाप्र)	
	१२९, ३२२, ३७१
शत्रेश्वरसूरि (महाप्र)	३२७

भावदेवसूरि (भावडार)	१२४
	२३५
„ ( कौरटक )	७
भुवनचन्द्रसूरि (तपा)	२७९,
	२८०, २८१, २८२,
	२८३, २८४, २८५,
	२८६, २८९, २९३,
	३०८ (घ) ३१२
भुवनप्रभसूरि (पूर्णिमा)	१०१
भुवनानन्दसूरि (नागेन्द्र)	५७
मतिप्रभसूरि	२१६
मणिचन्द्रसूरि (ब्रह्माण)	२३,
	१३३, १४८
मलयचन्द्रसूरि (धर्मघोष)	
	२९०
महिमाविजयसूरि	३३६,
	३३७
महेन्द्रसूरि	१११
माणिक्यसूरि	२०१
मुनिचन्द्रसूरि	२३३
„ (पूर्णिमा)	२६०
„	३४६

मुनिप्रभसूरि (पिप्पल)	१०२,
	२४५
मुनिमिहसूरि (पिप्पल)	३५,
	९०
„ (पूर्णिमा)	९३
मुनिसुन्दरसूरि (तपा)	३८,
	२७८, २८९, २८०,
	२८१, २८२, २८३,
	२८४, २८५, २८६,
	२८९, २९३, ३०३(घ)
	३०४ (घ) ३०५,
	३०६, ३०८, ३१२
मेरुतुंगसूरि (अचल)	२७७,
	२९५ (घ) २९६,
	२९७, २९८, २९९,
	३००, ३०१, ३४७,
यशदेवसूरि (फकुदाचार्यमंता- नीय)	१०
„ (बृहद्)	३३१
यशोदेवसूरि	३४९
यशोमद्रसूरि	३२४
रंगधिमलसूरि	३१७



रत्नदेवसूरि (पिण्ड)	१३१, १४५
" (चित्र)	२१३
रत्नप्रमसूरि	१८२
रत्नशेखरसूरि (वपा)	३०, ३८, ९२, १४७, २१० ३३८, ३५८
रत्नशेखरसूरि (पूर्विमा)	२४३
रत्नसिंहसूरि (वपा)	१५४, २७४, २७५, २७६, " (नागेन्द्र) १८३, ३३९
रत्नकरसूरि (महात्म)	३११, ३२७
रत्नकर (महात्म)	३३४
राजसिंहसूरि (पूर्विमा)	१८, ९४, १२१ ३५६
राजेन्द्रसूरि (वपा)	३५, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४
रामचन्द्रसूरि (हरह)	३०९, ३१०

छत्तीदेवसूरि (चित्र)	३, १७, ६७, १५५
छत्तीसागरसूरि (वपा)	३०, ३८, ९२, १२८, १३५, १५१, १६७, २१४, २३६, २४२, ३३५, ३५८
छत्तीसागरसूरि (महात्म)	२३४
वपरसेनसूरि	५१
विजयचन्द्रसूरि (वर्मपौत्र)	९८, २९०
विजयचिनेन्द्रसूरि (वपा)	३७०, ३७१
विजयशानसूरि (वपा)	४७, २७१
विजयदेवसूरि (चित्र)	३६७
" (विष्णु)	१३४, १४४, १५६
विजयरामसूरि (पूर्विमा)	१६६
विजयछत्तीसूरि	३१९

विजयप्रभसूरि (तपा)	४१
„ (पिण्डल)	११२
विजयसिंहसूरि (भावहार)	२०
„ (थिरापद्र)	६१,
	६५, १४२, १६५
विजयसेनसूरि	२२७
„ (ब्रह्माण)	३११,
	३२७
विजयसोमसूरि (तपा)	३३६
विद्याचन्द्रसूरि (पूर्णिमा)	३६२
विद्याशेखरसूरि (पूर्णिमा)	७०
विद्यामागरसूरि (मल्लधारी)	२९२ (व)
विजयप्रभसूरि (नागेन्द्र)	९६,
	१९७
विमलसूरि (ब्रह्माण)	१७१,
	१७७, ३२२
विमलेन्द्रसूरि (सरस्वती)	१७४
वृद्धिसागरसूरि (ब्रह्माण)	१७१

वीरचन्द्रसूरि (जीरापल्ली)	६२, ९९
वीरप्रभसूरि (पूर्णिमा)	५३,
	११९, १३९
वीरसिंहसूरि (जीरापल्ली)	९९
वीरसूरि (भावहार)	९, ८८,
	१५०, १५७, १६२,
	१९१, २५५
„ (ब्रह्माण)	२३, २५,
	८७, १५८, २४०
शान्तिसूरि (थिरापद्र)	१६५
	१७२, २०६, २६८
„ (पढेरक)	१७३,
	२०८
„ (मल्लधारी)	२९२ (व)
शालिभद्रसूरि (पिण्डल)	१३४, १४४
शुक्लविजय	३४८
शुभचन्द्रसूरि (पिण्डल)	७४
शेखरसूरि	३१८
श्रीधरसूरि	१४९

भीसूरि (अंश) २३७, ३४७

" (पूर्णिमा) १२१,

१७८

५२ ७६, १२६,

२११, २४४ २५१,

२७, ३४६

सकलकीर्तिदेव (सरस्वती)

१७४

समरचन्द्रसूरि (विष्वक्) ७४

सर्बदेवसूरि (विष्वक्) ३४

(आराधन) ३५

(वक्त्रमण्ड) ३२०

सागरचन्द्रसूरि (जीरापट्टी)

१३८

(विष्वक्) १३१

, (साधुपूर्णिमा) २२६

सागरविठ्ठलसूरि (पूर्णिमा)

३६८

सागरभद्रसूरि (विष्वक्) १६४

साधुप्रभमुनि ५५

साधुरत्नसूरि (पूर्णिमा) २, ८

५६, २२१ २६२

साधुसुन्दरसूरि (पूर्णिमा)

२१७, २६२

सार्बदेवसूरि (कोरट)

सिद्धाम्बसागरसूरि (अंश)

१८९, १९४

सुमतिरत्नसूरि (पूर्णिमा) २९

सुमतिप्रभसूरि (पूर्णिमा) ३१

सोमचन्द्रसूरि (सैद्धाम्नी) ४,

१९ ४५ १५१,

२१२, २५२

" (विष्वक्) २१, ७७

८३, १९८

, (पूर्णिमा) २२६

सोमरत्नसूरि (नागेन्द्र) १२३

" (आगम) २४०

सोमसुन्दरसूरि (वृषा) ३८

१२५, १६३ १६९,

२७८ २७९ २८०,

२८१, २८२, २८३,

२८४, २८५, २८६,

२८९ २९३ ३ ३(ब)

३०४(ब) ३०५ ३ ६

३०७, ३०८(ब) ३०३

सोभागरत्नसूरि (पूर्णिमा)	१२६	हेतविजयगणि (तपा) ३३६,	३३७
हरिचन्द्रसूरि (चैत्र) १०६		हेमचन्द्रसूरि (कुमारपालगुरु)	८५
हरिभद्रसूरि (भद्राह्वा) १०३		हेमरत्नसूरि (आगम) १	
हर्षविजय मुनि (तपा) ३५३		हेमविमलसूरि (व्याकरण) ३२७	
हीरविजय (तपा) ३४८		हेमसिंहसूरि (नागेन्द्र) १२२	
हीरविजयसूरि (तपा) ३३६,	३३७, ३६६		

## ७ कालक्रमसे आचार्य-मुनियों की गच्छवार अनुक्रमणिका.

प्रतिष्ठा-संवत्	प्रतिष्ठाकर्त्ता	लेखाङ्क
( अंचलगच्छ )		
१२६३ आषाढ कृ० ८ गुरु	धर्मचोपसूरि	३०८ (अ)
१४४९ वैशाख शु० ६ शुक्र	मेरुतुंगसूरि के उपदेश से श्रीसूरि	३४७
१४८३ वैशाख कृ० १३ गुरु	मेरुतुङ्गपट्टोद्धरण जयकीर्तिसूरि २९४, २९५ (अ)	२९५ (ब)
१४८७ पौष शु० २ रवि		२९६ से ३०१
		२७७

१४८८ कार्तिक शु० ३ बुध जयश्रीसूरि के जपरेल से			
	श्रीसूरि		२३७
१५०१ पौष क० ९ सनि	" "	"	१६
१५०५ माघ शु० १० रवि	जयकेसरसूरि		२०९
१५०७ माघ शु० १३ शुक्र	"		६४
१५०८ ज्येष्ठ शु० ७ बुध	"		२५४
१५१७ मार्ग शु० १० सोम	"		१९५
१५१९ मार्ग शु० ५ शुक्र	"		२६३
" , ६ सनि	"		२७२
१५२० वैशाख शु० ५ बुध			२३९
१५२८ वैश क० १० शुक्र	"		२६
१५२९ फा० शु० २ शुक्र			१४६
१५३२ वैशाख शु० १ शुक्र	"		१६१
१५३५ पौष क० १२ रवि			६३
१५३६ माघ क० ७ सोम			१९०
१५३७ वैशाख शु० १० सोम	"		१३७
१५३७ ज्येष्ठ शु० २ सोम	"		१७५
१५४७ वैशाख शु० ३ सोम	शिखाम्बदागरसूरि		१८९
१५५२ वैशाख क० ३ सनि			१९४

## ( भागमगच्छ )

१४२१ फा० शु० ५ रवि	जमरसिद्धसूरि	३०४(अ)
१४७१ वैशाख शु० ३ रवि	"	७५

( ४१ )

१५०५ माघ शु० ९ शनि हेमरत्नसूरि  
१५२९ ज्येष्ठ कृ० १ शुक्र अमररत्नसूरि  
१५८१ माघ शु० ५ गुरु सोमरत्नसूरि

१  
८२  
२४७

( उपदेशगच्छ )

१०११

देवगुप्तसूरि

३२१

जगदेवसन्तानीय-

१४२१ ज्येष्ठ कृ० १० बुध कक्षसूरिपट्टे देवगुप्तसूरि ३०३(अ)  
१५२२ पौष कृ० १ गुरु ककुदाचार्यसन्तानीयकक्षसूरि ४०  
१५८३ ज्येष्ठ शु० ११ शुक्र " " यक्षदेवसूरि १०

( काछोलीगच्छ )

१३०३

मेरुमुनि

३३२

( कृष्णार्षिगच्छ )

१४८३ भाद्रपद कृ० ७ गुरु पुण्यप्रभसूरिपट्टे जयसिंहसूरि २८८  
" " " " " २९१

१६६१ फा० कृ० १ शुक्र ( कडूआ ( कडुक ) मतिगच्छ ) २६५  
१६८३ ज्येष्ठ शु० ३ " " १०९

१७०८ मार्ग शु० २ रवि " " १०८  
१७८५ मार्ग शु० ५ " " २२३

( कोरण्टगच्छ )

१४३३ वैशाख शु० ९ शनि नम्राचार्यसन्तानीय मानदेवसूरि ७

१४८० पय० सु० १० बुध कचसूरि २०५

( स्मरतरंगच्छ )

१३३४ वैशाख क० ५ बुध	जिनेश्वरसूरिद्विष्य जिन	
	प्रबोधसूरि	११९
१७५० माघ क० ९ सोम	जिनचन्द्रसूरि	१३१
१४७९ माघ सु० ४	जिनमहसूरि	६६
१४९१ पय क० १		७३
१५०५ वैशाख सु० २ बुध		९७
१५१ आषाढ क० १ शुक्र	जिनराजसूरिपदे	
	जिनमहसूरि	४८
१५१७ चैत्र सु० १५	जिनमहसूरिपदे जिनचन्द्रसूरि	८४
१५३५ माघ सु० ३ रवि	जिनचन्द्रसूरि	७९

( वैद्यनाथछ )

१३०९ माघ कृष्ण २	हरिचन्द्रसूरि	१०६
१५११ माघ सु० ५	कस्मीदेवसूरि (चारणपद्मीय)	१०
१५१३ पौष क० ५ रवि		३, १७
१५२४ चैत्र क० ५		१५५
१५२८ पौष क० ३ सोम	सायदेवसूरि	३७
१५३८ वैशाख सु० ५ बुध	रत्नदेवसूरिपदे जमरदेवसूरि	२१३
१५८२ वैशाख सु० १ शुक्र	विजयदेवसूरि	

( चारणपद्मीय ) २६७

## ( जीरापल्लीगच्छ )

- १४११ कृ० ६ बुध देवचन्द्रपट्टे जिनचन्द्रपट्टे गमचन्द्रसूरि ३०९  
 १४१३ फा० शु० १३ " " " ३१०  
 १४३५ माघ कृ० १२ सोम वीरसिंहसूरिपट्टे वीरचन्द्रसूरि ९९  
 १४५३ वैशाख शु० २ सोम वीरचन्द्रसूरिपट्टे शालिभद्रसूरि ६२  
 १५०८ ज्येष्ठ शु० १० सोम उदयचन्द्रसूरि २५६  
 १५२७ माघ कृ० ७ रवि उदयचन्द्रपट्टे सागरचन्द्रसूरि १३८

## ( बृहत्तपागच्छ )

- १२२० ज्येष्ठ शु० ९ रवि हेमचन्द्राचार्य ८५  
 १४८१ वैशाख शु० ३ रत्नाकरसूरिसे अनुक्रमसे अभय-  
 सिंहसूरिपट्टे जयतिलकसूरिपट्टे  
 रत्नसिंहसूरि २७४, २७५, २७६  
 १४८३ प्रथम वै० कृ० ७ रवि देवसुन्दरसूरिपट्टे सोम-  
 सुन्दरसूरि, मुनिसुन्दरसूरि,  
 जयचन्द्रसूरि ३०५, ३०६  
 १४८३ वैशाख शु० ७ देव० सोम० भुवनसुन्दरसूरि  
 जिनसुन्दरसूरि ३०३(ब) ३०४(घ)  
 " " १३ देवसुन्दरसूरिपट्टे सोमसुन्दरसूरि  
 जयचन्द्रसूरि ३०७  
 १४८३ भाद्र० कृ० ७ गुरु देवसुन्दरसूरिपट्टे सोमसुन्दर-  
 सूरि मुनिसुन्दरसूरि २७९  
 से २८६, २८९



अथचन्द्रसूरि मुनिसुन्दरसूरि २९३,

३०८(ब) ३१२

११९

१४८४

सोमसुन्दरसूरि

१४८७ पौष सु० २ रवि देवसुन्दरसूरिपदे सोमसुन्दरसूरि

मुनिसुन्दरमरि अथचन्द्रसूरि

चित्रचन्द्रसूरि

२७८

१४८९ मार्ग० शु० ५ शुक्र सोमसुन्दरसूरि

३७३

१४९३

१६३

१५०३ माघ सु० १३

रत्नशेखरसूरि

२१०

१५०७ माघ

सोमसुन्दरसूरि अथचन्द्रसूरि

शिष्य रत्नशेखरसूरि

३३८

१५१० वैशाख सु० ३ रत्नशेखरसूरि

१४७

१५ माघ शु० २ बुध शिवसुन्दर (रत्न चन्द्र)सूरि १२७

१५१५ ज्येष्ठ शु० १ शुक्र रत्नसिंह (शेखर)सूरि १५४

१५१७ वैशाख सु० ३ रत्नशेखरपदे कस्मीसागरसूरि ३

१५२२ माघ सु० ९ शनि चित्ररत्नसूरि ३५७

१५२३ वैशाख सु० ३ रत्नशेखरपदे कस्मीसागरसूरि ३५८

१५२३ वैशाख सु० १३ कस्मीसागरसूरि १२८, २४२

१५२४ माघ शु० २ रत्नशेखरपदे कस्मीसागरसूरि ९२

१५२५ माघ शु० ३ कस्मीसागरसूरि २१४

१५२७ माघ शु० ५ शुक्र , १५१

१५२८ वै शु० ५ शुक्र ज्ञानसागरसूरि ४९

१५३९ ज्येष्ठ शु० ३ रवि कस्मीसागरसूरि २३३

१५३४	ज्येष्ठ शु० १०	सोमसुन्दरसूरि मुनिमुंदरसूरि	
		रत्नशेखरसूरिपट्टे लक्ष्मीसागरसूरि	३८
१५३४	पौष कृ० १०	लक्ष्मीसागरसूरि	१३५
१५३५	माघ कृ० ९ शनि	"	३३५
१५३७	ज्येष्ठ शु० २ सोम	"	१६७
१५६०	वैशाख शु० ३	सोमसुन्दरपट्टनायक कमलसूरि	१२५
१५९०	वैशाख शु० ५	धनरत्नसूरि	३६४
१६१७	ज्येष्ठ शु० ५ सोम	विजयदानसूरि	२७१
१६१८	माघ शु० १३	"	४७
१६६५	वैशाख शु० ६ बुध	हीरविजयसूरिपट्टे विजय-	
		सोमसूरि	३६६
१७५७	माघ शु० ५	विजयप्रभसूरिपट्टे सविज्ञपक्षे	
		ज्ञानविमलसूरि	४१
१८३३	माघ शु० ७ शुक्र	विजयजिनेन्द्रसूरि	३७०, ३७१
१८३७	पौष कृ० १३	हेतुविजयगणिपादुका, महिमा-	
		विजयगणिपादुका	३३६, ३३७
१८९२	वैशाख शु० १३ शुक्र	तपागच्छ	३४२
		( सौधर्मवृहत्तापागच्छ )	
१९५५	फा० कृ० ५ गुरु	राजेन्द्रसूरि	३५०, ३५१, ३५२,
			३५४, ३५५
१९९७:	फा० कृ० ६ सोम	विजययतीन्द्रसूरि के आदेश	
		से हर्षविजय	३५३

## ( धिरापथीयगण्ड )

१४७०	वैश्व क० २ गुण	क्षान्तिस्त्रि	२०६
१४८३	व्येष्ट सु० ९ मगल	क्षान्तिस्त्रि	२६८
१५०१	पौष क० ६ शुभ	सर्वदेवस्त्रिपदे विजयसिंहस्त्रि	६५
१५५५	वैशाख सु० ३ शुभ	"	१४२
१५१२	व्येष्ट सु० ५ रवि	" "	२९९
१५१६	पौष क० ५ गुण	"	६१
१५२७	कार्तिक क० ५ सोम	विजयसिंहस्त्रिपदे क्षान्तिस्त्रि	१६५
१५३२	वैशाख सु० १३ सोम	"	१७२

## ( धर्मघोषगण्ड )

१३०९	फा० सु० १३ शुभ	धर्मधर्मस्त्रि सिद्ध	
		धर्मधर्मस्त्रि	१९९
१४८३	माघ० क० ७ गुण	महयधर्मस्त्रिपदे	
		विजयधर्मस्त्रि	२९
१४९३	वैशाख सु० १ शुभ	पद्मसेनस्त्रिपदे	९८
१५१८	फा० क० १ सोम	पद्मधर्मस्त्रि	१६९
१५२१	व्येष्ट सु० ९ सोम	"	१२३

## ( मागेन्द्रगण्ड )

१३६९	वैशाख क० ८ शुभ	मानन्दस्त्रि सिद्ध पद्मधर्मस्त्रि	५७
१४२१	वैशाख सु० ५ रवि	शुभाकरस्त्रि	६

१४६५ वैशाख शु० ३ गुरु	रत्नसिंहसूरि	१८३
१४७२ ज्येष्ठ कृ० ११ सोम	"	३६९
१४८१ पौष कृ० ८ शुक्र	पद्मानन्दसूरि	२१८
१५०१ पौष कृ० ६ शुक्र	पद्मानन्दसूरिपट्टे विजयप्रभसूरि	९६
१५०७ माघ शु० १० सोम	" "	१९७
१५१० फा० शु० ३ गुरु	गुणसमुद्रसूरि	३६५
१५३३ वैशाख शु० ६ शुक्र	गुणदेवसूरि	३९, २१५
१५६० वैशाख शु० ३ बुध	सोमरत्नसूरिपट्टे हेमसिंहसूरि	१२२
१६१७ ज्येष्ठ शु० ५	घरसघसूरिपट्टे ज्ञानसागरसूरि	२७

## ( निगमप्रभावक )

१५८१ माघ कृ० १० शुक्र	आणन्दसागरसूरि	८०, २४१
-----------------------	---------------	---------

## ( निर्वृत्तिकुल )

११३० ज्येष्ठ शु० ५	शेखरसूरि	३१८
--------------------	----------	-----

## ( पिप्पलगच्छ )

१२९१ माघ शु० ५ गुरु	सर्वदेवसूरि	३४
१४१७ वैशाख शु० २ रवि	उदयानन्दसूरिपट्टे गुणदेवसूरि	१३
१४२२ ज्येष्ठ शु० ५ शुक्र	मुनिप्रभसूरि	२४५
१४३० माघ कृ० ८ सोम	धर्मदेवसूरिसन्ताने प्रीतिसूरि	१०५
१४३४ वैशाख कृ० २ बुध	मुनिप्रभसूरि	१०२
१४३६ वैशाखकृ० ११ मंगल	विजयप्रभसूरिपट्टे उदयानन्दसूरि	११२

१४३७	वैशाखशु०	११ सोम	अथ(चर्म)विष्णुसूरि	२०१
१४४२	वैशाखशु०	१० रवि	सागरचन्द्रसूरि	१६१
१४७१	माघशु०	३	धर्मप्रमसूरि	१५१
१४८२	वैशाखशु०	४ शुक्र	धर्मप्रमसूरिपट्टे	
			धर्मशेखरसूरि	१०
			सागरचन्द्रसूरि	१६४
१४८४	वैशाखशु०	११ रवि	धर्मशेखरसूरि	१८६
१४८५	माघशु०	१० शनि	धर्मशेखरसूरि	२३०
१४८७		"	धर्मशेखरसूरि सिद्धदेवचन्द्र	११६
१४८८	ज्येष्ठशु०	३ सोम	धर्मशेखरसूरि	५८
१४८९	वैशाखशु०	१ सोम	सोमचन्द्रसूरि	१९८
१४९४	माघशु०	९ रवि	धर्मशेखरसूरि	१९६
१४९६	अ०	६ रवि	म निरस्तसूरि	१८५
१४९९	कार्तिकशु०	२ रवि	धर्मशेखरसूरि	२३८
१४९९	कार्तिकशु०	१५ शुक्र	, ५ ७८ १३२, १९	
१५०६	वैशाखशु०	८ रवि	" ४३ ४६ २२८	
१५०६	माघशु०	१० शुक्र	धर्मशेखरसूरिपट्टे	
			विष्णुदेवसूरि	१५६
१५०६	माघशु०	१ शुक्र	सोमचन्द्रसूरिपट्टे	
			वृषभदेवसूरि	७७
१५ ७	वैशाखशु०	११ सोम	चन्द्रप्रमसूरि	२४८
१५ ८	वैशाखशु०	५ शुक्र	सगरचन्द्रसूरिपट्टे	
			शुभचन्द्रसूरि	७४

१५०९ माघशु० १० शनि	सोमचन्द्रसूरिपट्टे	
	उदयदेवसूरि	२२
१५१० का० कृ० ४ रवि	क्षेमशेखरसूरि	८१
१५१० (१५१७) पौष		
कृ० ५ गुरु	धर्मसागरसूरि	५९, १००
१५१० माघशु० ५ रवि	धर्मशेखरसूरि	४२
१५११ ज्येष्ठकृ० ९ रवि	उदयदेवसूरि	११८
१५११ माघशु० ५ गुरु	धर्मशेखरसूरिपट्टे	
	धर्मसुन्दरसूरि	८६
१५१५ वैशाखकृ० २ गुरु	चन्द्रप्रभसूरि	३६
१५१५ वैशाखशु० १३ रवि	विजयदेवसूरि के उप-	
	देश से शालिभद्रसूरि	१४४
१५१६ आषाढशु० १ शुक्र	सोमचन्द्रसूरिपट्टे	
	उदयदेवसूरि	८३
१५१७ वैशाखशु० १२ मंगल	गुणगत्नसूरि	१३०
१५१९ माघकृ० २ शनि	मुनिसुन्दरसूरिपट्टे	
	अमरचन्द्रसूरि	३५
१५२० चैत्रकृ० ५ बुध	धर्मशेखरसूरिपट्टे	
	धर्मसूरि	१४३
१५२४ वैशाखशु० ३ सोम	उदयदेवसूरिपट्टे	
	रत्नदेवसूरि	१४१

१५२७	वीषकृ० ४ शुक्र	विजयदेवसूरि सिम्ह	१११
		शास्त्रिमहसूरि	५, ११
१५२८	वैशाखशु० ३ शनि	धर्मसागरसूरि	
१५२९	कार्तिकशु० १२ सोम	शुनिधिरसूरिपण्डे	९०
		अमरचन्द्रसूरि	
१५३८	वैशाखकृ० १० रवि	रत्नदेवसूरिपण्डे	१११
		पद्यामन्दसूरि	१६
१५५१	वैशाखशु० १३ सोम	पद्यामन्दसूरि	
१५६१	माघकृ० ५ शुक्र	धर्मसागरसूरिपण्डे	८९
		धर्मममसूरि	

## ( पूर्णिमाशुभ )

१४०४	कार्तिककृ० ९ सोम	वीसूरि	१०८
१४८५	माघशु० १० शनि	विद्यादेवसरसूरि	४०
१४९४	माघशु० ५ सोम	अपममसूरि	२०१
१४९७	वैशाखकृ० ६ शुक्र	अपममसूरि	५१
१५०५	वैशाखकृ० ९ शुक्र	वीरममसूरि	११९
१५०५	माघशु० ५ रवि	शुणसमसूरि	१६०
१५०६	वैशाखकृ० ५ शुक्र	वीरममसूरि	१५
१५१०	माघशु० १० शुक्र	पाशुरत्नसूरि	
१५११	माघशु० ५ शुक्र		

१५११ माघशु० ९ सोम	राजतिलकसूरि	३५६
१५१३ पौषकृ० ३ शुक्र	कमलसूरि	३६३
१५१३ माघकृ० ७ बुध	जयशेखरसूरि	२८
१५१५ ज्येष्ठशु० ९ शुक्र	साधुरत्नसूरि	२
१५१५ आषाढशु० ५	सागरतिलकसूरि	३६८
१५१५ माघशु० १ शुक्र	साधुरत्नसूरि	५६
१५१५ फा० शु० ४ मनि	साधुरत्नसूरिपट्टे	
	साधुसुन्दरसूरि	२६२
१५१६ ..... ..	गुणधीरसूरि	३२
१५१६ आषाढशु० ३ रवि	गुणसमुद्रसूरिपट्टे	
	गुणधीरसूरि	१४०
१५१६ माघकृ० ९ सोम	देवचन्द्रसूरि	१४१
१५१७ पौषकृ० ५ गुरु	मुनिमिहसूरि	९३
१५१७ माघकृ० ८ बुध	गुणसमुद्रसूरिपट्टे	
	पुण्यरत्नसूरि	७१
१५१९ मार्गशु० ४ गुरु	साधुरत्नसूरि	८
१५१९ माघशु० ६ सोम	जयमिहसूरिपट्टे	
	जयप्रभसूरि	२६१
१५२७ ज्येष्ठशु० १० बुध	पुण्यरत्नसूरि	७९
१५३३ माघशु० १३ सोम	कमलप्रभसूरि	१६८
१५३६ .....	पुण्यरत्नसूरि	११
१५३६ फा०शु० ३ सोम	गुणधीरसूरि	९५



१५४३ ज्येष्ठशु० ११	मीसुरि, सौभाग्यरत्नसुरि १२६
१५४५ अ० २ मंगल	साधुसुन्दरसुरिपट्टे
	वैद्यसुन्दरसुरि २१७
१५५२ अ० ३	विजयराजसुरि १६६
१५५३ आषाढशु० २ शुक्र	चारिभक्तसुरिपट्टे
	सुनिष्कम्भसुरि २१०
१५६३ अ० ८ मंगल	सुमतिप्रमसुरि ३१
१५६४ वैशाखशु० ३ शुक्र	रत्नछेपरसुरि २४६
१५७२ वैशा० ४ रवि	सुवर्णप्रमसुरि १०१
१५८० वैशाखशु० १३ शुक्र	पुण्यरत्नसुरिपट्टे
	सुमविरत्नसुरि २९
१५८२ वैशा० ३	कमलप्रमसुरि २०७
१५८ वैशाख ५	विमर्हसुरि २६७
१६१५ अ० ४ शुक्र	वीरप्रमसुरिपट्टे
	कमलप्रमसुरि ५३
१६२४ सकसं० १७८९	विद्याभक्तसुरि ३६२
	सागरचन्द्रसुरिपट्टे
	सोमचन्द्रसुरि २२६

## ( बृहस्पतिगण्ड )

१०११ आषाढशु० ३ मंगल	परमायुष्यसुरि सिम्ह
	पद्मवैद्यसुरि ३३१

१४२४ वैशाखकृ० ३ गुरु	दिनविजयसूरि	२९२ (अ)
१५०३ ज्येष्ठशु० ९ बुध	पार्श्वचन्द्रसूरि	२१९
१५१३ माघशु० ३ शुक्र	सर्वदेवसूरि	२२०

## ( ब्रह्माणगच्छ )

१२१७ वैशाखकृ० १	प्रद्युम्नसूरि	२००
१२४२ चैत्रशु० १५		३२८
१३४१	श्रीधरसूरि	१४९
१३५१ माघकृ० १ सोम		३२५
१३५१		३२६
१३५९	वीरसूरि	१५८
१३८७ वैशाखशु० २ रवि	जज्जगसूरि	१७९
१४११ ज्येष्ठकृ० ९ शनि	लन्घिमागरसूरि	२२४
१४१२ आश्विनकृ० ४ बुध	विजयसेनसूरिशिष्य	
	रत्नाकरसूरि	३११
१४२५ वैशाखशु० ११	बुद्धिसागरसूरि	३७२
१४८३ ज्येष्ठकृ० ८ रवि	वीरसूरिपट्टे	
	मणिचन्द्रसूरि	२३
१४८६ वैशाखकृ० १ बुध	पुण्यप्रभसूरिपट्टे भद्रेश्वर-	
	सूरिपट्टे विजयसेनसूरि-	
	पट्टे रत्नाकरसूरिपट्टे हेम-	
	विमलसूरि	३२७
१४८९ वैशाखशु० ३ बुध	क्षमासूरि	१८८

१४९५ आषाढशु० ९ रवि	अन्नसूरिपदे	
	पञ्चनसूरि	१४
१५०१ फ० शु० ५ गुरु	पञ्चनसूरि	९१
१५०३ ज्येष्ठशु० ७	"	१६०
१५०५ वैश० १३ रवि	प्रद्युम्नसूरि (पञ्चनसूरि)	२४
१५०५ वैशाखशु० ३ शुक्र	पञ्चनसूरि	६९
१५०६ माघशु० ५ रवि	,	२४३
१५ ७ फ० शु० ११ गुरु	यमिचम्भसूरि	१४८
१५१३ माघशु० ३ शुक्र		१३३
१५१७ माघशु० १ बुध	पञ्चनसूरि	४४
१५२५ ज्येष्ठशु० ५ सोम	वीरसूरि	८७, २४०
१५२५ फा० शु० ७ शनि	"	२५
१५३८ वैशाखशु० ५ गुरु	विमलसूरिपदे	
	सुखिसागरसूरि	३२२
१५३९ माघशु० १ बुध	"	१७१
१५३६ पौषशु० २ बुध	सुखिसागरसूरि	१२९
१५६८ माघशु० ५ शुक्र	सुनिचम्भसूरि	२३३
१५ पौषशु० १ बुध	विमलसूरि	१७७

## ( भाष्यारण्य )

१३४९ ज्येष्ठशु० २	विजयसिंहसूरि	२०
१४७९ माघशु० ७ सोम	विजयसिंहसूरि	११३

१४८५ माघकृ० ९ गुरु विजयसिंहसूरि १७६

१४९९ वैशाखकृ० ४ गुरु वीरसूरि

(कालिकाचार्यसन्तानीय) २५५

१५०३ ज्येष्ठकृ० ३ सोम ,, ,, १५०

१५०३ मार्गकृ० ५ .... ,, ,, १६२

१५१० फा०शु० ११ शनि ,, ,, ८८, १५७

१५१२ मार्ग०शु० १५ सोम ,, ,, ९

१५१५ कार्तिककृ० १४ शुक्र वीरसूरिपट्टे जिनदेवसूरि १९१

१५१८ फा० शु० ९ सोम भावदेवसूरि २३५

१५३२ ज्येष्ठशु० १३ बुध ,, १२४

### ( मडाहड़गच्छ )

१३६७ वैशाखशु० ९ चन्द्रसिंहसूरि शिष्य  
रविकरसूरि ३३४

१४६२ वैशाखशु० ५ शुक्र हरिभद्रसूरि १०३

### ( मल्लधारीगच्छ )

१४८३ भाद्र०कृ० ७ गुरु शांतिसागरसूरिपट्टे  
विद्यासागरसूरि यशो-  
भद्रसूरिसन्तानीय २९२ (व)

१२१४ फा०शु० ५ प्रीतिसूरि ३२४

### ( विमलगच्छ )

१५१७ फा०शु० ३ शुक्र धर्मसागरसूरि ३५९

## ( पंडेरकगच्छ )

१२०४ वैशाखसु० ३ गुद	क्षाम्बिसूरि	१०३
१४८३ वैशाखसु० ५ गुद	क्षाम्बिसूरि	२०८

## ( सरस्वतीगच्छ )

१५१३ वैशाखसु० ३	—	कुन्नुकुम्भाचार्यमन्थानीय	
		सकलकीर्तिविव वत्पदे	१०४
१५२ पौषक० ५ शुक्र		विमलेन्द्रकीर्तिगुरु	२६४

## ( सैद्धान्तिकगच्छ )

१५ १ पौषक ६		सोमचन्द्रसूरि	४
१५०१ पौषक० ९		"	१५३
१५०८ वैशाखक० ४ सोम		"	४५, २५२
१५ ९ माघसु ५ सोम		"	१९
१५१५ वैशाखक० २ गुद		"	२१२

८ गच्छ, गच्छ और आचार्य या सधत आदि  
से अगर्भित लेखों की अनुक्रमणिका ।

संघ	गच्छ और आचार्य	उत्साह
१ १	—	३३३
१०४६ पौषक० १	—	१८७
१०६३	—	३९३
११४४ ज्येष्ठक० ४	देवाचार्य	३२०

११४८	.....	१८०
११५९	विजयसेनसूरि	२२७
१२०९	.....	२५९
१२४० माघशु० १३	.....यशोदेवसूरि	३४९
१२४४ माघशु० १० मोम	.....प्रभन्नसूरि	३४५
१२४४ फा०शु० ३ बुध	.....मतिप्रभसूरि	२१६
१२६१	....	२०३
१२६३ वैशाखशु० ६ गुरु	देवसूरिशिष्य ययरसेण	५१
१३४४ ज्येष्ठशु० १० बुध	.....	३४३, ३४४
१३५७ वैशाखशु० ५ शुक्र	माधुप्रभासिंह	५५
१३६४ वैशाखशु० १३	गङ्गेन्द्रसूरिपट्टे	
	अभयदेवसूरि	१११
१३५९ फा०शु० ५ सोम	....भीसूरि	३४६
१३७३ वैशाखशु० ११ शुक्र	पद्मनन्दी	३२९
१३७७ चैत्रशु० ८ मंगल	. . देवसूरि	१९२
१३९२ वैशाखशु० ७ शुक्र	देवेन्द्रसूरिपट्टे	
	जिनचन्द्रसूरि	२४९
१३९४ वैशाखशु० ९ बुध	. जयवल्लभसूरि	१९३
१३९९ फा०शु० १३ सोम	..	१०७
१४०६ फा०शु० १० गुरु	. .. धनेश्वरसूरि	३३०
१४१२ ज्येष्ठशु० १३ गुरु	... . माणिक्यसूरि	२०१
१४२५ माघशु० ८	....	३७४

१४२९ माघकृ० ५ सोम	.. .. मरुप्रमसूरि	१५
१४३२ च०ष्ट० २ शुक्र	.... ..	२१
१४३६ वैशाखकृ० ११	.... पार्थिवप्रसूरि	१००
१४४९ वैशाखशु० ६ शुक्र	.....	१५९
१४५१ वैशाखशु० ५ शुक्र	..... पुण्यविष्णुसूरि	१८१
१४५३ वैशाखशु० ३ शुक्र	धनविष्णुसूरि	१८४
१४५६ ज्येष्ठ० १३ शुक्र	... .. रत्नप्रमसूरि	१८९
१४७४ माघशु० ५ शनि	....	२८७
१४८३ माघ०कृ० ७ शुक्र	.....	३१३
१४९२ मार्ग०कृ० १४ रवि	.....	३१४
१४९३ च०ष्ट० १ शुक्र	.... .. श्रीसूरि	२४४
१५०६ वैशाखशु० ६ सोम	.... विप्रमामिक्यसूरि	१०४
१५३४ वैशाखकृ० १० रवि (सोम)	..... श्रीसूरि	५२
१५३४ " " सोम (रवि)	.....	३२
१५५५ वैशाखशु० ३ शनि	.....	२११
१५६५ ज्येष्ठकृ० २	..... सुमिसेक	२२२
१५६७ ज्येष्ठ ५ बुध	.....	३५८
१५६९ ज्येष्ठशु० ५ बुध	.....	२३४
१५७२ अर्धिकशु० २ सोम	.....	२०४
१५७८ माघकृ० ५ शुक्र	.....	११६
१५८४ माघकृ० ११ रवि	.....	२३१
१५८७ वैशाखकृ० ७ सोम	..... श्रीसूरि	१७०

१६११ वैशाखशु० १० बुध	.....	२३२
१६१२ पौषशु० १ गुरु	.....	२२५
१६१३ वैशाखशु० १० गुरु	.....	११७
१६१७ पौषशु० १ गुरु	..... ११४, ११५, २५३	
१६२४ फा०शु० ४ मंगल	..... ..	२५१
१६५१ फा०शु० १० मनि	.....	३३
१६६२ फा०शु० शुक्र (बुध)	.....	११०, २६६
१६८१ ....	.....	२५०
१६८३ वैशाखशु० ७ गुरु	.....	२५७
१७८२ वैशाखशु० १५ गुरु	.....	३४८
१८५१ आषाढशु० १५	... रंगविमलसूरि	३१७
१८६९ पौषशु० १३ गुरु	...विजयलक्ष्मीसूरि	३१९
माघशु० १२ शुक्र	..... श्रीसूरि	७६
.....	..... ३१५, ३४०, ३४१	

## १ ज्ञाति, गोत्र एवं कुल की अनुक्रमणिका ।

चम (वंश)	७, १०, ४०, ४८, ६०, ६३, ७२, ७३, १०५,
लमवाल	१२०, १२३, १२४, १३८, १४८, १५९,
लकेश वंश	१९३, १९५, २०५, २०८, २११, २३५,
लपकेश	२५५, २६९, २७१, २७९, २८०, २८१,
लमवाल	२८२, २८४, २८५, २८६, २८९, २९०,
ओमवंश	२९१, २९२, २९४, २९५, २९६, २९७,
ओमवाल	२९८, २९९, ३००. ३०३ (ब), ३०८,
	३११, ३१२, ३६२ ।



गुर्जरादि

२१४

गिघाषाद्य

५४, ६४५

प्रत्याह २८ ३० ३८, ४७, ४९, ५२, ७६, ९२, १०३,  
१२७, १२८, १४१, १४७, १५१, १५४, १६७,  
१६९, १७०, १९४, २१२ २४२, २५६, २६०,  
२६७ २७२ २७४ २७५, २७६ २७७ २७८,  
३२० ३२२ ३२५ ३३४, ३३५ ३५२ ३५७  
३५८ ।

मोहवाद्य

३३४

वीरव्य

६४, १६७, १७५

भीष्म

३२९

भीषं

२६, ४४ १८९ २३९, ३२४ ३६१

भीमाद्य

१ ० ३ ४ ५, ६ ८ ९ ११, १२ १३, १४,  
१५, १७, १८ १९, २१ २३, २४, २५,  
२७, २८, २९, ३१ ३५ ३९, ४१, ४२, ४३,  
४४ ४५, ४६, ५ , ५१ ५६ ५७ ५८, ५९  
६०, ६१ ६५, ६७ ६८ ६९, ७ , ७१ ७४,  
७५, ७७ ७८ ७९, ८ , ८१, ८२ ८३, ८४,  
८६ ८७ ८८, ८९, ९०, ९१, ९३ ९४, ९५,  
९६, ९९ १० १०१, १ २ १०४ १०५  
१०६ ११२ ११३, ११४ ११५ ११७ ११८,  
११९, १२१ १२२ १२३, १२९, १३ , १३१,  
१३२, १३३, १३४, १३६, १३९ १४०, १४२

१४३, १४४, १४५, १४९, १५०, १५२, १५३,  
 २५५, १५६, १५७, १५८, १६०, १६१, १६४,  
 १६५, १६६, १६८, १७१, १७२, १७६, १७७,  
 १७८, १७९, १८३, १८४, १८५, १८६, १८८,  
 १९०, १९१, १९६, १९७, १९८, २०२, २०३,  
 २०७, २०९, २१०, २१३, २१५, २१६, २१७,  
 २१८, २१९, २२१, २२३, २२४, २२५, २२८,  
 २२९, २३०, २३२, २३३, २३८, २४०, २४१,  
 २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९,  
 २५२, २५३, २५४, २५७, २६१, २६२, २६३,  
 २६८, २७०, २७३, २९३, ३०१, ३०३ (ब),  
 ३०४ (ब), ३२२, ३३०, ३४६, ३५३, ३५६,  
 ३५९, ३६०, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९,  
 ३७०, ३७२, ३७३ ।

## १० ग्राम एवं नगरों की अनुक्रमणिका

अहमदाबाद	१५४, ३५९	कलवर्मा	२७९, २८०,
आहिल्याणा	२४७		२८१, २८२,
आहोर	३५०, ३५१,		२८३, २८४,
	३५२		२८५, २८६,
ईंठर	३५२		२८९, २९०,
चढव	१४७	कवियरि	२९३, ३१२
			७४

बहीभाजा	१२९		२१५, २२५,
काकर	११, १७, ३७,		५२८, २३२,
	२७०		१५१, २३१,
काकुवा	३०		२६५
कुलबपुर	३३५	बोझबाबा	७१
काहर	३५	धनुका	१
गूजरबाबा	१२	कृष्ण	२९६, २९७,
केस	३७० ३७१		२९८, २९९,
कन्नपुर	२८८		३००
कीराबका	३०३	पडबखि	७७
पीटाबका	३४०	पचन	१३१, १३७,
सत्याग्रह	१६८		१४५ २०७
सहबाबा	२५		२६०, ३६४,
सिद्धा	१४०	पारकर	४०
ससन	२७८	पुंगळ	२७७
सिद्धबाबा	११९	पुंजपुर	१२३
सिरपुर	२२, ३१, ३९,	बाळबाबा	११८
बराह, बराह	४१, ४२, ४३,	पीळडिया	३४२
भराद	५०, ५९, ६१,	मोपळी	५, १२
सिरपुर	६५, ८१, ९४,	मजोह	१४४
मिरापुर	१०९, ११०,	महका	४४
सिरपुर	११४, ११५,	माहीपुर	७६
सिरपुर	१३२, १४२		

मूजिगपुर	१२८, २४२	वावी	१७, ६८
योगिनीपुर	३०५, ३०६	वासनगर	३५३
रत्नपुर	२७२, ३०७	विद्यास	२२३
राजपुर	३५६	विशालपुर	२७४, २७५,
राढ़वढ़	९३		२७६
लथता	२८	बीजापुर	२११
लीलापुर	३२२	वीरम	३५८
लूदा	३६७	बेलागरी	२६७
लोढानक	३२०, ३२१	शविनगर	२६२
लोटीपुरपट्टण	३१९	आवती	१७५
लोढ़ाढा	३६१	सत्यपुर	३६, १२४
बहरवाड़ा	८७, २४०	सरवास	१३५
बढ़ली	५४, २२९	सहूआला	१२७, ३५७
बराचद्र	१३३	स्तम्भतीर्थ	३०१, ३०८
बराणपुर	८२	साणी	९५
बागुड़ी	६३	साथू	३५०
बाराही	३६५	सियाणा	३५४
बालुकढ़	१३०	सिरोही	३१७
बावड़ी	१७७	हडिग्राम	५६

## ११ सांकेतिक काव्यो की समझ ।

ओ०, औ०	औसबाह	म०	मगाबाह, मगूरक
का०	कारितम्	महा०	मगूरक
कु०	कुष्मपक्ष	मथ०	मथसाही
का	कासि, कासि	म०	महाजन
गो०	गोष्ठिक	मई०	मइघर, मत्री
ठ०, ठ०	ठकुर, ठाकुर	मं०	मत्री
ई	ईवी	उ०, उ०	उपुसासीव
नि०	निर्मित	इ, इ, इ	इवहाटी
परि परी०	परिषद गोत्र	बा०	बासम्य
प	पम्पास	क्या०	क्यापाटी
पु०	पुत्र, पुत्री	इ०	इरह
पूर्नि	पूर्णिमागच्छ	शा०	शाह
म०	महिष्ठितम्	हु०	हुडपक्ष
शा०	शास्त्राद	जे०	जेडी, जेष्ठि
धि०	धिम	सं०	संपबी, संम्पा
मं०	मंझरी		नीच, संवत्

णमोत्पुणं ममणम्स निरिमहाजीर्वाययाम्भः ।

# श्री धातुप्रतिमा लेखमंग्रहः ।

( ऐतिहासिक )

थरादचैत्यप्रतिमालेखाः—

वीरचैत्यान्तर्गत-वासुपूज्यचैत्ये धातुमूर्त्तयः ।

( १ )

संवत् १५०५ वर्षे माघशु० ९ जनौ श्रीमान्-  
जातीय व्य० परवत भार्या श्रीमलदे सुता मांजू-  
देव्या आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथयिम्बं कारिन्,  
श्रीआगमगच्छे श्रीहेमरत्नसूरिगुरूपदेशेन प्रति-  
ष्ठितं धंधुकावास्तव्ये ।

( २ )

सं० १५१५ वर्षे ज्येष्ठसुदि ९ शुके श्रीमालजा-  
तीय गंजरवाडावास्तव्य व्य० जेसा भा०जानू सुत  
५

( १६ )

मूलाक्षेन श्रीसुविचिनाथविम्ब का०, प्र० श्रीपूर्ण  
मासाधुरत्नसूरीणासुपदेवोन विधिमा ।

( ३ )

सं० १५१३ वर्षे पौषवदि ५ रवौ श्रीश्रीमासहा०  
श्रे० महा० चमा सारंग गेला चर्मा राजा दूषा नारद  
समस्तकुटुम्बैः पूर्वजसांगानिमित्तं श्रीअजितनाथ-  
विम्ब का०, प्र० म० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिमिः ।

( ४ )

सं० १५०१ वर्षे पौषवदि ६ श्रीश्रीमासहातीय  
म० सताने पिता से० जेसिंग माता बाईपद्मापदी,  
मा० राजसुतेन मातापिताभयसे श्रीकुन्नुमापविम्ब  
कारापित प्रति० सिद्धाती श्रीसोमचन्द्रसूरिमिर्ये  
सर्वत्र सौभाग्य भवतु ।

( ५ )

सं० १५२८ वर्षे वैशाख सुदि ३ दानौ श्रीश्री  
मासहा० व्य० बापा मा० रतनू सुत वणवीरेण मा०  
शाणी पितृमातृपितृव्यमिमित्तं आत्मभ्येयसे च  
श्रीविमलनाथविम्ब का०, प्र० पिप्पस० त्रिमविपा  
म० श्रीवर्मसागरसूरिमिः ओमश्रीवास्तव्य ।

( ६७ )

( ६ )

सं० १४२१ वर्षे वैशाख सु० ५ शनौ श्रीमाल-  
पितृजयता मातृजयतलदे पितृव्य कर्मणश्रेयोर्थ  
सुतहेलाकेन पार्श्वनाथर्विवं का०, प्र० नागेन्द्रगच्छे  
श्रीगुणाकरसूरिभिः ।

( ७ )

सं० १४३३ वर्षे वैशाख शु० ९ शनौ दिने  
श्रीकोरंटगच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उपकेशज्ञातौ भंड  
पुत्रशाखायां महिमदेव भा० मंदोदरी पुत्र नरश्रेष्ठिना  
पितृमातृश्रेयसं श्रीशांतिनाथर्विवं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीभावदेवसूरिभिः ।

( ८ )

सं० १५१९ वर्षे मार्गशिर सुदि ४ गुरौ श्रीमा-  
लजा० लघुसंतानीय व्य० जेसा भा० हरखू पुत्र  
व्य० राजाकेन भार्या भवकुयुतेन स्वश्रेयोर्थ  
श्रीपार्श्वनाथर्विवं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे  
श्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन । शुभं भवतु श्रीः ।

( ९ )

सं० १५१२ वर्षे मार्गशिर सुदि १५ सोमे श्री  
भावडारगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० पदमा भार्या





( ६९ )

पितृमातृपितृव्यवापानिमित्तं आत्मश्रेयसे च श्री  
शांतिनाथविंशं का०, प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभविष्या  
भट्टा० श्रीधर्मसागरसूरिभिः भोयलीग्रामे ।

( १३ )

सं० १४१७ वर्षे वैशाख सुदि २ रवौ श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्यव० लींवा भार्या नामलदे सुत सहजा-  
केन भा० सहजलदे पितृ लींवाश्रेयसे श्रीवासुपूज्य-  
विंशं कारापितं प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीउदयानंद-  
सूरिपट्टे श्रीगुणदेवसूरिभिः । श्रीः ।

( १४ )

सं० १४९५ वर्षे आषाढसुदि ९ रवौ श्रीत्रिह्याण-  
गच्छे श्रीश्रीमा० व्यव० गोरा भा० देल्हणदे सुत  
भा० रमल भार्या पोमादे सुत हूंगर भाग्वराभ्यां  
पित्रोः श्रेयसे श्रीधर्मनाथविंशं का०, प्र० श्रीजज्जग-  
सूरिपट्टे श्रीपज्जुन्नसूरिभिः ।

( १५ )

सं० १४२९ वर्षे माघवदि ५ सोमे श्रीश्रीमाल-  
जातीय श्रे० अभयसिंह भा० आल्हणदेव्या पितृव्य-  
कमा श्रीमूलराजपार्श्वश्रेयस्करविंशं का० श्रीनरप्रभ-  
सूरीणामुपदेशेन ।

( ७० )

( १६ )

सं० १५१ बर्षे पौषवदि ० ज्ञानौ श्रीधवल  
गच्छेद्वा श्रीजयकीर्तिसूरीणामुपवेशेन सा० काव्  
पत्नी कमलादे सुत मा० हरिसेनेन पत्नी माला  
णदभेयोर्थ श्रीभजितनाथर्षिब कारित श्रीसंघ  
प्रतिष्ठित च ।

( १७ )

सं० १५१३ बर्षे पौषवदि ५ एषौ श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय भे० तिहुअण मा० कर्मादे सुत डाडाकेन  
मा धारणापत्री मेच सुत भाकरसहितैर्मादुपिष्ट  
भेषम श्रीभजितनाथर्षिब का०, प्र० चैन्नगच्छीय  
म० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिभिः वाधिग्रामवास्तव्यः ।

( १८ )

सं० १५११ बर्षे माघशु० ५ सोम श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय व्य० बामरसुत जोधराज मा० रत्नेव्या  
पतिनिमित्त आत्मभेषसे श्रीकुन्धुमाधजीयितस्वा  
मिर्षिब का०, प्र० श्रीराजतिलकसूरीणामुपवेशेन  
श्रीसूरिभिः ।

---

१ सेपाह ९४, १९१ १५६ को देखते हुए लेखाह १८  
के स्थान में गुरी चाहिये ।

( ७१ )

( १९ )

संवत् १५०९ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० सोनमलेन भा० राजी, स्वमातृ वदा  
भार्या पूरी निमित्तं श्रीसुमतिनाथर्विवं कारितं  
सिद्धांतीगच्छे सोमचंद्रसूरिप्रतिष्ठितं ।

( २० )

सं० १३४९ ज्येष्ठ शु० २ श्रीभावडारगच्छे सा०  
सोमा भार्या सोमश्री पुत्र छाडा-नागा-गयवरैः  
स्वमातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथर्विवं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीविजयसिंहसूरिभिः ।

( २१ )

सं० १४३२ वर्षे फा० सु० २ शुक्ले श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० व्य० वागा भार्या विजयश्रीश्रेयसे पुत्र विजय-  
कर्णेन श्रीवासुपूज्यर्विवं कारितं श्रीनरप्रभसूरीणा-  
मुपदेशेन ।

( २२ )

सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० पितामह हापा पितामही हांसलदे सुत चूडा  
भा० चांपलदे सुत देवाकेन भार्यालूणादे सहितेन  
पि० मा० पितृव्य चांपा हेमा आता बीजा सर्वपूर्वज-

( ७१ )

निमित्त, श्रीशीतलनाथचतुर्विंशतिका पदं का०,  
प्र० पिप्पलगाच्छे श्रीसोमचन्द्रसूरिपदे श्रीठवयेव  
सूरिभिः पिरापद्रवास्तव्यः ।

धीरप्रमुद्येस्ये चातुमूर्त्तय —

( २३ )

मघत् १४८३ चर्चे ज्येष्ठ वदि ८ रवौ श्रीश्रीमाछ०  
व्यव० सिंघा मा० लम्बमादे पुत्र सलम्बा मा०  
श्रीमलदे पुत्र गोला सींघा सींहारव्यैः पितृमातृ  
भेयोर्थ श्रीनेमिनाथविंश का०, प्र० ब्रह्माणगच्छे  
श्रीधीरसूरिपदे श्रीमणिचन्द्रसूरिभिः ।

( २४ )

स० १५ ५ वैश्र वदि १३ रवौ रापरवास्तव्य  
श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमाछ० व्यव० बापणसुत मेघा  
मा० श्रीमलदे सुत श्रीमा गोसल वेसल गोसल मा०  
सिंगारदे सुत बडुमा कमसिंहारव्यैः पित्रोः भेयसे  
श्रीविमलनाथचतुर्विंशतिपदः का०, प्र० श्रीमशुम्भ  
( पञ्चम )सूरिभिः ।

( २५ )

मघत् १५२१ चर्चे का० शु० ७ शनौ श्रीश्रीमाछ  
ज्ञातीय साहु रामा भे० कुमा मा० कसमीरभी

( ७३ )

सुन लापाकेन भा० फली सुत धन्ना भा० झावली  
पांची सुत मेहादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्रीशांति-  
नाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः ब्रह्माणगच्छे  
श्रीवीरसूरिभिः शुभं भवतु तद्दवाडावास्तव्य ।

( २६ )

संवत् १५२८ वर्षे चैत्र वदि १० गुरौ श्रीश्रीवंशे  
मं० सांगा भार्या टीवूपुत्र मं० रत्ना सुश्रावकेण  
भा० धारिणी पुत्र वीरा हीरा नीना बाबा सहितेन  
पितृव्य मं० सहसा पुण्यार्थ श्रीअंचलगच्छ गुरु  
श्रीजयकेसरिसूरिरुप० श्रीसुविधिनाथविंव का० प्र०  
श्रीसंघेन श्रीः ।

( २७ )

संवत् १६१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ दिने काकर-  
वास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० नवा भा० वाई  
धनीसुत श्रे० धरणा भार्या प्रोमीसुत जेसा रत-  
नाभ्यां श्रीविमलनाथस्य विंव कारार्पितं श्रीनागे-  
न्द्रगच्छभट्टारक श्रीधरसंघसूरि तत्पट्टे भट्टारक  
श्रीज्ञानसूरिभिः ।

( २८ )

सं० १५१३ वर्षे माघवदि ७ बुधे प्रा० ज्ञा०  
लघुसं० परी० वाला भा० डाहीसुत भोजाकेन

( ७४ )

भा० छापी पुत्र नाथा साजन महितेन पितृमातृभे०  
श्रीशांतिमाधयिष का०, प्र० पूर्णिमा० क्षीमाणिषा  
भ० श्रीजयशेखरसूरीणामुपदेशेन लापताग्रामे ।

( २० )

० स १५८० वर्षे वैशाख्यदि १३ शुभ भीमी  
मालज्ञा० सं० हीरा भार्या राभीसुत मह० हेमा  
भा० इमीरदे सु० भ तेजाकेन भा० नीतिसुत-  
हृगर-मृगर-भाणायुतेन स्वभेषसे श्रीसुपार्श्वनाथ  
यिष श्रीपू० श्रीपुण्यरत्नसूरिपदे श्रीसुमतिरत्नसू-  
रीणामुपदेशेन कारित प्रतिष्ठित विधिसयुक्त ।

( ३० )

सं० १५१७ वर्षे वै० शु० ३ प्राग्बाट व्य० कृपा  
भा० रुडीसुत देवसी भा० बाल्दीसुत देपालन  
भांडाविकुण्डपयुतेन स्वभेषसे श्रीविमलनाथयिष  
का०, प्र० तपाभीरत्नशेखरसूरिपदे श्रीलक्ष्मीसा-  
गरसूरिभिः कालुजावामी श्री । ।

( ३१ )

सं १५६३ वर्षे का० सु० ८ शमो भीमीमाल

---

वेगवासुपतिमा डेलसंग्रह वि. माग का डेकाह ८९५  
बीर बह सोमो एक ही हैं ।

( ७५ )

जातीय आजूसखा व्यव० मेघासुत आशा भार्या  
अमरी नाम्न्या आत्मश्रेयसे जीवितस्वामि-श्रीचंद्र-  
प्रभस्वामिद्विधं कारापितं प्रतिष्ठितं भ० सुमति-  
प्रभसूरिभिः, थिरापद्रनगरवास्तव्य पूर्णिमापक्षे ।

( ३२ )

\* सं० १५१६ वर्षे सं० गेलाकेन सपरिवारेण  
(पूर्णिमापक्षे) श्रीगणधीरसूरीणामुपदेशेन श्रीगीतम  
मूर्तिः कारापिता ।

( ३३ )

सं० १६५१ वर्षे फाल्गुन वदि १० शनौ श्री-  
थिराद्रवास्तव्येन श्रीमुनिसुव्रतद्विधं प्रतिष्ठितं ।

वीरचैत्ये प्रस्तरमय कायोत्सर्गमूर्ति—

( ३४ )

संवत् १२९१ वर्षे माघ सुदि ५ गुरौ पिप्पल-  
पक्षगच्छे वीरसुत द्वांक्षणेन तथा सुत नेनक नेढक  
ब्रह्मा केयु तथा आम्रदेवेन श्रीरिषभदेवचैत्ये जिन-  
युग्मद्वयं कारितं, वला० अभयकुमारकुटुंबसमुदायेन  
जीर्णोद्धारः कारितः प्रतिष्ठितं श्रीसर्वदेवसूरिभिः ।

---

❧ लेखाक १४०-४१ के अनुसार ये आचार्य पूर्णिमा  
पक्षीय हैं.



( ७१ )

वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्ये धातुमूर्चय —

( १५ )

स० १५१९ वर्षे माघय० द्वितीया दानौ श्रीश्री  
मासहातीय भे० लापा भा० लाछनदे पुत्र बसा,  
हला भा० इमीरवे सुत वेला गेलाकेन वेलाभा० वय  
अछदेयुतेन पितृमा तुम्हातुस्वपूजनिमि० श्रीशीतल  
नाथ चतु० पदः का०, प्र० पिप्पलगच्छे श्रीमुनि  
सिंहसुरिपदे श्रीभमरचन्द्रसुरिमिः कोहरवास्तव्यः ।

( १६ )

संवत् १५१५ वर्षे वैशाख्यदि २ गुरौ श्रीश्री  
मासहातीय परी० खता भा० जेतलदे पु० ईसर  
भा० राजलदे पु० मोकल भा० मद्दिगलदेव्या पु०  
बळलासहितेन पिघोर्निमित्त स्वभेयोर्थं च जीवित  
स्वामी श्रीभाविनाथचतुर्विंशतिपदः का०, प्र०  
श्रीपिप्पलगच्छ श्रीचन्द्रमससुरिमिः श्रीसत्पुत्र  
वास्तव्यः श्रीः ।

( १७ )

संवत् १५१८ वर्षे पौष यदि ३ सोमे श्रीश्री  
मासहातीय मंजारी मोला भा० बाहीदेव्या स्व  
पुण्यार्थं जीवितस्वामी श्रीविमलनाथविंशं कारितं

( ६७ )

प्रतिष्ठितं चैत्रगच्छे धारणपट्टीय भट्टारक श्रीज्ञान-  
देवसूरिभिः, काकरवास्तव्यः ।

( ३८ )

( सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ शु० १० दिने प्राग्वाट  
व्य० गोपाल भा० लखीसुत व्य० लाखा भा० कीमी  
प्रमुग्वयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीशांतिजिनर्षिषं कारितं  
प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्री  
रत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

( ३९ )

स० १५३३ वर्षे वैशाख शु० ६ शुके श्रीश्री-  
मालजा० श्रे० कर्मसी आ० लालु सु० श्रे० मामाकेन  
भा० देवलीसहितेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयसे  
श्रीसुविधिनाथर्षिव का०, प्र० नागेंद्रगच्छे म०  
श्रीगुण देवसूरिभिः थरादनगरे ।

( ४० )

सं० १५२२ वर्षे पौष वदि १ गुरौ उपकेशज्ञातौ  
श्रेष्ठिगोत्रे म० मोखापुत्र म० धन्नाकेन भा० साल्ही-  
केन च महाजनीखीदापुण्यार्थं श्रीशीतलनाथर्षिवं  
कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे श्रीककुदाचार्यसंताने  
श्रीकक्कसूरिभिः पारकरनगरे ।

( ४८ )

( ४९ )

स० १७५७ वर्षे माघसुदि ५ दिने श्रीधिरापद्र  
वास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय धृदशास्त्रार्थ बो० देव-  
राजेन भा० मानी सुत बो० वासा सांकला सुत  
भोजराजादि सहितेन [स्थ] पुण्यार्थ श्रीसमवनाथ  
विषय कारापिते प्रतिष्ठित तपागच्छे म० श्रीविजय-  
प्रमसूरिपदे संविज्ञपक्षे म० श्रीज्ञानविमलसूरिभिः ।

( ४९ )

स १५१० वर्षे माघसुदि ५ रवौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय पितृभोला मातृभाषदेदि सुत लूणसिंहेन  
प्रातृ हेमला मिमिस्त मिजकुदुषभेयसे श्रीशान्ति  
नाथपंचतीर्थीका०, प्रति० पिदपलगच्छ त्रिमविया  
गच्छनायक श्रीधर्मशेखरसूरिभिः पिरपद्रपुरे श्रीः ।

( ४९ )

सं० १५०६ वर्षे वैशाखसुदि ८ रवौ श्रीश्री  
मालज्ञातीय व्यव० भोला सुत सं० लूणसी भा०  
लूणादेव्या आत्मभेयसे जीवितस्वामी श्रीभेयांस  
नाथपंचतीर्थीविषय कारित प्रतिष्ठित श्रीपिदपलगच्छे  
त्रिम० म० श्रीधर्मशेखरसूरिभिः धारापद्रवास्तव्यः ।

( ४४ )

म० १५१० वर्षे माघसुदि १० बुधे श्रीब्रह्माण

( ७९ )

गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० सादूल सुत भार-  
मलेन भा० कपूरदे सुत डाहा वेला मातृपितृश्रेयसे  
श्रीअजितनाथविंव कारितं प्र० शीपज्जूनसूरिभिः  
मर्हडकाग्रामे ।

( ४५ )

सं० १५०८ वर्षे वैशाखवदि ४ सोमे श्रीश्री-  
मालज्ञातीय श्रे० नयणेन भा० टहिकु सु० लाखा  
हेमा दूदादि कुटुंबयुतेन पितृव्यकतुहणा भा० हांसू  
श्रेयोर्थ श्रीशीतलनाथविंव का०, सिद्धांतीगच्छे श्री  
सोमचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं । शुभं भवतु श्रीः ।

( ४६ )

सं० १५०६ वर्षे वैशाखवदि ८ रवौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्यव० वरसिंघ भा० तिलुश्रिया आत्म-  
श्रेयोर्थ जीवितस्वामी श्रीश्रेयांसनाथविंव कारा०,  
प्रति० श्रीपिठपलगच्छे त्रिमविया श्रीधर्मशेखर-  
सूरिभिः ।

( ४७ )

सं० १६१८ वर्षे माघसुदि १३ प्राग्वाट सोनी  
सामा पुत्री सोनीदेव्या श्री आदिनाथविंव कारित  
प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीविजयदानसूरिभिः ।

( ८७ )  
( ४८ )

संवत् १५१० वर्षे आषाढसुदि १ शुके उपवेश  
बंधो मण० गोत्रे म० माला मा० मालाणवे पु  
कावाभायकेन बंधव गुणिया दूगर पुत्र मदा वदा  
राजा प्रमुखपरिवारयुतेन श्रीशांतिमाधविष्य स्व  
पुण्यार्थं कारित प्रतिष्ठित श्रीस्वरतरंगकृते श्रीजिन  
राजसूरिपदे श्रीजिनमद्रसूरिभिः ।

( ४९ )

स० १५२८ वर्षे वैशाखसुदि ५ शुरौ श्रीप्राग्बाह  
ज्ञा० स० काला मा० मालाणवे सुत स० रत्ना मा०  
लाबू स० मीमाकेन मा० देवति सु० कुटुंबयुतेन  
स्वभेयसे श्रीसुविधिमाधविष्यं कारित श्रीवृहत्  
पापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरिभिः ।

( ५० )

संवत् १४९९ वर्षे कार्तिकसुदि १५ शुरौ श्रीश्री  
मालाज्ञातीय द्यव० लीवा मा० काष्ठं पुत्र धीरा  
केन आत्मभेयोर्थं श्रीशीतमाधविष्यं कारितं, प्र०  
पिप्पल० त्रिमयीया म० श्रीश्रीधर्मशेखरसूरिभिः  
श्रीधिरापद्रे ।

( ५१ )

सं० १२६३ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुरौ सा० हीला

( ८१ )

सुत सा० लूणेन मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथ-  
प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्रीदेवसूरिशिष्य श्री  
वयरसेणसूरिभिः ।

( ८२ )

सं० १५३४ वर्षे वै० च० १० रवौ ( सोमे ) प्राग्वाट  
व्य० सेला भा० तेजूपुत्र अजा भा० वमी पु० नर-  
पालेन पितृव्य व्य० वाछा डाहा पांचादि कुटुंबयुतेन  
श्रीश्रेयांसनाथविवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः  
डीसामहास्थाने ।

( ८३ )

सं० १६१५ चैत्रवदि ४ शुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय  
महाजनी सोमा भार्या झमकलदे द्वितीया मिरगादे  
सुत वाछाकेन मातृपितृपितृव्यनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं  
श्रीचंद्रप्रभविवं कारापितं श्रीपूर्णि० श्रीवीरप्रभसूरि-  
पट्टे श्रीकमलप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिभिः ।

( ८४ )

सं० १४९७ वर्षे वैशाखवदि ६ शुके वडली-  
वास्तव्य डीसावालज्ञातीय श्रे० कडझा भा० मांकू

१ ले. ३०२ में सोमवार लिखा है ।

( ८२ )

मुत्र समधरण भा० छापीयुतेन पितृश्रेयोर्थं श्रीसु  
पार्श्वर्षिष्य कारितं प्रतिष्ठित श्रीपूर्णमापक्षीय क्षीमा  
गिपा श्रीजयशेखरसूरीणामुपदेशेन ।

( ५५ )

सं० १३४० वैशाख षडि ५ शुके श्रीमन्मङ्गला-  
[केन] गुरूपदेशेन साधुप्रभसिंहमुनिकारितेन विंशति ।

( ५६ )

सं० १५१५ वर्षे माघशुदि १ शुके श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय पितृवेपाल भा० धातुश्रेयोर्थं सु० सीमा  
क्षेताभ्यां श्रीनमिनाथर्षिष्य कारितं श्रीपूर्णमापक्षीय  
श्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीसधेन  
हृदियास्तव्यः ।

( ५७ )

सं० १३६९ वर्षे वैशाखशुदि ८ श्रीश्रीमालज्ञातीय  
परी० शंकाश्रेयोर्थं सुत पांताकेन श्रीपतुर्विंशति  
तीर्थकराणां विंशति कारितं प्रति० श्रीनागेंद्रगण्डे  
श्रीसुबनामदसूरिशिष्य श्रीपद्मार्थप्रसूरिभिः ।

( ५८ )

सं० १४८८ कपेष्ठशु० १ सोमे श्रीमालज्ञातीय  
माङ्गणसी कइता भा० कइतसवे पु० वीरधमस हरि

( ८३ )

घवल विक्रमैरेकमतीभूय मातृपितृजस्वश्रेयसे श्री  
विमलनाथचतुर्विंशतिपट्टः का०, प्र० त्रिभविष्या-  
पिप्पलाचार्य श्रीधर्मशेखरसूरिभिः ।

( ५९ )

सं० १५१७ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्य० माहणसुत व्य० सूरभा० सुहृवदे  
सुत व्य० रुद्राराणाभ्यां आत्मश्रेयोर्ध्वं श्रीजातिनाथ-  
चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रति० श्रीपिप्पलगच्छे  
त्रिभविष्या भट्टा० श्रीधर्मसागरसूरिभिः धारापट्टवा-  
स्तव्यः शांतिवर्धनार्थं सर्वेषां पूर्वपुरुषाणां भवतु ।

( ६० )

सं० १४८२ वर्षे वैशाखवदि ४ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्य० ऊदिरभा० हांसलदे सुत भोलाभा०  
भावलदे सु० नेमालूणा सिंहाभ्यां मातृपितृ तथा  
आतृ हेमलाश्रे० चतुर्विंशतिपट्टः श्रीअजितनाथस्य  
का०, प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभविष्या श्रीधर्मप्रभसूरि-  
पट्टे श्रीधर्मशेखरसूरिभिः, शुभं ।

( ६१ )

सं० १५१६ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ धिरापट्टगच्छे

---

१ ले. ५१ और १०० एक ही कुल के लेख हैं ।



( a )

श्रीश्रीमालशालीय व्य० सुरा मा० भियादे सुत  
 बीसछेन मा० मीनादे सुत पीरा काला कुटुंब  
 पुतेन स्वमासुपितृभ० श्रीभयांसनापचतुर्विंशति  
 पदः का० प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंहसूरिभिः पिरा  
 पदवास्तव्यः । श्री श्रीः ।

✓ (६२)

स० १४५३ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे ९ सोम  
उपशावशे मङ्ग० माहण भार्या आलङ्करणे सुत  
सूणा पाखा बहरमल केलहा प्रभृति धातुसमुदायेन  
निजमातृधातुसवजननिमित्त चतुर्विंशतिविनपदः  
कारापितः, प्रतिष्ठितः श्रीजीराठलीपुरीयगण्डे श्री  
वीरचन्द्रसूरिपदे श्रीशास्त्रिमद्रसूरिमिः । श्रीसधस्य  
शुभ भवतु ।

40)

संवत् १५३५ वर्षे पौषकृदि १२ रवौ श्रीठयस  
 श्रयो अ० हिरा मा० हिरावे पुष्य अ० पासासुम्बाव  
 केण मा० पूमावे पुष्य बीमा मृता देवा महितैः  
 स्वभ्रेयोर्थं श्रीमन्मलगच्छे श्रीमन्मलेसरसूरीणामुपदे  
 शोम श्रीसमवनाथर्षिण कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंवेन  
 बागुडीग्रामे ।

( ८५ )

( ६४ )

सं० १५०७ वर्षे माघसुदि १३ शुक्ले वीरवंशे  
सं० लीला भार्या मोदी पुत्र सं० नारदसुश्राव-  
केण भा० जयरू सहितेन श्रीअंचलगच्छेश श्री-  
जयकेसरिसूरीणामुपदेशात् श्रीधर्मनाथविंशं पितुः  
श्रेयसे कारितं श्रीसंघेन च प्रतिष्ठितं श्रीभवतु  
पूज्यमानं विजयतां ।

( ६५ )

सं० १५०१ वर्षे पौषवदि ६ बुधे गोत्रजा वाराही  
श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० सहिपाल सुत व्य० सिंहा  
भा० सुहवदे सुत नाथा राउल धरणाकेन स्वमातु-  
श्रेयोर्थं श्रीश्रेयांसनाथविंशं कारापितं प्रति० थारा-  
पद्रगच्छे श्रीसर्वदेवसूरिपट्टे श्रीविजयसिंहसूरिभिः ।

( ६६ )

सं० १४७९ वर्षे भा० सु० ४ काकसवंशे वोहरा-  
शाखीय सा० राणिगसिंघ पुत्र गांगा भा० महंघलदे  
सुत सांवलकेन पुत्र वस्ता तेजा सहितेन भा०  
स्वेलदे वल्लालदे श्रेयसे श्रीशांतिनाथविंशं कारितं  
प्रति० खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ।

( ६७ )

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ५ श्रीश्रीमालज्ञातीय

( ८१ )

व्य० सांवासुत अवल मा० गेलीसुत हरराजेन  
मा० वाऊसहितेन स्वपितृभेयसे श्रीधादिमाधर्षिबं  
कारित प्रतिष्ठित वैभ्रगच्छे धारणपद्मीय भीलक्ष्मी  
देवसूरिभिः ।

( ८८ )

स० १५५३ वर्षे वैशाखसुवि १३ सोमे श्रीश्री  
माल० व्य० ममा मा० डाही सुत रहिभाकेन मा०  
रणीसहि० पितृमातृपितृव्यघ्नातनि० व्यात्ममे श्री  
सुमतिनाथर्षिबं का० प्र० पिप्पलगच्छे श्रीपद्मा  
नंदसूरिभिर्बाधितास्तव्याः ।

( ८९ )

स० १५०५ वर्षे वैशाखसुवि ३ शुक्र श्रीब्रह्माण  
गच्छ श्रीश्रीमाल० व्य० मेघा सुत गोसखेम मा  
सिणगारवे सुत कमसीसहितन पितृवेसल मातृमह  
गद निमित्त श्रीममिमाधर्षिबं का०, प्र० श्रीपञ्चुल  
सूरिभिः ।

( ९० )

स० १४८५ माघसुवि १० चामौ श्रीश्रीमाल  
शातीय म० ठाकुरसी मा० शमकु पुष म० काला  
केन पित्रोः भेयसे श्रीपद्मप्रमर्षिबं का०, प्रति०

पूर्णिमापक्षे श्रीविद्याशेखरसूरीणामुपदेशेन विधिना .  
श्रेयः शुभं ।

( ७१ )

सं० १५१७ वर्षे माघवदि ८ बुधे श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० वीरा भा० शाणी सुत जोगाकेन भा०  
मानू सु० महीराज कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथ .  
विंशं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीगुणसमुद्रसूरिपदे श्रीपुण्य-  
रत्नसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना  
दोलावाढाग्रामे ।

( ७२ )

सं० १५३५ वर्षे माघसुदि ३ रवौ श्रीउकेशवंशे  
रायथला सेठियागोत्रे धरणा पुत्र वेलाकेन भा०  
विमलादे पुत्र खमागेलागजादिनि० श्रीनमिनाथ-  
विंशं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे श्रीजिनचंद्र-  
सूरिभिः । श्रीः ।

( ७३ )

सं० १४९३ वर्षे फागुणवदि १ दिने उकेशवंशे  
नवलक्षशाखायां सा० पाल्हा पुत्र सा० पीचा फमण-  
आचकाभ्यां श्रीआदिनाथविंशं का०, प्रतिष्ठितं श्री-  
खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ।

( ८८ )

( ७४ )

स० १५०८ वर्षे वैश्वसुदि ५ शुभे श्रीश्रीमातृ-  
ज्ञातीय प्रपिता येषां प्रपि० प्रथमादे पि० श्रीमा-  
पिता कर्मादे पितृ मेषठ भा० आशादे सुत परत्वा  
छल्लुभ्यां पूर्वजमे० मातृपितृभेयोर्धं श्रीशीतलनाथ  
चतुषशतिपद्विंश का०, प्र० पिष्पलगच्छे श्री  
समरचंद्रसूरिपदे श्रीशुभचंद्रसूरिभिः । कावेयरी  
वास्तव्या ।

( ७५ )

सं १४७१ वर्षे श्रीश्रीमातृज्ञा० मे० केरडभा  
भा० मल्ल सुत वालङ्ग[केम]प्रातृछाताभेयोर्धं चतु  
विंशतिपद्विंश कारिता श्रीवागमगच्छे श्रीअमरसिंह  
सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठित विधिना ।

( ७६ )

स० ... ६५ वर्षे माघसुदि १२ शुभे माश्रीपुर  
वास्तव्य श्रीप्राग्व्याठज्ञातीय व्य० जेसामेयोर्धं सुत  
पूनाकेन श्रीश्रीतिमाषविंशं कारापितं प्रतिष्ठित श्री  
सूरिभिः ।

( ७७ )

सं० १५११ वर्षे माघशुदि १० शुभे श्रीश्रीमातृ

( ८९ )

ज्ञा० श्रे० चूणा भा० वापलदे सुत देवाकेन मातृ-  
पितृ श्रे० श्रीजिघीतस्वामी श्रीशीतलनाथविंयं का०,  
प्र० पिष्पलगच्छे श्रीसोमचंद्रसूरिपदे श्रीउदयदेव-  
सूरिभिः पढधलिया ग्रामे ।

( ७८ )

सं० १४९९ वर्षे कार्तिकसुदि ५ गुरौ श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्य० मांडण भा० माहणदे पुत्र वचा-  
वरडाकेन आतृकर्मा, राघवनिमित्तं श्रीचंद्रप्रभ-  
स्वामिविंयं कारितं प्र० पिष्पलत्रिभविद्या भट्टारक-  
श्रीधर्मशेखरसूरिभिः ।

( ७९ )

सं० १५२७ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० बुधे श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० श्रे० संदा सुत श्रे० सूरुाकेन सुत देवा पोपट  
प्रभृति कुटुंबयुतेन भार्या वागूश्रेयसे श्रीकुंयुनाथ-  
विंयं पूर्णिमापक्षे श्रीपुण्यरत्नसूरीणासुपदेशेन का०,  
प्र० विधिना श्रेयोर्थ ।

( ८० )

सं० १५८१ वर्षे माघवदि १० शुके श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय वृद्धशाखायां मं० लाला[केन]भा० लीलादे

१ ले० ५०, १९० के अनुसार १५ पूर्णिमा होना चाहिए ।

सुत आशा मा० ऊमादे सुत लाला हीरा कुंज  
पुतेन श्रीनिगमप्रभाषक श्रीभार्गवसागरसूरिभिः  
श्रीशांतिनाथविष्य प्रतिष्ठित कारित च ।

( ८१ )

सं० १५१० वर्षे कार्तिकवदि ४ रवौ श्रीश्रीमाछ  
ज्ञा० इय० खूणसिंह मा० खूणादेवि सु० संग्रामसी  
[इन]मा० बरहादेविभेयसे श्रीशांतिनाथविष्य कारित  
प्रतिष्ठित पिप्पलगच्छे मिमबिषा श्रीसोमशेखर  
सूरिभिः श्रीधिरापत्रे ।

( ८२ )

सं० १५२९ वर्षे ज्येष्ठवदि १ शुके श्रीश्रीमाछ  
ज्ञा० अ० घमा मा० चांपलदे सुत पैमाकेन मा०  
आसु सुत चांपायुतेन पितृव्यभेयसे श्रीपद्मप्रभादि  
पंचतीर्थी आगमगच्छे श्रीअमररत्नसूरिणास्तुपदेशेन  
कारापिता प्रतिष्ठिता बिराणपुरवासिन्यः ।

( ८३ )

सं० १५१६ वर्षे आपावसुदि १ शुके श्रीश्रीमाछ  
ज्ञातीय इय० कान्हा मा० कमलादे सु० शुहिमा  
सुराम्पा पितृमातृनिमिर्त्त आत्मभेयसे श्रीनमि  
नाथविष्य का० प्रतिष्ठित पिप्पलगच्छे श्रीसोमचंद्र  
सूरिपदे श्रीउदयवधसूरिभिः ।

( ९१ )

( ८४ )

सं० १५१७ वर्षे चैत्रसुदिपूर्णिमायां श्रीमालजा-  
तीय खेडरियागोत्रे सं० कानू पुत्र सं० रणवीर आव-  
केन भा० हरखूआविका पुन्यार्थ श्रीशांतिनाथविंशं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि-  
पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ।

( ८५ )

सं० १२२० ज्येष्ठसुदि ९ रवौ श्रियाहठेन श्री-  
पार्श्वनाथप्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता प्रभुहेमचंद्र-  
सूरिभिः ।

( ८६ )

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्य० सायर भा० संसारदे सुत व्य० कुरमी  
भा० नयणादे सुत व्य० जेसिंगेन श्रीधर्मनाथविंशं  
का०, प्रति० पिळ्पल० त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरि-  
पट्टे श्रीधर्मसुंदरसूरिभिः ।

( ८७ )

सं० १५२५ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ सोमे श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्य० गोला भा० गुरदेसुत हेमाकेन भार्या  
हीरादे माधु सुत वहजादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ



( ९९ )

श्रीअजितनाथविष कारितं प्रतिष्ठित ब्रह्माणगच्छे  
श्रीवीरसुरिभिर्ब्रह्मवाङ्मावास्तव्याः ।

( ८८ )

सं० १५१० वर्षे काशुणसुदि ११ चामौ श्रीश्री  
मासज्ञा० व्यय० पूनपास भा पाण्डुदेवी पुत्री  
हिराहरिपान्यां सुपूर्वजैर्मिमितं श्रीआदिनाथविषं  
कारितं प्र० श्रीमावडारगच्छे श्रीकाशिकाचार्यम०  
श्रीवीरसुरिरुपवेशेन ।

( ८९ )

सं० १५६१ वर्षे माघवदि ५ शुके श्रीश्रीमास  
ज्ञातीय व्य० वेशड भा० पात्रीपुत्र श्रीमा भा० वरज  
पुत्र आर्जुनेन पितृमातृ आत्मश्रेयसे श्रीममिनाथ  
विष कारितं प्रतिष्ठित पिप्पलगच्छे त्रिभवीया भ  
श्रीधर्मसागरसुरिपदे महारक श्रीधर्मप्रमसुरिभिः ।

( ९० )

स० १५६० वर्षे का० सु० १२ सोमे श्रीश्रीमा०  
व्य० लीषा भा० लाह सु० धर्मसी भा० पाण्डवे  
भा० श्रीमा आत्मश्रे श्रीशीतलनाथविषं का०, प्र०  
पिप्पल० श्रीशुभिसिंघसुरिपदे श्रीधर्मप्रमसुरिभिः ।

( ९१ )

स० १५०१ वर्षे काशुणसुदि ५ शुरौ श्रीब्रह्माण

( ९३ )

गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० तेजपाल भार्या मूली  
सुत लाखा [केन] भा० ललितादे सुता रतनू पितृ-  
मातृश्रेयोर्थ श्रीवासुपूज्यविंशं का०, प्र० श्रीपञ्चन-  
सूरिभिः ।

( ९२ )

सं० १५२४ वर्षे मार्गवदि २ प्राग्वाट व्य० तेजा  
भा० सीरी पुत्र व्य० पोपाकेन भा० पांतीदे पु०  
वर्जांग देपाल प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ श्रीसुवि-  
धिनाथविंशं का०, प्र० तपागच्छेश श्रीरत्नशेखर-  
सूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

( ९३ )

सं० १५१७ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ श्रीमालज्ञातीय  
श्रे० वीरम भा० चिल्हदे तयोः सुतौ श्रे० राडल  
भीमा भा० धीरु सुत हापाकेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थ  
श्रीसुविधिनाथविंशं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे  
श्रीमुनिसिंहसूरिभिः, राडवडवास्तव्यः ।

( ९४ )

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० कर्मसी भा० मदी सुत महिपाकेन  
पितृमातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थ श्रीसुमतिनाथविंशं

( ९४ )

कारापितं प्रतिष्ठित श्रीशृणिमापक्षे श्रीराजलिखक  
सुरिभिः स्मिरापत्रे ।

( ९५ )

सं० १५३६ वर्षे काशुणसुदि ३ सोमे श्रीश्री  
माल० भे० खूणा भा० यमकु सुत भोजाकेन भा०  
लमकु सुत रहिमादि कुदुषपुतेन मादपितृभेपसे  
श्रीभेपांसमापर्विष शृणि० श्रीगुणपीरसूरीणामुप०  
का० प्रति० विधिना साणीवास्तव्यः ।

( ९६ )

सं० १५०१ वर्षे पौषवदि ३ शुके श्रीश्रीमाल-  
जालीयव्य० यगसा भा० जेसलदे सुत धडसिहेन स्व  
पितृघादभेपोर्य जीवतस्वामि-श्रीसुमतिमापर्विष  
कारित प्रति० नागेद्रगच्छे श्रीपद्मानदसूरिपदे श्री  
विनयप्रभसूरिभिः ।

( ९७ )

सं० १५०५ वैशाखसुदि १ बुधे लठाठरागोचे  
सं० मगराज भा० छाफी सु सं० यमराजेन भा०  
सोमार्ह पु० सं० कालुषमुखपरिवारण स्थभेपोर्य श्री  
सुविधिनापर्विष कारित श्रीभरमरगच्छे श्रीगुड-  
श्रीजिनभद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( ९५ )

( ९८ )

सं० १४९३ वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे फलजघीया-  
गोत्रे सा० छाहू भा० छाजुई पुत्र सावाकेन आत्म-  
पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथर्विवं कारापितं प्र० श्रीधर्म-  
घोषगच्छे भ० श्रीपद्मशेखरसूरिपट्टे भ० श्रीविजय-  
चंद्रसूरिभिः ।

( ९९ )

सं० १४३५ वर्षे माघवदि १२ सोमे श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० सं० खेडसिंग सुत सं० हादाकेन का० शांतिनाथ-  
र्विवं, प्र० श्रीवीरसिंहसूरिपट्टे श्रीवीरचंद्रसूरिभिः ।

( १०० )

सं० १५१७ वर्षे पौषवदि ५ शुरौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० सूरु मा० सुहवदे सुत रुदाराणाभ्यां  
मातृपितृनिमित्तं श्रीशान्तिनाथर्विवं का०, प्र०  
पिप्पल० त्रिभवीया श्रीधर्मसागरसूरिभिः ।

( १०१ )

सं १५७२ वर्षे वैशाखवदि ४ रवौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० भूवर सुत व्य० पोपट [ केन ] मा०  
प्रीमलदे आ० गोपाल सुत हादासहितेनात्मश्रेयोर्ध  
श्रीसुविधिनाथर्विवं कारापितं श्रीपूर्णमापक्षे प्रधान  
शाखायां श्रीसुवनप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं

( ९९ )

( १०२ )

सं० १४३४ वर्षे वैशाखशुदि २ बुधे भीमासङ्गा०  
व्य० जाठिल भा० खेमलदे भे० मालाकेन भीशांति  
नाथर्विष का०, प्रतिष्ठितं पिप्पलापापभीमुनि  
प्रभसुरिमिः ।

( १०३ )

सं० १४३२ वर्षे वैशाखशुदि ६ शुके प्राग्बाटङ्गा०  
प्रछेपन भा० सायलदे पुत्र माखणकेन भीमादिनाथ  
र्विष का०, प्र० मङ्गाङ्गा भीहरिमहसुरिमिः ।

( १०४ )

सं० १५ ६ वर्षे वैशाखशुदि ६ सोमे भीभीमा  
लक्ष्मीय भे० लाखा भा० पातली सुत कीकाकेन  
आत्मभेषोद्य भीममिनाथर्विष कारितं प्रतिष्ठितं  
भीजिनमाणिक्यसुरिमिः ।

( १०५ )

सं० १४३० वर्षे माघशुदि ८ सोमे वीसबंशीय  
व्य० आशायर भा० रामलदे पित्रोः भेषसे [ सुत ]  
व्य० सादाकेन भीमादिनाथः कारितः प्र० पिप्प  
लाचार्यभीधर्मदेवसुरिसंताभे भीप्रीतिसुरिमिः ।

( १०६ )

सं० ११०० माघशुदि ९ भीभीमास पितृव्य भे

( ९७ )

नरसिंह भा० नयनादे स्त्रीमा साहा पु० करणाकेन  
श्रीशांतिनाथविंशं का०, प्र० चैत्रगच्छे श्रीहरिश्रंद्र-  
सूरिभिः ।

( १०७ )

सं० १३९९ फागणसुदि १३ सोमे श्रीमूलसंघेन  
वयडठी [ प्रतिष्ठा कारिता ]

( १०८ )

सं० १७०८ मागसरसुदि २ रवौ सा० यक्षरा-  
जेन पुण्यार्थं श्रीपार्श्वविंशं कड्डुआमतगच्छे भाणाजी  
लाधाजीकेन [ का० प्रतिष्ठितम् ]

( १०९ )

सं० १६८३ ज्येष्ठसु० ३ कड्डुआमती थरादरा  
ठाकुर रत्नपाल भा०रमादेव्या सुमतिनाथविंशं का०  
तेजपालेन प्र० ।

( ११० )

सं० १६६२ फागणसु० २ बुधे हारापित्रासा-  
जनसी [ श्रे० ] श्रीवासुपूज्यविंशं का० थरादनगर-  
वास्तव्ये ।

( ९८ )

( १११ )

सं० ११६४ वर्षे वैशाखशुक्ले १३ अश्वि० छात्रा पुत्र  
स्त्रीमठ मा० जयतु पुत्र केल्हण मा० सुणी पु० हर  
पाल मा० फूपरवे सुत रत्नसिंहेन मा० गठरावे  
सहितेन पितृव्यदेवस्य पूमपाल पितापितृव्य नर  
पालभेषसे आदिमायप्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता  
श्रीमहेंद्रसूरिपदे श्रीमन्मयदेवसूरिमिः ।

( ११२ )

सं० १४३६ वैशाख वदि ११ अश्वि० श्रीमालझा०  
व्य० बीषा मा० हमीरवे सुत मूदेवेन पितृभेषसे  
श्रीपाम्बनाथर्षिष का०, प्र० पिप्पलगच्छीय श्री  
विजयप्रभसूरिपदे श्रीठक्पानवसूरिमिः ।

( ११३ )

सं० १४७९ माघवदि ७ सोम० श्रीमावडारगच्छे  
श्रीश्रीमालझातीय व्य० भरमा पुत्र सरवणेन पुत्र  
पर्वतभेषसे श्री चंद्रप्रभस्वामिर्षिष कारितं प्रति०  
श्रीविजयसिंहसूरिमिः ।

( ११४ )

सं० १६१७ वर्षे पौष वदि १ श्रुतौ राजाधिराज  
श्रीमन्मसेन राणी बामादेवी तयोः पुत्र श्रीश्रीपाम्ब

( ९९ )

नाथविंव कारितं श्रीधिराद्रवास्तव्य लघु० श्रीमाल-  
जातीय श्रे० बीजा पूना मूलादिकेन स्वकर्मक्षयार्थ ।

( ११५ )

सं० १६१७ वर्षे पौष वदि १ गुरौ राजा श्री  
कुम्भाराणा राणीश्रीप्रभावती तयोः पुत्र श्रीश्री  
मल्लिनाथस्य विंव कारितं श्रीधिराद्रवास्तव्य श्री  
श्रीमालजातीय महं० घडसी रंगा उदयवंत धनपाल  
संघवी कर्मक्षयार्थ प्रतिष्ठितं विंव श्रीशुभं भवतु ।

( ११६ )

सं० १५७८ वर्षे माहवदि ५ शुके महाराजा-  
धिराज श्रीदृढरथ राज्ञीश्रीनंदादेवी पुत्र श्री श्री  
श्री श्री शीतलनाथविंव कारितं श्रेयसेस्तु ।

( ११७ )

सं० १६१३ वर्षे वैशाखसुदि १० गुरौ राजाधि-  
राज महाराज श्रीनाभिनरेश्वर माता श्रीमरुदेवी  
तत्पुत्र श्री श्री श्री श्री आदिनाथविंव कारितं  
श्रीधिराद्रवास्तव्य श्रीश्रीमालजातीय चार्ह नीनू  
कर्मक्षयार्थ कारितं ।

( ११८ )

सं० १५११ वर्षे ज्येष्ठवदि ९ रवौ श्रीश्रीमालजा०



स० मोना भा० श्वेतसुदे सुत गाढा भा० मोली  
सुत काठा भा० कामसुदे आ० धर्मण, नरियामि  
पितृमातृभ्यसे श्रीनमिमाषर्षिष का०, प्र० श्री  
विष्णुलक्ष्मणे भ० श्रीउदयदेवसूरिभिः, बालहरग्रामे ।

( ११९ )

सं० १५०६ वर्षे वैश्वविदि ५ शुरौ श्रीश्रीमात  
ज्ञातीय सं० जेसिंग भा बापू सु बमाकेन पितृ  
व्यसारेण आ० कर्मणभेयोर्थं श्रीशांतिनाथर्षिष पुणि-  
मापक्षे श्रीवीरप्रभसूरीणास्तुपवेशेन कारित प्रति-  
ष्ठित च विधिना तिउरवादाग्रामे श्रीः ।

( १२० )

स० १५१६ वर्षे माघविदि ७ सोमे श्रीउदयदेव  
सा० राणा भा० रयणादे पुत्र सा० खरद्वर्षभाषकेण  
भा० माणिकदे पुत्र लखमण केसवण कीर्ति पौत्र  
मदन सुरा माणिक सहितेन पुत्ररावणपुण्यार्थ श्री  
अचलगच्छे श्रीजयकेसरीसूरीणास्तुपवेशेन संभव  
नाथर्षिष कारित प्रतिष्ठित च ।

( १२१ )

स० १५११ वर्षे माघविदि ५ शुरौ श्रीश्रीमात  
ज्ञातीय व्यस० कर्मसिंह भा० मदी सु० बापाकेन

( १०१ )

पुत्र मातृश्रेयर्थं श्रीअजितनाथविंशं कारापितं श्री-  
पू० भ० राजतिलकसूरैरुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभिः  
थिरपद्रे ।

( १२२ )

सं० १५६० वर्षे वैशाखसुदि ३ बुधे श्रीश्रीमा-  
लज्ञा० व्य० सारंग भा० रंगी सुत लग्नमणकेन भा०  
पालू सुत रहिया देपाल सहितेन स्वपितुर्निमित्तं  
आत्मश्रेयर्थं श्रीशांतिनाथविंशं का० श्रीनागेंद्रगच्छे  
भ० श्रीसोमरत्नसूरिपदे भ० श्रीहेमसिंघसूरिभिः  
प्रतिष्ठितं ।

✓ ( १२३ )

सं० १५२१ ज्येष्ठसुदि ९ सोमे उप० जातीय  
नाहरगोत्रे कुशला भा० कल्हणदे पुत्र महणाकेन  
पितृव्यपुण्यार्थमात्मश्रेयसे श्रीसुमतिनाथविंशं का०,  
प्र० धर्मघोषगच्छे श्रीपद्मानंदसूरिभिः पुंजपुरवा-  
स्तव्यः ।

( १२४ )

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठसुदि १३ बुधे उपकेशजा-  
तीय व्यव० कीका भा० सरसइ सुत खेता भा०  
रंगी सुत रूपाकेन भ्रातृदेवराजनिमित्तमात्मश्रेयसे

( १०२ )

भीनमिनापरिचकारापित प्रतिष्ठित भाषडारगच्छे  
भीभाषदेवसूरिभिः सत्यपुरवास्तव्यः ।

( १२५ )

सं० १५६० वर्षे वै० सु० ६ स० त्वेता भा० हांस  
छवे पुत्र सं० त्वेताघ्रातृ स० अर्जुनेन भा० अधिकादे  
पुत्र स० मांडण घ्रातृछ हूगर बना जेसा प्रभृति  
कुटुंबयुतेन हृदयितृव्य सं० मेहा भेयसे प्रीतये श्री  
वासुपूज्यर्षिष कारित प्रतिष्ठित तपागच्छे श्रीसोम  
सुवरसूरिपद्मे मायक श्रीकमलसूरिभिः ।

( १२६ )

स० १५४१ वर्षे ज्येष्ठसुदि ११ श्रीभीमासीय  
व्य० समधर भा० जीविणी पुत्र व्य० धर्मसिंहेन  
भा० माणिकी पुत्र महिराज धरजांगादियुतेन स्वभे  
यसे श्रीशीतलमाषर्षिष का०, प्र० श्रीसूरिभिः पूज्य  
श्रीशौभाग्यरत्नसूरिभिः ।

( १२७ )

सं० १५... वर्षे माषष २ शुरौ श्रीप्राग्बाट झा०  
भे धांगा भा० पगादे सुत पर्वतकेन भा० मदहू  
पुत्र कमणादि कुटुंबयुतेन श्रीविमलनापरिचकार  
प्र० हृदयतपापक्षे भ० श्रीजिमसुंदरसूरिभिः । सह  
आलावास्तव्यः श्रीः ।

( १०३ )

( १२८ )

सं० १५२३ वर्षे वैशाखसुदि १३ प्राग्वाट व्य०  
मुंजा भा० जसू पुत्र व्य० हापाकेन भा० रत्नादे  
पुत्र जावड़ जीवा जगादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ  
श्रीअभिनंदनचिंवं का०, प्र० तपागच्छाधिराज श्री-  
लक्ष्मीसागरसूरिभिः मूजिगपुरे ।

( १२९ )

सं० १५३६ वर्षे पौष वदि २ गुरौ श्रीब्रह्माण-  
गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठिरामा भार्या रत्नादे  
सुत वरदेवेन भा० वील्हणदे सुत मांजर भाखर  
सहितैः स्वपितृमातृश्रे० श्रीसुमतिनाथचिंवं का०  
प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः कहीआणावास्तन्यः ।

( १३० )

सं० १५१७ वर्षे वैशाखसुदि १२ भोमे श्रीश्री-  
मालज्ञातीय श्रे० हला भा०हेली सुत सबसीकेन  
पितृमातृस्वपूर्वजश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथपंचतीर्थी का-  
रिता प्र० पिष्पलगच्छे भ० श्रीगुणरत्नसूरिभिः  
वालुकडग्रामे ।

( १३१ )

सं० १५४८ वर्षे वैशाखवदि १० रवौ श्रीश्री-

( १०४ )

मालज्ञा० सिद्धशा० भे सुखमसी भा० मांजू सुत  
मया भा० मांजू सुत तेजाकेन भा० मल्हईसहितेन  
पितृमातृभ्रातृनिमित्तमात्मभेयसे श्रीशीतलमाष  
बिष का०, प्र० पिप्पलगण्डे श्रीरत्नदेवसूरिपदे श्री  
पद्मानंदसूरिभिः पत्तनवास्तव्यः ।

( ११२ )

सं १४९९ वर्षे कार्तिकसुदि १५ गुरौ श्रीभी  
मालज्ञातीय स्व० सूरामा० सुहृदे पुत्र पतासुवा  
न्यामात्मभेयोर्थे श्रीसमवनापरिषत् कारित प्रति  
ष्ठित पिप्पलगण्डप्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिभिः  
धारापत्रे ।

( ११३ )

सं० १५१३ वर्षे माघसुदि ३ शुके श्रीभीमाल-  
ज्ञातीय म० सूरामा० जोडी सुत हापाकेन भा०  
कली सु० समथर सहसा वरदेव बीरा पचायण  
महिराज सहितेन पितृमातृ भे० श्रीमादिनापरिषत्  
का , प्र० श्रीब्रह्माणगण्डे श्रीमणिचंद्रसूरिभिः,  
वराठव्रवास्तव्यः ।

( ११४ )

स० १५२७ वर्षे पौषवदि ४ गुरौ श्रीसिद्धशा

( १०५ )

खीय श्रीश्रीमाल व्यव० दूदा भा०माणिकदे सुत  
राणाकेन सम्राट्पुतेनात्मश्रेयोर्थ श्रीसुमतिनाथविं०  
का०, प्र० श्रीपिङ्गलगच्छे श्रीविजयदेवसूरिशिष्य-  
शालिभद्रसूरिभिः ।

( १३५ )

सं० १५३४ वर्षे पौषव० १० दिने श्रे० मांजा  
भा० मालहणदे सुत भावड भा० टूवीनामन्या नि-  
जश्रेयसे श्रीआदिनाथविं० का० प्र० भ० श्रीलक्ष्मी  
सागरसूरिभिः संस्कारवास्तव्यः ।

( १३६ )

सं० १४५० वर्षे माघवदि ९ सोमे श्रीमाल-  
ज्ञातीय धांधीयागोत्रे ठकुर हरिराज पु० ठ० हापा  
ठ०जयपालनिमित्तं ठ० हेमाकेन श्रीअजितनाथविं-  
वंका० प्र० ग्वरतरगच्छे श्रीजिनवल्लभसूरिभिः ।

( १३७ )

सं० १५३७ वर्षे वैशाखसुदि १० सोमे श्रीवीर-  
वंशे श्रे० मोखा भा० रामति पुत्र श्रे०देवा सुश्राव-  
केण पुत्र नारद पूना युतेन निजश्रेयोर्थ श्रीअंचल-  
गच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणासुपदेशेन श्रीअनन्त-  
नाथविं० कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन पत्तननगरे ।

( १०९ )

( ११८ )

स० १५१७ वर्षे माघशुद्धि ७ रवौ ठपकेश  
शातीय व्य० मांढण भा० करण सुत मोकाकिम  
भा० ऊवी द्वि० भा० समु सुत आण्हणपांचायु  
तेमास्मअपसे श्रीसभबनायधियं का०, प्र० श्रीजीरा  
पल्लीप श्रीठययचत्रसुरिपडे म० श्रीसागरचत्र  
सुरिनिः शुभं भवतु ।

( ११९ )

स० १५०५ वर्षे वैशाखशुद्धि ९ शुके श्रीभी  
मालशातीय म० साल्हा भा० फरकूद सुत सेमा  
भा० सेतलदेव्या सुत राजासहितेन स्वभेपोर्ष  
जीवितस्वामिभीमभिमापयिच का० श्रीपू० म०  
श्रीवीरममसुरीणासुपवेशेन प्रतिष्ठिता धिरापत्र  
वास्तव्यः ।

( १४० )

सं० १५१६ वर्षे आषाढशुद्धि ३ रवौ श्रीभी  
माल० म० बत्सा भा० वीरलदेसुत मे० शिवाकेन  
मातृपितृभेपोर्ष श्रीअजितमापयिच पूर्णिमापक्षे  
श्रीगुणसमुद्रसुरिपडे श्रीगुणवीरसुरीणासुपवेशेन  
कारित प्रतिष्ठितं च विधिमा तदेवाग्रामे ।

( १०७ )

( १४१ )

सं० १५१६ वर्षे माघवदि ९ जोमे प्राग्वाट  
व्य० गोत्रा भा० कीलहणदे पु० देवा[ वैन ] भा०  
सूलेसिरी सुत भरमादिसहितेनात्मश्रेयसे श्री-  
गीतलनाथविं का०, प्र० पूर्णिमापक्षे श्रीदेवचंद्र-  
सूरीणामुपदेशेन ।

( १४२ )

सं० १५०५ वर्षे वैशाखसु० ३ शुके थिरापद्र-  
गच्छे श्रीश्रीमाल धु० धीरा आतृ नरसी धीरा भा०  
धांधलदं सुत इला, अर्जुन गोलाकेन स्वपितृमातृश्रे०  
श्रीआदिनाथविं का०, प्र० श्रीविजयमिहसूरिभिः  
थराद्रवास्तव्यः

( १४३ )

सं० १५२० वर्षे चैत्रवदि ५ बुधे श्रीश्रीमालजा०  
पितृकान्हा मातृरूपिणि निमित्तं पुत्र सालिगेन  
भा० गेरीयुतेनात्मकश्रेयसे श्रीकुंथुनाथविं का०,  
प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिपद्वे  
श्रीधर्मसूरिभिः ।

( १४४ )

सं० १५१५ वैशाखसुदि १३ रवौ श्रीश्रीमाल



( १०८ ) ✓

प्य० मदा भा० खेतलद सुन जयमिधेन भा०  
जपमादमहितेन पितृघ्रातृनिमित्तमात्मभेपोर्थं श्री  
नद्रमभस्यामिषिष का०, प्र० पिप्याग्नगच्छे म०  
श्रीपितृयदेवसूरिस्पदनान श्रीशास्त्रिभद्रसूरिभिः,  
मजोद्वयमे ।

( १४५ )

सं० १०२४ वर्षे वैशाखसुदि ३ सोम श्रीमिद  
मतान श्रीमात्मा० भ० लम्बममी भा० मांजू सुन  
गणियाकेन भा० रीजू सुन आशपरसहिनेन पितृ  
मातृभेपोर्थं श्रीभयांसनापविषे का०, प्र० श्रीपिप्य  
लगच्छे श्रीठदगदेवसूरि पद श्रीरत्नदेवसूरिभिः  
श्रीपत्तन ।

✓ ( १४६ )

सं० १०६० वर्षे फागुणसुदि २ शुक्र श्रीउपस  
पशे बद्धराजाभ्यायां सा० दरशा भा० सौलादे पुत्र  
विषमसुभाषण भा० पलदाद पुत्र व्याघ्रसिंह  
भोजा पीमा रोमा मदितम पितृव्यसागनपुण्यार्थं  
अचलगच्छ शुक्रश्रीजयकेसरिसूरीणासुपदेदान वि  
मलनापविषे का० प्रतिष्ठित य ।

( १४७ )

सं० १०१० वर्षे वैशाखसुदि ३ प्राग्यादृक्षातीप

( १०९ )

व्य० वीरम भा० क्षुत् सुत राघवेन आतृ हेमा  
हीरा वीसल भा० मचकू सुत अर्जुन सांगा सह-  
जादि कुटुंबयुतेन पितृश्रेयोर्थ श्रीसुमतिनाथविंव  
कारितं प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिभिः, जडवदासी ।

( १४८ )

सं० १५०७ वर्षे फागुणवदि ११ गुरौ व्यव०  
गोला[केन] भा० महगलदेनिमित्तं श्रीकुंथुनाथविंव  
कारापितं ब्रह्माणगच्छे श्रीमणिचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

( १४९ )

सं० १३४१ श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय  
श्रे० साहडुश्रेयोर्थ सुत लापाकेन विंव कारितं प्रति-  
ष्ठितं श्रीधरसूरिभिः ।

( १५० )

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठवदि ३ सोमे श्रीभावडार-  
गच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सोना भा० महीदेव्या  
स्वपुण्यार्थ श्रीवासुपूज्यविंव कारितं प्र० कालिका-  
चार्यसंताने पूज्य श्रीवीरसूरिभिः ।

( १५१ )

सं० १५२७ वर्षे माघवदि ५ दिने गुरौ प्राग्वाट-  
ज्ञातीय सा०करणा भा० मापूपुत्र सा०बीढाकेन भा०

( ११० )

राजसुत पुत्र सा० पालाविकुट्टपयुतेन श्रीमभयनाथ  
पिप का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

( १५२ )

म० १४७१ माघसुदि ३ श्रीश्रीमालज्ञातौ भे०  
वेदा भा० वेत्तुणवे सुत दृवाफेन पिघोः भे० श्री  
विमलनाथपिप का०, प्र० पिप्पलगच्छे श्रीमपिपा  
श्रीधर्मप्रभसूरिभिः ।

( १५३ )

स० १५०१ वर्षे पौषवदि ९ श्रीश्रीमालज्ञातीय  
से० नयणा सुत कर्णेन पितृव्य तुहणा मना दूगर  
वदा मातृव्य पात्नीमिमित्त श्रीनेमिनाथपिप कारा  
पितं प्र० सिद्धांतीश्रीसोमप्रसूरिभिः ।

( १५४ )

स० १५१७ वर्षे ज्येष्ठवदि १ शुभे अहमदाबादीय  
प्राग्धाट म० लीषा भा० मयू पुत्र अदा भा० मांजी  
नाम्न्या स्वधेपसे श्रीजितनाथपिप कारित प्र०  
पृथतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ।

( १५५ )

स० १५२४ वर्षे वैशखवदि ५ श्रीमास भे० भाबा  
भा० छात्र सुत राजा भा० राजू पुत्र जीवठ साङ्ग-

( १११ )

रतनासहितैः पित्रोर्निमित्तं स्वश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथ  
विंशं का० प्र० धारणपट्टीय भ० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिभिः ।

( १५६ )

सं० १५०६ वर्षे माघसुदि... श्रीश्रीमालज्ञातीय  
श्रे० सूर[केन] भा० रूपादे सुत धर्मानिमित्तं आ-  
विका सूड्यात्मश्रेयसे श्रीसंभवनाथविंशं का०, प्र०  
पि० श्रीधर्मशेखरसूरिपट्टे श्रीविजयदेवसूरिभिः ।

( १५७ )

सं० १५१० फागुणसुदि ११ शनौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० व्यव० पूनपाल भा० पाल्हणदे पुत्र हीरा हरि-  
याकेन पुत्र नगड नरपालयुतेन भ्रातृनिमित्तं श्री-  
अभिनंदनस्वामिर्विंशं का० श्रीभावडारगच्छे श्री-  
कालिकाचार्यसंताने श्रीवीरसूरिपुरन्दरैः ।

( १५८ )

सं० १३५९ श्रीव्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय  
श्रे० ज्ञाज्ञाकेन पितृथिरपाल्हश्रीमंत श्रेयसे श्री-  
शांतिनाथविंशं कारितं प्र० श्रीवीरसूरिभिः ।

( १५९ )

सं० १४४९ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुक्ले श्रीउपवेश-  
ज्ञा० पितृकुरसिंह मातृकामलदेः श्रेयसे सुत

( ११९ )

वीरकाकेन श्रीसुमतिनाथर्षिण कारित श्रीपार्श्वचन्द्र  
सुरीणामुपदेशेन ।

( १६० )

स० १५०३ चर्ये ज्येष्ठवदि ७ ब्रह्माणगण्डे मोरि  
बावास्तव्य श्रीभीमाली ज्य० हीरा सुत वपरा भा०  
छात्री सुत मांडण भा० पाखूवे सुत समधर वनराज  
सहितनात्मभेयोर्थ श्रीवासुपूज्यर्षिण कारित प्रति  
ष्ठितं श्रीपञ्चसुरिभिः ।

( १६१ )

स० १४४२ चर्ये वैशाखवदि १ रत्नौ श्रीभीमा  
लक्षा० भे० हरपाल भा० हीरावेद्यात्मभेयसेजीवित  
स्वामिभीमाविनाथर्षिण का०, प्र० पिप्पलगण्डे श्री  
सागरचन्द्रसुरिभिः ।

( १६२ )

स० १५०३ चर्ये मार्गशिरवदि ५ श्रीमावडार  
गण्डे ( श्रीककुवाचार्य सं० ) द्वादा पु० स० कासा  
भा० कमलादे पुत्र भीमा वेला मालाकेन स्वपुण्यार्थ  
श्रीनमिमाथ कारापित प्र० श्रीवीरसुरिभिः ।

( १६३ )

सं० १४०३ प्रा० भे० माडलसी भा० माणिकदे

( ११३ )

सुत ठाकुरसिंहेन भा० पातू सुत वानरादियुतेन  
श्रीसुमतिनाथविं का०, प्र० तपा श्रीसोमसुंदर-  
सूरिभिः ।

( १६४ )

सं० १४८२ वर्षे वैशाखवदि ४ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
ज्ञा० पितृ आपमल मातृजमादेवी पितृव्यरणसिंघ-  
श्रेयसे सु० देवाकेन श्रीसंभवनाथविं कारितं प्र०  
पिष्पलगच्छे श्रीसागरभद्रसूरिभिः ।

( १६५ )

सं० १५२७ वर्षे कार्तिकवदि ५ सोमे श्रीश्री-  
मालज्ञा० सं० घृद्धशाखायां व्य० कर्माण भा०  
हमीरदे सुत नाभाकेन स्वपितृमातृ श्रे० श्रीअजित-  
नाथविं का०, प्र० श्रीविजयसिंहसूरिपदे श्रीशांति-  
सूरिभिः धिरापद्रगच्छे श्रीः ।

( १६६ )

सं० १५५२ वर्षे फागुणसुदि ३ श्रीश्रीमालज्ञातौ  
नियूगोत्रे व्य० जीता भा० वानू पुत्र भीमा भा०  
वरजू कामलदे पुत्र रामारंगाम्यां श्रीसुमतिनाथविं  
का०, प्र० कंछोलीपूर्णिमापक्षे भ० श्रीविजयराज-  
सूरिभिः ।

( ११४ )

( ११७ )

सं० १५३७ चर्वे क्येष्ठसुदि २ सोमे श्रीप्राग्बाट  
ज्ञाती छत्रशाल्यायां भे० हरदास मा० गोखी पुत्र  
राणा पत्नी दशकुमाम्न्या स्वपुण्यार्थं श्रीअजितनाथ-  
विंब कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीछस्मीसागर  
सुरिमि ।

( ११८ )

सं० १५३३ चर्वे माघसुदि ११ सोमे श्रीभीमात्  
ज्ञातीय भे० ठाकुरसी मा० करमी सुत मेहाजठ  
मा० मास्ही सुत सधारण जगमाउसहितेन द्वि०  
भार्या देहूनि० श्रीसुमतिमाधविंब का०, पूर्णि० भ०  
श्रीकमलप्रभसुरिणा प्रतिष्ठित जनाकुयो वास्तव्यः ।

( ११९ )

सं० १४८४ चर्वे प्राग्बाटज्ञातीय व्य० सापरसुत  
व्य० गदाकेन स्वभ्रातृपद्माभेयसे श्रीशांतिनाथविंब  
कारापितं प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसुरिमिः ।

( १२० )

सं० १४२६ चर्वे वैशाख यदि ११ प्राग्बाटज्ञातीय  
व्य० असवीर मा० बांसछवे पु० मामाकेन मित्र  
पिघोः भेयसे श्रीमहावीरविंब कारितं श्रीपासंघ-  
सुरीणासुपदेशेन ।

( ११५ )

( १७१ )

सं० १५२९ वर्षे माघसुदि १ बुधे श्रीब्रह्माण-  
गच्छे श्रीमालज्ञातीय श्रे० भावा भा० भावलदे  
सुत रामाकेन भार्यालाडीनिमित्तं पुत्र वजूरसहितेन  
स्वपूर्वजश्रेयर्थं श्रीसंभवनाथविंशं का०, प्र० श्री-  
विमलसूरिपट्टे श्रीवृद्धिसागरसूरिभिः ।

( १७२ )

सं० १५३२ वर्षे वैशाखसुदि १३ सोमे थारा-  
पट्टीयगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० ठाकुरसी भा०  
पालहणदे पुत्र ऊदा[किन] भा० अहिवदे पितृ[व्य०]  
फाफा कालुआ झलीआ निमित्तं श्रीअजितनाथविंशं  
का०, प्रतिष्ठितं श्रीशांतिसूरिभिः ।

( १७३ )

सं० १२०४ वर्षे वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीपंढेरक-  
गच्छे देल्हा भा० देल्ही सुत रत्नसिंहश्रेयर्थं  
कुमरसिंहेन श्रीपार्श्वनाथविंशं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीशांतिसूरिभिः ।

( १७४ )

सं० १५१३ वर्षे वै० सु० ३ श्रीमूलसंवे सर-  
स्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यसंतानीय भ० सकल-





( ११७ )

श्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथयिवं का०, प्र० श्रीब्रह्माण-  
गच्छे श्रीविमलसूरिभिर्वाविहीनामे ।

( १७८ )

सं० १४०४ वर्षे का० व० ९ सोमे श्रीश्रीमाल  
व्य० नरिया भा० नीनादेश्वरसे पितृ[व्य]खीमा  
वहजा श्रेयोर्थं भ्रा० नरसिंहादिसर्वेषां नि० सुत  
तिलकाकेन श्रीपद्मप्रभपंचतीर्थी कारिता श्रीपूर्णमा-  
पक्षे श्रीसूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

( १७९ )

सं० १३८७ वर्षे वैशाखसुदि २ रवौ ब्रह्माणगच्छे  
श्रीश्रीमालजा० व्य० चयरा[किन]स्व श्रेयसे श्रे० घुर-  
सिंहसहितेन श्रीपार्श्वनाथयिवं कारितं प्र० श्री-  
जज्जगसूरिभिः ।

( १८० )

सं० ११४८ श्रीनागकरणेन आत्मश्रेयोर्थं कारितं ।

( १८१ )

सं० १४५२ वैशाखसुदि ५ गुरौ राठ पुत्र महं०  
राणासुत लालाकेन पितृमातृ तथा पितृव्यवहारा-  
श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथयिवं का०, प्र० श्रीपुन्यतिलक-  
सूरिणा ।

( ११८ )

( १८९ )

सं० १४५६ ज्येष्ठसुदि १३ गुरौ प्रा० अ० सांगण  
भार्या सुगुणादे पु० मेघाकेन घ्रातु शुणमरपाछ ।  
भगदा मातृस्वसा कुरीदेतेषां निमित्तं श्रीसंभबनाथ  
यिष का०, प्र० श्रीरत्नप्रभसूरीणामुपदेशेन ।

( १८३ )

सं० १४६५ चर्ष वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीश्री-  
मालज्ञा० व्य० बीरा भा० श्रीलङ्घनदे सुत अ० पर्वतम  
श्रीसंभबनाथयिष का० प्र० नागोन्मृगच्छे श्रीरत्न  
सिंहसुरिभिः ।

( १८४ )

सं० १४५३ चर्ष वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमाल-  
पितृव्य महीमल मातृ सुदहादे घ्रा० श्रीमा नहुजा  
पंचजन भेषसे देपाकेन श्रीमादिनाथपचत्तीर्षी  
कारिता श्रीचनतिलकसुरीणामुपदेशेन प्र० ।

( १८५ )

सं० १४९९ चर्ष फागुणचदि ३ रवौ श्रीश्रीमाल  
झासीप अ० फला भा० पोमी घ्रातृजयकुरसीभेयोर्ष  
सुत रहिपाकेन श्रीकुंगुनाथयिष का०, प्र० पिप्पल  
गच्छे भ० श्रीतिरत्नसुरिभिः ।

( ११९ )

( १८६ )

सं० १४८४ वर्षे वैशाखवदि ११ रवौ श्रीश्रीमातृ  
व्य० फूटर भा० हांसलदेव्या पितृमातृश्रेयोर्ध श्री-  
कुंडुनाथविंयं कारितं प्र० पिप्पलगच्छे श्रीधर्म-  
शेखरसूरिभिः ।

( १८७ )

संवत् १०४६ चैत्रवदि १ अचलपुरसंघेन कारा-  
पितं ।

( १८८ )

सं० १४८९ वर्षे वैशाखसुदि ३ बुधे श्रीश्रीमाल-  
जातीय श्रे० हीरा[ केन ] भा० हीरादे सुत भाखर  
भा० साणी स्वभ्रातृश्रेयसे श्रीआदिनाथविंयं कारा-  
पितं ब्रह्माणगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीक्षमासूरिभिः ।

( १८९ )

सं० १५५२ वर्षे वै०व० ३ शनौ कुंडीशाखायां  
श्रीश्रीवंशे व्य० गहिया भा० झाझु सुत करणा भा०  
तारु सुत पांता भा० रामती पितुः पुण्यार्थं अंचल-  
गच्छे श्रीसिद्धांतसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीकुंडुनाथ-  
विंयं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ।

( १९० )

( १९० )

सं० १४९९ वर्षे कार्तिकसुदि १५ श्रुतौ श्रीभी-  
मासहातीय व्य० अर्जुन भा० कश्मीरदेशत साध-  
पौत्र चमराजेन पितामहमिमित्तमात्मभेयोर्ध श्री-  
शांतिनाथर्षिभ कारित प्रति० विष्णुसगच्छविम-  
वीषामहारक श्रीधर्मशेखरसुरिमिः ।

( १९१ )

सं० १५१५ वर्षे कार्तिकवदि १४ शुके श्रीमाध-  
वारगच्छे श्रीभीमासहातीय व्य० मेहाडसेन भा०  
छाष्ट पुत्र पूमा गांगा सांगा पितृव्य गेला सहितेय  
स्वपुण्यार्थ श्रीशीतलनाथर्षिभ का०, प्रति० श्रीवीर-  
सुरिपदे पूज्यश्रीजिनदेवसुरिमिः ।

✓ ( १९२ )

सं० ११७७ वर्षे वै०व० ८ शुभौ सातुतागोत्रे  
सा० कर्मसी भा० चरणश्री पु० सा० संज्ञणकेन श्री-  
पार्श्वनाथर्षिभ का०, प्र० श्रीमदेवसुरिमिः ।

✓ ( १९३ )

सं० ११९४ वर्षे वैशाखसुदि ९ बुधे ठसवात  
हातीय ठा० देवहा भा० सुहदा पुत्र सांज्ञणकेन  
पूर्वजमिमित्त श्रीपद्मप्रभर्षिभ का०, प्र श्रीजय-  
चन्द्रमसुरिमिः ।

( १२१ )

( १९४ )

सं० १५४७ वर्षे वैशाखसुदि ३ सोमे प्राग्वाट-  
ज्ञातीय डीसावास्तव्य व्य० लखमणेन भा० रमकु  
पुत्र लींवा तेजा जिनदत्त सोमा सूरा युतेन स्वश्रे-  
योर्थ श्रीशांतिनाथविंबं कारितं प्रतिष्ठितं अंचल-  
गच्छे श्रीश्रीसिद्धांतसागरसूरिभिः। व्य० लखमणेन  
भा०रमकु पुत्र लींवा भा० टमकू ।

( १९५ )

सं० १५१७ वर्षे मार्गसु० १० सोमे श्रीउएसवंशे  
सा० राणा भा० राणलदे० पु० खरहत्य सुश्रावकेण  
भा० माणकदे० पुत्र लखमण सहितेन अंचलगच्छे  
श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन पितृश्रेयोर्थ श्रीचंद्र-  
प्रभस्वामिर्विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ।

( १९६ )

सं० १४९४ आवणवदि ९ रवौ श्रीश्रीमाल व्य०  
समरा भा० जाल्हणदे श्रेयसे सुत भरमाकेन श्री-  
सुविधिनाथपंचतीर्था कारा० प्रतिष्ठिता पिष्पलगच्छे  
त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिभिः ।

( १९७ )

सं० १५०७ वर्षे माघसुदि १० सोमे श्रीमाल-

( १९२ )

श्रातीय इय० पर्वत मा० राजसुदे पुत्र सहाद्र मेरा  
महीपात्रिः पितृमातृभेयोर्ध्वं भीकुपुनायविब कारितं,  
प्र० नागेंद्रगण्डे भीपद्मानंदसूरिपदे भीविमपप्रम  
सूरिभिः ।

( १९८ )

स० १४८९ वर्षे वैशाखसुदि १ सोमे भीभीमात्र  
श्रातीय स० साखा मा० भरमादे सुत सोलाके  
घातृबहुभासुत साजमपुण्यार्धं भीशातिनायविब  
का०, प्र० पिप्पल० भीसोमचंद्रसूरिभिः ।

( १९९ )

स० १३०९ वर्षे फागुणसुदि १३ बुधे सोराज  
गोष्ठी सा० हरदेवेन पुण्यार्धं भीपार्थनायविबमात्म  
भेयसे कारितं, प्रतिष्ठितं चर्मघोषगण्डे भीजम  
प्रभसूरिशिष्यैः भीज्ञानचंद्रसूरिभिः ।

( १०० )

सं० १२१७ वैशाखवदि १ भीमघाणगण्डे  
भीमपुम्मसूरीश्वरैः प्र० जोगा सुत पिपुषत्र  
भेयोर्ध्वं का० ।

( २०१ )

सं० १४१२ वर्षे ज्येष्ठसुदि १३ चुरो भे० सुज—

( १२३ )

पालपुत्र बीजाकेन श्रीअंबिका कागिता प्र० श्री-  
माणिक्यसूरिभिः ।

( २०२ )

सं० १४३७ वर्षे वैशाखसुदि ११ सोमे श्रीश्री-  
मालज्ञा० पितृव्यमातृ कीसलदे श्रेयर्थ सुत काल-  
केन श्रीऋषभदेवविंशं कारितं प्र० पिष्पलनायक  
श्रीजयतिलकसूरिभिः ।

( २०३ )

सं० १२६१ सांतू आसल सं० धारण ।

( २०४ )

सं० १५७२ वर्षे कार्तिकसुदि २ सोमे श्रीआदि-  
नाथप्रतिमा कारिता ।

मोटामन्दिर ऋषभदेवचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २०५ )

सं० १४८० वर्षे फागुणसुदि १० बुधे श्रीकोरंटक-  
गच्छे श्रीनन्दाचार्यसंताने उपकेशज्ञातीय श्रे० हेमा  
भा० भरमी सुत मना भा० तारू पु० आल्हा भा०

---

१ जै० घा० प्र० ले० स० मा० २ लेखाक ९३१ में जय-  
तिलकसूरि को धर्मतिलक लिखा है ।



( १९१ )

( १९२ )

सं० १५१५ वर्षे वैशाखसुदि ९ शुरौ प्राग्बाद  
ज्ञातीय अष्टिवागा[ केम ] भा० पोमी पु० वेला भा०  
छाबी पुत्र विरुआयुते-नात्ममेयसे श्रीचंद्रमर्बिर्ब  
का०, प्र० श्रीसिद्धांतीगण्डे म० श्रीसोमचंद्रसुरिभिः॥

( १९३ )

सं० १५१८ वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे श्रीभीमाख  
ज्ञातीय अ० घीरा[किम] भा० माछी सुत आसु, मनु,  
पनु, देसु, पांनु, इंगर, अर्धु[पुतेन] आत्ममेयसे श्री  
चंद्रमस्वामीर्बिर्ब कारापित वैद्यगण्डे म० श्रीरत्न  
देवसुरिपदे म० अमरदेवसुरिप्रतिष्ठित गोत्र ....  
पावास्तव्यः ।

( १९४ )

सं० १५२५ वर्षे माघव० ६ दिने चांपानेरवासि  
गुर्जरज्ञा० म० नरसिंग भा० आसुदेव्या सुत म०  
जिनकाम सुत पद्मकिरण श्रीचण्ड पहिराजादि  
कुटुंबयुतपा मित्रमेयसे श्रीनमिमाधर्मिप का०  
प्रतिष्ठित तपाभीलक्ष्मीसागरसुरिभिः ।

( १९५ )

सं० १५३३ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुके श्रीभीमाख

( १२७ )

ज्ञा० श्रे० कर्मसी भा० लाहृ० सुत श्रे० भरमाकेन  
भा० देसलदे सहितेन पितृमातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थं  
श्रीसुविधिनाथविं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे भ० श्री-  
गुणदेवसूरिभिः धिरापद्रनगरे ।

( २१६ )

सं० १२४४ फागुणसुदि ३ बुधे आम्रयशसुत  
आमूकेन मातुः राजिमतीश्रेयोर्थं विं कारितं श्री-  
मतिप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः ।

( २१७ )

सं० १५४५ वर्षे फा०व० २ भोमे श्रीमालजातीय  
मं० भीमा भा० नागिनी सुत कान्हा भा० पूनली-  
देव्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथविं कारितं  
पूर्णिमापक्षे श्रीसाधुसुंदरसूरिपट्टे श्री श्री श्रीदेवसुंद-  
रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना गांफवास्नव्यः ।

( २१८ )

सं० १४८१ पौषव० ९ शुके श्रीश्रीमालजातीय  
व्य० विरुआ भा० भरमादे सु० बृहथाकेन मातृ-  
पितृश्रेयसे श्रीसंभवविं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे  
श्रीपद्मानंदसूरिभिः ।

( १९९ )

श्रातीय व्य० पर्वत भा० राजलये पुत्र सहाद्र मेहा  
महीपाभिः पितृमातृभेयोर्ध्वं श्रीकुण्डनाथविब कारितं,  
प्र० नागेंद्रगच्छे श्रीपद्मानन्दसूरिपदे श्रीविनयप्रभ  
सूरिभिः ।

( १९८ )

स० १४८९ वर्षे वैशाखसुदि १ सोमे श्रीमीमास  
श्रातीय स० साखा भा० भरमादे सुत सोळाकेन  
प्रातृबहुभासुत साजमपुण्यार्ध श्रीशान्तिनाथविबं  
का०, प्र० पिप्पल० श्रीसोमचंद्रसूरिभिः ।

( १९७ )

स० १३०९ वर्षे काष्ठसुदि १३ बुधे सोराण  
गोष्ठी सा० हरदेवेन पुण्यार्ध श्रीपार्श्वनाथविबमात्म  
भेयसे कारितं, प्रतिष्ठितं चर्मधोपगच्छे श्रीभर  
प्रभसूरिशिष्यैः श्रीज्ञानचंद्रसूरिभिः ।

( १९६ )

स० १२१७ वैशाखसुदि १ श्रीब्रह्माणगच्छे  
श्रीप्रद्युम्नसूरीश्वरेः प्र० जोगा सुत पिप्पल-  
भेयोर्ध्वं का० ।

( १९५ )

सं० १४१२ वर्षे ज्येष्ठसुदि १३ श्रुते मे० लूण—

✓(१२३)

पालपुत्र बीजाकेन श्रीअंधिका कारिता प्र० श्री-  
माणिक्यसूरिभिः ।

( २०२ )

सं० १४३७ वर्षे वैशाखसुदि ११ सोमे श्रीश्री-  
मालज्ञा० पितृव्यमातृ कीसलदे श्रेयोर्थ सुत काल-  
केन श्रीऋषभदेवविंशं कारितं प्र० पिष्पलनायक  
श्रीजयतिलकसूरिभिः ।

( २०३ )

सं० १२६१ सांतू आसल सं० धारण ।

( २०४ )

सं० १५७२ वर्षे कार्तिकसुदि २ सोमे श्रीआदि-  
नाथप्रतिमा कारिता ।

मोटामन्दिर ऋषभदेवचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २०५ )

सं० १४८० वर्षे फागुणसुदि १० बुधे श्रीकोरंटक-  
गच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उपकेशज्ञातीय श्रे० हेमा  
भा० भरमी सुत मना भा० तारू पु० आल्हा भा०

---

१ जै० घा० प्र० ले० स० भा० २ लेखांक ९३१ में जय-  
तिलकसूरि को धर्मतिलक लिखा है ।

( ११६ )

( ११७ )

सं० १५१५ वर्षे वैशाखसुदि २ शुरो प्राग्धाट  
शातीय भेष्टिवाणा[ केन ] भा० पोमी पु० बैछा भा०  
छाबी पुत्र पिङ्गमायुते-मात्मभेयसे श्रीचंद्रप्रभर्षिर्षं  
का०, प्र० श्रीसिद्धांतीगच्छे न० श्रीसोमचंद्रसुरिमिः॥

( ११८ )

सं० १५१८ वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे श्रीमीमाळ  
शातीय भे० श्रीरा[केन] भा० भाळी सुत आसु, मनु,  
चनु, देयु, पांडु, इंगर, अयु[युतेम] आत्मभेयसे श्री  
चंद्रप्रभस्वामीर्षिर्षं कारापित वैद्यगच्छे न० श्रीरत्न  
वेषसुरिपदे न० अमरवेषसुरिप्रतिष्ठित गोत्र ...  
पावास्तव्यः ।

( ११९ )

सं० १५२५ वर्षे माघव० ६ दिने चांपामेरवासि  
शुर्जरज्ञा० न० भरसिंग भा० आसुदेव्या सुत न०  
जिमकाम सुत पद्मकिरण श्रीवच्छ पदिराजादि  
कुटुंबयुतया निजभेयसे श्रीनमिनाथर्षिर्षं का०  
प्रतिष्ठित तपाश्रीलक्ष्मीसागरसुरिमिः ।

( १२० )

सं० १५२२ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुके श्रीमीमाळ-

( १२७ )

ज्ञा० श्रे० कर्मसी भा० लाहू० सुत श्रे० भरमाकेन  
भा० देसलदे सहितेन पितृमातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थं  
श्रीसुविधिनाथर्विवं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे भ० श्री-  
गुणदेवसूरिभिः धिरापद्रनगरे ।

( २१६ )

सं० १२४४ फागुणसुदि ३ बुधे आम्रयशसुत  
आमूकेन मातुः राजिमतीश्रेयोर्थं विवं कारितं श्री-  
मतिप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः ।

( २१७ )

सं० १५४५ वर्षे फा०व० २ भोमे श्रीमालज्ञातीय  
सं० भीमा भा० नागिनी सुत कान्हा भा० पूतली-  
देव्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथर्विवं कारितं  
पूर्णमापक्षे श्रीसाधुसुंदरसूरिपट्टे श्री श्री श्रीदेवसुंद-  
रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना गांफवास्तव्यः ।

( २१८ )

सं० १४८१ पौषव० ९ शुके श्रीश्रीमालज्ञातीय  
व्य० चिरुआ भा० भरमादे सु० बुहथाकेन मातृ-  
पितृश्रेयसे श्रीसंभवर्विवं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे  
श्रीपद्मानंदसूरिभिः ।

( १११ )

( ११२ )

सं० १५१५ चर्चे वैशाखसुदि २ गुरौ प्रागपाद  
झातीय भेष्टिवागा[ केन ] भा० पोमी पु० वेला भा०  
लाभी पुत्र विरुमायुत-नात्मभेयसे श्रीचंद्रप्रभविषं  
का०, म० श्रीसिद्धांतीगच्छे म० श्रीसोमचंद्रसूरिभिः॥

( ११३ )

सं० १५१८ चर्चे वैशाखसुदि ५ शुभे श्रीश्रीमास  
झातीय भे० धीरा[केन] भा० भाषी सुत आसु, मनु,  
घनु, वेधु, पांशु, ईंगर, अशु[पुतेन] आत्मभेयसे श्री  
चंद्रप्रभस्वामीविष कारापित वैद्यगच्छे म० श्रीरत्न  
देवसूरिपदे म० अमरदेवसूरिप्रतिष्ठित गोम .....  
पावास्तव्यः ।

( ११४ )

सं० १५२५ चर्चे माघब० ६ दिने चांपामेरवासि  
गुर्जरका० म० नरसिंग भा० आसूदेव्या सुत म०  
जिमकाम सुत पद्मकिरण श्रीबच्छ पहिराजादि  
कुटुम्बपुतया मिजभेयसे श्रीममिनाथविषं का०  
प्रतिष्ठित तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

( ११५ )

सं० १५३३ चर्चे वैशाखसुदि ६ शुके श्रीश्रीमास-

( १२७ )

ज्ञा० श्रे० कर्मसी भा० लाह० सुत श्रे० भरमाकेन  
भा० देसलदे सहितेन पितृमातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थं  
श्रीसुविधिनाथर्विवं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे भ० श्री-  
गुणदेवसूरिभिः धिरापद्रनगरे ।

( २१६ )

सं० १२४४ फागुणसुदि ३ बुधे आम्रयशसुत  
आमूकेन मातुः राजिमतीश्रेयोर्थं विवं कारितं श्री-  
मतिप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः ।

( २१७ )

सं० १५४५ चर्पे फा०व० २ भोमे श्रीमालज्ञातीय  
मं० भीमा भा० नागिनी सुत कान्हा भा० पूतली-  
देव्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथर्विवं कारितं  
पूर्णिमापक्षे श्रीसाधुसुंदरसूरिपदे श्री श्री श्रीदेवसुंद-  
रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना गांफवास्तव्यः ।

( २१८ )

सं० १४८१ पौषव० ९ शुके श्रीश्रीमालज्ञातीय  
व्य० विरुआ भा० भरमादे सु० बुहथाकेन मातृ-  
पितृश्रेयसे श्रीसंभवर्विवं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे  
श्रीपद्मानंदसूरिभिः ।



( १९८ )

( १९९ )

सं० १५०३ चर्वे ज्येष्ठ सुदि ९ बुधे श्री श्री  
मालझातीय ज्य० मेहण भा० मालहणदे पु० मांड  
णेन पुत्र पीरा सहितेनात्मभेयोर्ध श्रीसुमतिमाध  
र्विक का०, प्र० बृहद्वृगच्छे सत्यपुरीय श्रीपार्श्वचंद्र  
सूरिभिः श्रीः ।

( १९० )

सं० १५१३ चर्वे माघ सुदि ३ शुके श्रीठपकेश  
झातीय परब्रह्मगोत्रे ज्य० सिखा पुत्र देवाकेन भा०  
देवसहितेन मातृससारदे पुण्यार्थ श्रीपद्मप्रभर्षिक  
कारित श्रीबृहद्वृगच्छे श्रीसर्वदेवसूरिभिः प्रतिष्ठितं  
श्रीरस्तु ।

( १९१ )

सं० १५१० चर्वे माघ सुदि १० बुधे श्रीश्री  
मालझातीय पितृ भामद मातृ श्रीलणदेवि भेयोर्ध  
सुत सरवण काळा समघर पत्नीः श्रीचंद्रप्रभस्वामि  
र्विक कारित पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरीणास्तुप  
देवोऽन प्रतिष्ठितं विधिना बह्णाग्रामे ।

( १९२ )

सं० १५१५ ज्येष्ठ चदि ९ वा० शुभिमहीमेरु  
श्रीपार्श्वमाधर्विक कारितं [ प्रतिष्ठितं ]

( १२९ )

( २२३ )

सं० १७८५ मार्गशिर सुदि ५ श्रीश्रीमालजा-  
तीय चोरा जसराजेन पुन्यार्थ श्रीधर्मनाथस्य विं  
कारापितं । प्रतिष्ठितं कडुआमतीगच्छे साहाजी  
श्रीलाधा थोमणजी ।

( २२४ )

सं० १४११ ज्येष्ठ च० ९ शनौ श्रीमालजातीय  
महं सायाकेन स्वगोत्रजा वैरुढ्यामूर्तिः का०, ब्रह्मा-  
णगच्छे श्रीलब्धिसागरसूरिभिः ।

( २२५ )

सं० १६१२ वर्षे पौषवदि १ गुरौ राजाधिराज  
श्रीअश्वसेन माता श्रीवामादेवी तत्पुत्र श्रीश्रीपार्थना-  
थस्य विं श्रीधारापद्रवास्तव्य लघुशाखायां श्रीमा-  
लजातीय महं. तोला महं. भोला कर्मक्षयार्थ कारितं ।

( २२६ )

श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे श्रीसागरचंद्रसूरिपदे श्रीसो-  
मचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० ( धातुचतुर्मुखः )

( २२७ )

सं० ११५९ सिवा का० पार्श्वनाथविं प्र० श्री-  
जयसेनसूरिभिः ।

( १२० )

देशाईसेरीविमलनाथचैत्ये धातुमूर्त्तय —

( २२८ )

सं० १५०६ वर्षे वैशाखसुदि ८ रवौ श्रीश्रीमा  
लक्ष्मीपद्मव्य० मूर्त्तय सुत वरदा मा० वाङ्मण-  
देव्या आत्मभेदसे श्रीचन्द्रमस्वामिचतुर्विंशतिपङ्क-  
विंशं का०, प्र० पिप्पलगच्छे त्रिमयीया श्रीधर्मशे-  
खरसुरिनिः पारापद्मवास्तव्यः ।

( २२९ )

सं० १५१२ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ रवौ श्रीपारापद्म  
गच्छे श्रीमालक्ष्मीपद्म मह० गोगन मा० नृन्नी सुत  
रसाञ्जण मा० सुहृददे सायर मा० नाईदेव्या स्वपि-  
त्तमातृ आत्मभेदोर्ध्व श्रीवशिम्पाचतुर्विंशतिपङ्क-  
का०, प्र० श्रीविजयसिंहसुरिनिर्बन्धसीवास्तव्यः ।

( २३० )

स० १४८५ वर्षे माघसुदि १ शनौ श्रीश्रीमा  
लक्ष्मी व्य० सुहृदसी मा० साजणदे अपरा मा०  
सिरिया सु० लालाकेव स्वपिच्छोस्तया छा० श्रीदा-  
भेदसे श्रीशान्तिमाचतुर्विंशतिपङ्कः का० प्र०  
पिप्पलगच्छे त्रिमयीया श्रीधर्मशेखरसुरिनिः ।

( १३१ )

( २३१ )

सं० १५८४ वर्षे माघवदि ११ रवौ श्रीराजावि-  
राज श्रीसुमित्रराजा मातापद्मावती नन्मुग्र श्री श्री  
श्री श्री श्रीमुनिव्रतस्वामिर्विवं कारितं सं० कदम्ब  
सुत वीहड सुत राजाराम कर्मक्षयार्थं त्रेयसे श्रीः ।

( २३२ )

सं० १६११ वर्षे वैशाखसुदि १० बुधे श्रीशशि-  
नाथस्य विवं सेवक धूडाहंसराजेन कारितं कर्मक्ष-  
यार्थं श्रीधिराद्रवास्तव्य श्रीश्रीमालीष वृद्धशास्त्रायां ।

( २३३ )

सं० १५६८ वर्षे माघसुदि ५ शुके श्रीब्रह्माण-  
गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० जेसा भा० सलग्न सुत  
वासाकेन पितृमातृश्रेयोर्ममात्मश्रेयसे श्रीचंद्रप्रम-  
स्वामिर्विवं कारितं प्र० मुनिचंद्रसूरिभिर्विद्वान्ब्रह्माणां ।

( २३४ )

सं० १५६९ ज्येष्ठसुदि ५ सोमे श्रीपार्श्वनाथविं  
सेवककालेन कारितं ।

( २३५ )

सं० १५१८ वर्षे फागुणसुदि ९ सोमे उपके

✓ ( १३२ )

ज्ञातीय सा० मया भा० नामलदे सुत देवा भा०  
माउदेव्या आत्मभेयोर्थ श्रीसमयमाथपंचतीर्थी का  
रापिता भावहारगण्डे प्रतिष्ठित न श्रीभाषदेव  
सुरिभिः ।

( १३६ )

स० १५३२ वर्षे ज्येष्ठवदि ३ रथौ पट्टलसामत  
भा० कमी सुत बाछाकेन भा० वीपीदे रत्नादे प्रा०  
हीरु सुत ठाकुर प्रमुख कुटुम्बपुतेन श्रीयिमलनाथ  
विष कारित प्रतिष्ठित तपागण्डनायक श्री श्री  
श्रीलक्ष्मीसागरसुरिभिः ।

( १३७ )

स० १४८८ वर्षे कार्तिक सु० ३ पुष्ये अचलगण्डे  
श्रीजयकीर्तिसुरेरुपदेशेन नागरज्ञातीय परी० बाबा  
[ केन ] भा० आल्लणदे सुत हापाभेयसे भवतु  
श्रीजनिमयनविष कारापित थ० श्रीसुरिभिः ।

( १३८ )

सं० १४९० कार्तिकवदि २ रथौ श्रीश्रीमालज्ञा  
तीय ष्य बासरे भा० रायलदे सुत पमराजेन  
तेजपालप्रातृभेयोर्थ श्रीश्रीतलमाथविष कारित प्रति  
ष्ठित पिप्पलगण्डे त्रिमयीया श्रीधर्मशेखरसुरिभिः  
धिरपत्रे ।

( १३३ )

( २३९ )

सं० १५२० वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे श्रीश्रीवंशे  
ठ० कान्हा सुत सारंग भा० हरखू पुत्र महीराज  
सुश्रावकेण भा० कुंअरि भ्राता सिवा सिंहा चउथा  
पु० जेठा सहितेन पितृमातृश्रेयोर्थ अंचलगच्छे श्री-  
जयकेशरिसूरीणामुपदेशेन श्रीवासुपूज्यविंव कारितं  
प्रतिष्ठितं संवेन ।

( २४० )

सं० १५२५ वर्षे ज्येष्ठसुदि५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा०  
व्य० सलखा भा० प्रीमी सुत व्य० सिंहाकेन भा०  
लीलू सुत महीराज भोजादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थ  
श्रीकुंयुनाथविंव कारितं प्रतिष्ठितं श्रीब्रह्माणगच्छे  
श्रीवीरसूरिभिर्वहरवाडावास्तव्यः ।

( २४१ )

सं० १५८१ वर्षे माघवदि १० शुके श्रीश्रीमा-  
लज्ञा० वृद्धशाखायां सीनारवास्तव्य श्रे० लाला भा०  
लीलादे सुत वत्सा भा० वीमलदेव्या सुत धना हंसा  
कुटुंबयुतेन श्रीनिगमप्रभावक श्रीआनंदसूरिभिः  
श्रीगांतिनाथविंव प्रतिष्ठितं ।

( २४२ )

सं० १५२३ वर्षे वैशाखसुदि १३ प्रागवाटज्ञातीय

( ११४ )

व्य० भा० मेहा० सांपु सुत महिमाकेन भा० मरषु  
सुत लटकण घ्रातु नरवधावि कुटुबयुसेन स्वमेयोर्य  
भीवासुपूर्यर्षिच कारित प्रतिष्ठित तपागच्छे श्री-  
लक्ष्मीसागरसूरिभिर्मूर्तिगपुरवास्तव्याः ।

( २४३ )

सं० १५ ६ माघसुदि ५ रवौ श्रीप्रमाणगच्छे  
श्रीश्रीमालज्ञा व्य० पेया सुत वेसल भा० महि  
गल्लेव्या आत्मभेयसे जीवितस्वामि-श्रीसुमति  
नाथर्षिच का०, प्र० श्रीपञ्चनसूरिभिः ।

( २४४ )

स० १४९३ श्वेत् का० सु० १० शुके श्रीश्रीमा  
लज्ञा मे० आलङ्कणसी भा० लादी तपोः पुत्रा मे०  
मूमवेन मातृपितृभयोर्य श्रीशीतलनाथर्षिच का०,  
प्रति० श्रीसूरिभिः ।

( २४५ )

सं० १४९९ ज्येष्ठसुदि ५ शुके श्रीश्रीमालज्ञा  
तीर्थ पितृ लाञ्छण मातृलाञ्छणदे पितृव्य सिंहक  
भेयसे पुत्र पीपाकेन श्रीविमलनाथर्षिच का , प्रति  
ष्ठित पिप्पलगच्छे श्रीमुनिप्रभसूरिभिः ।

( १३५ )

( २४६ )

सं० १५६४ वर्षे वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमालजातीय व्य० विरुआ भा० सिंगारदे सुत वीरम भा० हीमादे पुत्र वेलाकेन पितृमातृश्रेयोर्थ श्रीवासुपूज्यपंचतीर्थी कारापिता श्रीपूर्णिमापक्षीय श्रीरत्नशेखरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठिता ।

( २४७ )

सं १५८१ वर्षे माघसुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालजातीय महं० रत्नासुत . भा० पातमदेव्या कुटुंबीश्रेयसे श्रीमुनेसुव्रतस्वामिपंचतीर्थीर्विवं कारापितं, आगमगच्छे श्रीसोमरत्नसूरिगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितं आदिआणवास्तव्यः ।

( २४८ )

सं० १५०७ वर्षे वैशाखसुदि ११ सोमे श्रीश्रीमालजातीय व्य० जयता भा० चामूणादे सुत आल्हणकेन पितृमातृनिमित्तं स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यर्विवं का०, प्र० पिष्पलगच्छे त्रिभवीया भ० श्रीचंद्रप्रभसूरिभिः ।

( २४९ )

सं० १३९२ वैशाखव० ७ शुके श्रे० वयरसिंह



( १३६ )

भा० पिञ्जयावे....पिञ्जोः अयोधं श्रीपार्श्वप्र० का०,  
प्र० श्रीवेद्येन्द्रसूरिपदे श्रीपिञ्जयचन्द्रसूरिभिः श्रीमाल  
ज्ञातीयः ।

( २५० )

अ० १६८१ व० शु० नानजीत्केन श्रीशान्तिना  
नाथर्विष कारित ।

( २५१ )

स १६२४ काशुणसुदि ४ औमदिने श्रीसुमति  
नाथर्विष का० प्रसि० श्रीसूरिभिः ।

सुनारसेरीपार्श्वनाथचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २५२ )

सं० १५०८ चर्षे वैशाखवदि ४ सोमे श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय से० मयणा[केन] भा० दहीकु सुत मे०  
लाला हेमा वृषा कुटुम्बयुतेन पितृमातृभ्यसे श्री  
शान्तिनाथर्विष कारित मिद्वन्तीय श्रीसोमचन्द्र  
सूरिभिः प्रतिष्ठितं शुभ कल्याणमस्तु ।

( २५३ )

सं० १६१७ चर्षे पौषवदि १ गुरौ राजाधिराज  
श्रीअश्वसेन राजीवामादेवी तयोः पुत्र श्री श्री श्री

( १३७ )

पार्श्वनाथस्य विंशं कारितं श्रीधिराद्रयात्मन्य श्रीश्री-  
मालजातीय श्रे० कुरा धीगा पुत्राम्पां ।

आमलीसेरी सुपार्श्वचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २५४ )

सं० १५०८ ज्येष्ठ सु० ७ बुधे श्रीश्रीमालवंशे  
सांडलगोत्रे सा० हापा भा० वीरा पु० सा० पोषट  
सुश्रावकेण भा० मालहणदे दोहित्रौ लावा मन्वा  
सहितेन श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणामुप-  
देशेन पुत्रभलाश्रेयसे श्रीवासुपूज्यविंशं कारितं  
प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ।

( २५५ )

सं० १४९९ वर्षे वैशाखवदि ४ गुरौ उपकेशजा०  
पितृमाला मातृमोखलदे श्रेयोर्थं सुत कीकाकेन  
श्रीनमिनाथविंशं का०, प्रति० भावडारगच्छे भ०  
वीरसूरिभिः पवित्रे खाटणगोत्रे शुभं भूयात् ।

( २५६ )

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० सोमे प्रा० शा०  
व्य० मोकलेन भा० दूयड़ी सुत हीरा व्य० सहज  
सुत ऊतलसहितेनात्मश्रेयसे श्रीश्रेयांसविंशं का०,  
प्र० श्रीजीरापल्लीगच्छे श्रीउदयचंद्रसूरिभिः ।

( १३८ )

( २५७ )

स० १६८३ वर्षे वैशाख्यमित ७ गुरौ राजधन्य  
पुरवासितः श्रीश्रीमालज्ञातीय मा० हरवासेम भा०  
हीरादे युतेम श्रीशीतलनाथपिय का० प्रतिष्ठितं ।

( २५८ )

स० १६९७ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ पुष्ये मूलसंघ सा०  
हीरा भा० हीराव ।

( २५९ )

स० १७०० उहलसूतया दोलिकया चतुर्विंशति  
पट्टकोप कारितः शुभ भवतु ।

राशियासेरी अभिनदनचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २६० )

स० १५५३ वर्षे आपावसुदि १ शुक्ल मागबाद  
ज्ञा० वृद्धशाम्बायां सं० सेंगा मा० हप् सुत सं०  
अमा[केम] भा० सीलाई पु० श्रीमा सिंधु लब्धमण  
अलबा चमादियुतेन स्वभेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामि  
विंश का०, पूर्णिमापक्षे श्रीमपल्लीय भ० श्रीचारित्र  
चंद्रसुरिपदे भ० मुनिचंद्रसूरीणामुपवेशेन प्रतिष्ठितं  
श्रीपत्तनवास्तव्यः ।

( १३९ )

( २६१ )

सं० १५१९ माघसुदि ५ सोमे श्रीश्रीमालजातीय  
गांधिक हापा भार्या हमीरदे सुत जागाकेन भा०  
जमनादे पुत्र वेला ऊगम मादा खेदा एतैः सहितेन  
पितृमातृभ्रातृमांडणश्रेयोर्थ श्रीधर्मनाथचतुर्विंशति-  
पट्टं कारितं पूर्णिमापक्षे प्रधानभट्टारक श्रीजयसिंह-  
सूरिपट्टे श्रीजयप्रभसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं  
धिराद्रवास्तव्यः श्रीः ।

मोदीसेरीं विमलनाथचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २६२ )

सं० १५१५ वर्षे फागुणसुदि ४ शनौ श्रीश्री-  
मालजा० पितृ रतना मातृ रतनादे सुत सा० गागच  
भा० ललितादे सु० गोवल भा० रूपिणीश्रेयोर्थ  
भ्रातृसं० झूंगर भा० झांझु सुत गोपासहितेन  
भोजविजयाभ्यां श्रीनमिनाथमुख्यश्रुतुर्विंशतिपट्टः  
कारितः पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरिपट्टे श्रीसाधु-  
सुंदरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीसविनगरे ।

( २६३ )

सं० १५१९ वर्षे मार्गसुदि ५ शुके श्रीश्रीमाल-  
जातीय व्य० हीमाला भा० हीमादे सुत वनाकेन

( १४० )

भार्या पांशू सुत पर्वत नरवर नाइक माह्वा जागा  
छाया सहितेम स्वभेयसे अंचलगच्छेशश्रीजयकेस  
रित्तुरीणामुप० श्रीचद्रप्रभस्वामिर्यिप का० प्रति  
ष्ठित च ।

( २६४ )

स० १५२० पौषवदि ५ शुक्ले श्रीमूखसंघे सर  
स्वतीगच्छे भ० सकलकीर्ति तत्पदे भ० विमलेंद्र  
कीर्तिमिः श्रीभाविनाथर्यिप प्र० जो० काहा भा०  
झरू सु माणिक भा० बारू सु० हरदासेन का० ।

( २६५ )

सं १६६१ वर्षे काशुणवदि २ शुक्ले श्रीश्रीरुद्र  
भामति निममवाई धरावधास्तम्भ मुहतादे श्रीसुम-  
तिमाथर्यिप कारितं ।

( २६६ )

स० १६६२ वर्षे काशुणवदि २ शुक्ले उदीवतगृही  
भा० हरणादे सुत बापाकेन श्रीअभिनवमथिप  
कारितं ।

( २६७ )

स० १५८ वैशाखवदि ५ श्रीप्राग्वाट साह वृषा  
[ केम ] भार्या जाणी पुत्र जयपर्वतसहितेम स्वभेयमे

( १४१ )

श्रीश्रेयांसनाथविंशं का०, प्र० पूर्णिमापक्षे भद्वारक  
श्रीजिनहर्षसूरीणामुपदेशेन वेलांगरी वास्तव्यः श्रीः  
सुतारसेरी शांतिनाथचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

( २६८ )

सं० १४८३ वर्षे ज्येष्ठसुदि ९ भौमे श्रीश्रीमा-  
लज्ञातीय व्य० महीपाल भा० मीलनदे सुत हरि-  
भ्रम पौत्र चांपा व्य० पाल्हा सिंधु नरवदकेन पितृ-  
मातृसुतश्रेयोर्थ श्रीआदिनाथप्रमुखचतुर्विंशतिविंशं  
कारापितं प्र० धारापद्मगच्छे श्रीशांतिसूरिभिः ।

( २६९ )

सं० १५१८ वर्षे फागुणवदि १ सोमे श्रीउकेश-  
ज्ञातीय नाहरगोत्रे व्य० कुशलेन भा० कील्हणदे पुत्र  
तिहुणा महणा पोमा डामर सहितेन पितृपुण्यार्थ  
आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथचतुर्विंशतिपदं कारा-  
पितं धर्मघोषगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीपद्मानंदसूरिभिः ।

( २७० )

सं० १५८७ वर्षे वैशाखवदि ७ सोमे श्रीश्री-  
मालज्ञातीय श्रेष्ठि साइआ सुत श्रे० सवा[ केन ]  
भा० वानू पुत्र लटकण भा० लाखणदे समस्तकुटुंब-

( १७९ )

युतेन श्रीशांतिनाथर्विबं कारापित प्रतिष्ठित श्री  
सूरिमिः काकरवास्तव्यः ।

( २०१ )

सं० १६१७ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ सोमे उत्सवास्त-  
ज्ञातीय व्य० रायमल भार्या श्रीबाई सुत हीरा मा०  
जीबाई सु० सिंघजीस्केन श्रीशांतिनाथर्विबं कारा-  
पित तपागण्डे श्रीविजयदानसूरिमिः प्रतिष्ठित ।

( २७९ )

सं० १५१९ वर्षे मार्गसुदि ६ शनौ श्रीप्राग्वाढ  
बशे लघुसताने मं० भरसी भा० माई पु० सं०  
गोपासुभाषकेण मा० सुखेसिरि पुत्र देवदास सिब  
दामसहितेन स्वभेयसे लखलगच्छाधिराज श्रीजय  
केशरिसूरीणामुपवेशेन श्रीसंभवनाथर्विबं कारित  
प्रतिष्ठित श्रीमन्नेन रत्नपुरवास्तव्यः ।

( २७३ )

सं० १७९४ वर्षे माघसुदि ५ सोमे श्रीश्रीमास्त-  
ज्ञातीय व्य० साहबण भार्या सोनखदे पुत्र मध्याम  
सिंहेन पितृव्य छाडाभेयसे पूर्णिमापक्षीय श्रीविज  
यप्रभसूरीणामुपवेशेन श्रीकुपुनाथर्विबं कारित  
प्रतिष्ठित च श्रीमन्नेन ।

# श्रीजीरावलीतीर्थचैत्यदेवकुलिका-

देवकुलिकासंख्या २

( २७४ )

स्वस्तिश्रीसंवत् १४८१ वर्षे वैशाखसुदि ३ बृह-  
त्तपापक्षे भद्रा० श्रीरत्नाकरसूरीणामनुक्रमेण  
श्रीअभयदेवसूरीणां पट्टे श्रीजयतिलकसूरीश्वरपट्टा-  
वतंस भद्रा० श्रीरत्नसिंहसूरीणामुपदेशेन श्रीवीस-  
लनगरवास्तव्य प्राग्वाटान्वयमंडन श्रे० खेतसिंह  
नंदन श्रे० देहल ( देवल ) सिंह पुत्र श्रे० खोन्वा  
तस्य भार्या सं० पिंगलदेव्यास्तयोः सुताः सं० सादा  
सं० हादा सं० मादा सं० लाग्वा सं० सिधाभिधैरेतैः  
कारिता ।

देवकुलिकासंख्या ३

( २७५ )

स्वस्तिश्रीसंवत् १४८१ वैशाखसुदि ३ बृहत्त-  
पापक्षे भद्रा० श्रीरत्नाकरसूरीणामनुक्रमेण भद्रा०  
श्रीजयतिलकसूरीपट्टावतंस गच्छनायक श्रीरत्नसिं-  
हसूरीणामुपदेशेन वीसलनगरवास्तव्य प्राग्वाटा-  
न्वयमंडन श्रे० खेतसिंह नंदन श्रे० देहलसिंह पुत्र



( १४४ )

म्वोम्वा तस्य भा० पिंगलदेव्यास्तयोः सुताः स सादा  
सं० मादा स० लासा स० सिधामिधैरेतैः स्वभेपसे  
ऽथ तीर्थे श्रीदेवकुलिका चयं कारितं शुभं भवतु  
शुभमदपमुपरिभीपाश्वेनाथ प्रणमति ।

देवकुलिकासख्या ४

( २७६ )

स्वस्तिमी सं १४८१ वर्षे वैशाखसुदि ३ दिने  
बृहत्तपागच्छे महा० श्रीजयतिष्ठकसूरिपद्मावतस  
गच्छनायक महा श्रीरत्नसिंहसूरीणामुपवेशेन बीस  
लनगरबास्तव्य प्राग्वाटशातीय भे० स्नेतसिंहनदन  
भे० म्वोम्वा तस्य भार्या स० पिंगलदेव्यास्तयोः सुताः  
स० सादा स० हादा स० मादा स० लासा स०  
सिधामिधैरेतैः स्वभेपसेऽथ तीर्थे श्रीदेवकुलिका  
कारिता शुभं ।

देवकुलिकासख्या ६

( २७७ )

संवत् १४८० वर्षे पौषसुदि २ रविविने श्रीर्ष  
चलगच्छे श्रीमेस्तुगसूरिपद्मवरगच्छनायक श्रीजय  
कीर्तिसूरीणामुपवेशेन श्रीपुंगलबासित प्राग्वाटशा  
तीय शा भाणा पुत्र शा० जामद भार्या सयो

( १४५ )

देवकुलिकासंख्या ७

( २७८ )

सं० १४८७ वर्षे पौषसुदि २ रविदिने श्रीतपा-  
गच्छे श्रीदेवसूरिपट्टोदर श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनि-  
सुंदरसूरि श्रीजयसुंदरसूरि श्रीजिनचंद्रसूरेरुपदेशेन  
श्रीपत्तनवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय सा० लाला सुत  
सा० नाथू सा० मेघा सुत रूपचंद भीमाखीमाभिः  
स्वश्रेयोर्थं कारापिता ।

देवकुलिकासंख्या ८

( २७९ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवदि ७ कृष्णपक्षे गुरौ  
दिने तपागच्छनायक श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचं-  
द्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरेरुपदेशेन कलवर्ग्यावा० उस्-  
वालज्ञातीय सा० घणसीसंताने सा० जयता भार्या  
तिलकू सुत सं० मोखसी श्रीजीराउलाभुवने देवकु-  
लिका कारिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् श्रीः॥

देवकुलिकासंख्या ९

( २८० )

सं० १४८३ भाद्रवावदि ७ गुरौ कृष्णपक्षे श्री-

तपागण्ठनायक श्रीदेवसुवरसूरिपदे श्रीसोमसुवर  
 सूरि श्रीशुभिसुवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीसुबभसुवर  
 सुरेकपदेशोन कलबर्मांगरे श्रीभोसबालशातीय  
 सा० पणसीसंताने सा० जयता भार्या तिलक सुत  
 सं० समरसी सं० मोक्षसी श्रीजीराठलासुबने देवकु  
 लिका कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्वनाथप्रसादात्।  
 देवकुलिकासंख्या १०

( १८१ )

सं० १४८१ वर्षे माद्रवदि ७ कृष्णपक्षे शुक्लदिने  
 श्रीतपागण्ठे नायक श्रीदेवसुवरसूरिपदे श्रीसोम  
 सुंदरसूरि श्रीशुभिसुवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीसुब-  
 भसुवरसुरेकपदेशोन श्रीकलबर्मांगरे श्रीठसबाल  
 शातीय सा० पणसीसंताने सा० जयता भा० तिलक  
 सुत सं० समरसी सं० मोक्षसी श्रीजीराठलासुबने  
 देवकुलिका कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्वनाथ  
 प्रसादात्।

देवकुलिकासंख्या ११

( १८२ )

सं० १४८१ वर्षे माद्रपक्षकृष्णपक्षे ७ शुक्ले तपा  
 गण्ठनायक श्रीदेवसुवरसूरिपदे श्रीसोमसुंदरसूरि

श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरे-  
रूपदेशेन श्रीकलवर्गानगरे कोठारी छाहड़सामंत-  
संताने को० नरपति भा० देमाई पुत्र सं० तुकदे  
पासंदे पूनसी मूला ( एतैः ) श्रीओसवालज्ञातीय  
कटारिया श्रीराउलामुवने श्रीदेवकुलिका कारापिना  
शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् ।

कटारियागोत्रवरं मदीयं, ताउंपिता मे जननी दंमाई ।

श्रीसोमसुंदरगुरुगुरुवंधदेवा, श्रीछीलैजमेडतामात्रशाले (?) ॥१॥

देवकुलिकासंख्या १२

( २८३ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपद कृष्णपक्षे ७ गुरौ श्री-  
तपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदर-  
सूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदर-  
सूरेरूपदेशेन श्रीकलवर्गानगरे श्रीउसवालज्ञातीय  
चरहडियागोत्रे क्षांझासंताने सा० उदयन बा० छीतू  
सुत सं० आसपालेन जीराउलामुवने देवकुलिका  
कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् ।

देवकुलिकासंख्या १३

( २८४ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवकृष्णपक्षे ७ गुरौ श्री-

१ यह शंकास्पद है । २ यह वाक्यविन्यास अशुद्ध है ।

तपागच्छनायक श्रीवेबसुवरसूरिपदे श्रीसोमसुंवर-  
सूरि श्रीसुनिसुंवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीसुबन  
सुंवरसूरेकपवेशोम श्रीकलवधामगरे माहरगोत्रे उस  
बाळझातीय सा० बीगासताने सा० उवयसी भा०  
बामछवे सुत सा० पद्मसी श्रीजीराठलासुबने देव  
कुलिका कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसावेन ।  
देवकुलिकासंख्या १४

✓ ( १८५ )

स० १४८१ वर्षे भाद्रपदकृष्णपक्षे ७ गुरौ श्री  
तपागच्छनायक श्रीवेबसुवरसूरिपदे श्रीसोमसुंवर-  
सूरि श्रीसुनिसुंवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीसुबन  
सुंवरसूरेकपवेशोम कलवधामगरे उसबाळझातीय  
सा० बाळगोत्रे सा० वणसीसताने सं० माळा भा सं०  
पूनाई पुत्र जगसी म० लोळसी भा० बा० हीर सुत  
स० कमलसिंहेन स्वमाता कस्तूरीभेपोर्य श्रीपार्श्व-  
नाथप्रसादात् श्रीजीराठलासुबने देवकुलिका  
कारापिता ।

देवकुलिकासंख्या १५

( १८६ )

स० १४८१ वर्षे भाद्रपदकृष्णपक्षे ७ शुक्रदिने श्री  
तपागच्छनायक श्रीवेबसुंवरसूरिपदे श्रीसोमसुंवर

( १४९ )

सूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवन-  
सुंदरसूरैरूपदेशेन श्रीकलवर्ग्रानगरे उसवालज्ञातीय  
मल्लुसीसंताने सं० रतना भार्या बा० वीरू सुत  
सं० आमलसिंहेन स्वपुत्र सं० गुणराज सं० हंस-  
राजसहितेन श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् श्रीजीराउला-  
भुवने देवकुलिका कारापिता शुभं भवतु ।

देवकुलिकासंख्या १७

( २८७ )

सं० १४७४ वर्षे आवणमासे शुक्लपक्षे ५ जनी-  
वासरे खरतरपक्षे मं० लूणासंताने मं० दूला हापल  
संताने मं० मूला पुत्र भीमा हीरू चाल्हण..मं०  
हीराभिः ..।

देवकुलिकासंख्या १८

( २८८ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपदकृष्णपक्षे ७ गुरुदिने  
श्रीकृष्णवर्षिगच्छतपापक्षे श्रीपुण्यप्रभसूरिपट्टे गच्छ-  
नायक श्रीजयसिंहसूरैरूपदेशेन छासुकीगोत्रे चंद्र-  
पुरीय पद्मसिंह पुत्र चंद्रसिंह पुत्र भाणसिंह पुत्र  
पूनसिंह भा० पूनसिरि सा० घणसी सं० वावीथाई  
पुत्र सं० घनराजेन उएसवंशीयेन श्रीजीराउलाभुवने  
चतुष्किकाशिखरं कारापितं शुभं भवतु श्रीः ।

( १५० )

## देवकुलिकासख्या १९

( १८९ )

स० १४८३ वर्षे भाद्रपदादि ७ शुक्रदिने श्रीतपा  
 गच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपदे श्रीसोमसुंदरसूरि  
 श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीअयचंद्रसूरि श्रीसुवनसुंदरसूरे  
 रुपदेशेन कलषघ्नावास्तव्य सोमीहरगोत्रे उसवाल  
 ज्ञातीय सं ज्येष्ठमी पुष्य सं० श्रीमा स० नहणसी पुत्र  
 स० करणसी स० पासपीर भगिनी, भा० तिलक  
 प्रभृतिभिः श्रीजीराठसामुबने चतुष्टिकाशिक्षरं  
 कारापित शुभं भवतु ।

## देवकुलिकासख्या २०

( १९ )

संवत् १४८३ वर्षे भाद्रपदादि ७ शुक्रदिने श्री  
 यमघोषगच्छे श्रीमलयचंद्रसूरिपदे श्रीविजयचंद्र  
 सूरेरुपदेशेन माहरगोत्रे उसवयो सा० आल्हा पुत्र  
 आल्हा भार्या मणिबाई पुष्य सं० रत्नसिंह पुत्र  
 पासराज कलषघ्नावास्तव्येन श्रीजीराठसामुबने चतु-  
 ष्टिकाशिक्षर कारापित शुभं भवतु श्रीपार्ष्णनाथ  
 प्रसादात् ।

( १५१ )

## देवकुलिकासंख्या २१

( २९१ )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवावदि ७ गुरुदिने श्री-  
कृष्णर्षिगच्छे तपापक्षे श्रीपुण्यप्रभसूरिपदे गच्छ-  
नायक श्रीजयसिंहसूररूपदेशेन कलवर्मावास्तव्य  
गांधीगोत्रे उपकेशवंशे सा० ढाकल पुत्र सं० लोहिग  
पुत्र सा० आंबा भा० पोमाई पुत्र सा० अजेसी  
वींधव सं० आसुना श्रीजीराउलामुवने चतुष्किका-  
शिखरं कारापितं ।

## देवकुलिकासंख्या २२

( २९२अ )

सं० १४२४ वर्षे वैशाखवदि ३ गुरौ कलवर्मा-  
वास्तव्योपकेशज्ञातीय सा० धवकर्मणेन भा० कर्मा-  
देवी ग्वीमादेवी सहितेन ग्वीमदेवीश्रेयसे श्रीजीरा-  
उलीपार्श्वनाथदेवकुलिका कारापिता श्रीवृहद्गच्छेश  
श्रीदिन्नविजयसूररूपदेशेन ।

( २९२ब )

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपदवदि ७ गुरौ श्रीमल्ल-  
धारीगच्छे श्रीमतिसागरसूरिपदे श्रीविद्यासागरसूरे-  
रूपदेशेन कलवर्मावास्तव्य गांधीगोत्रे सा० दहल



पुत्र मा० पोषा पुत्र सं० संसुखा मा० सघविणिराज  
पुत्र तुकदे सं० सहदेवाभ्यां उसवालज्ञातीयाम्यां  
भीजीराठछासुवने चतुष्टिका कारापिता शुभं भवतु।  
देवकुलिकासख्या २३

( २०३ )

सं० १४८३ भाद्रपददि ७ तपागच्छनायक  
भीदेवसुवरसुरिपदे भीमोमसुवरसुरि भीममिसुवर  
सुरि भीजयचंद्रसुरि भीमवनसुवरसुरिरुरूपवेशेन  
कलवर्मानगरे भीमालज्ञातीय ठ० हूंगर मा० चंपाईदे  
पुत्र मोम्वसी रतनसीभ्यां भीजीराठछासुवने चतुष्टि-  
काशिलर कारापितं शुभं भवतु ।

देवकुलिकासख्या २८

( २९४ )

सं० १४८३ वर्षे वैशाखदि १३ गुरौ ओसबंधो  
हुगवेडशान्ते अंचलगच्छे भीजयकीर्तिसुरेरुपवेशेन  
शाह लम्बमसी सा० भीमल सा० देवल सा० सारंग  
सा सांसा भार्या बाई मेव सा० पुंजा मजाविमि।  
देवकुलिका कारापिता ।

देवकुलिकासख्या २९

( २९५ )

सं० १४८३ वैशाखदि १३ गुरौ उसबंधो

(१५३)

दुग्धेडशाखे अंचलगच्छे श्रीजयकीर्तिसूरेरुपदेशेन  
सा० लखमसी सा० भीमल सा० देवल सा० सारंग  
सुत सा० ढोसा भार्या लखमादे सा० चापा सा०  
इंगर सा० मोवा देरी करावी सही ।

(२९५ब)

सं० १४८३ प्रथमवैशाखवदि १३ गुरौ श्रीअं-  
चलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पटोद्वरणश्रीजयकीर्ति-  
सूरीश्वरगुरुरूपदेशेन सा० सारंग भा० प्रतापदे पुत्र  
ढोसी भा० लखमादे सा० चापा सा० इंगर, सारंग  
सुत भार्या भीखी भा० कौतिकदे पितृव्य पूजा  
देहरी श्रीदेवगुरुप्रसादात्कारापितं ।

देवकुलिकासंख्या ३०

(२९६)

संवत् १४८३ प्रथमवैशाखवदि १३ गुरौ अंचल-  
गच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पटोद्वरणजगच्चूडामणि  
श्रीजयकीर्तिसूरीश्वरसुगुरुरूपदेशेन पट्टणवास्तव्य  
ओसवालज्ञातीय मीठडिया सा० संग्राम सुत सा०  
सलखण सुत सा० तेजा भार्या तेजलदे तयोः पुत्राः  
सा० डीडा, सा० खीमा, सा० भूरा, सा० काला,  
सा० गांगा, सा० डीडा सुत, सा० नागराज, काला ।

सुत सा० पासा, सा० जीवराज, सा० जिम  
 वास, सा० तेजा द्वितीय भ्राता नरसिंह मा०  
 कौतिकदे तयोः पुत्रौ सा० पासदत्त सा० देवदत्ता  
 म्यां भीजीरावछापाभर्षनाथस्य चैत्ये देहरीघ्नप  
 कारापिता भीदेवगुरुप्रसादात्प्रवचमानममद्र मांग  
 लिक भूयात् ।

देवकुलिकासक्या ३१

( २९७ )

सं० १४८१ वर्षे प्रथमवैशाखवदि १३ पुरौ  
 भीमचलगच्छे भीमेरुगसूरीणां पद्मोदरणभीमप  
 कीर्तिसूरीम्बरसुगुरुपदेशेन पत्तनवास्तव्योसबाळ  
 शर्तीय मीठडिया सा० समाम सुत सा० सखलन  
 सुत सा० तेजा मा० तेजलदे तयोः पुत्राः सा० डीडा  
 सा० सीमा सा० भूरा सा० कासा सा० गांगा, सा  
 डीडा सुत सा मागराज सा० कासा सुत सा०  
 पासा सा० जीवराज सा० जिमवास सा तेजा  
 द्वितीयभ्राता सा० नरसिंह भार्या कडसिगदे तयोः  
 पुत्रौ सा० पासदत्त सा० देवदत्ताभ्यां भीजीराव  
 छापाभर्षनाथस्य चैत्ये देहरी ३ कारापिता भीदेव  
 गुरुप्रसादात्प्रवचमानममद्र मांगलिक भूयात् ।

## देवकुलिकासंख्या ३२

( २९८ )

सं० १४८३ वर्षे प्रथमवैशाखवदि १३ गुणै  
 श्रीअंचलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पट्टोद्धरणश्रीजय-  
 कीर्तिसूरीश्वरसुगुरूपदेशेन पत्तनवास्तव्योसवाल-  
 ज्ञातीय मीठडिया सा० संग्राम सुत सा० सलग्वण-  
 सुत सा० तेजा भार्या तेजलदे तयोः पुत्राः डीडा  
 सा० खीमा सा० भूरा सा० काला सा० गांगा सा०  
 डीडा सुत सा० नागराज सा० काला सुत सा०  
 पासा सा० जीवराज सा० जिणदास सा० तेजा  
 द्वितीयभ्राता सा० नरसिंह भा० कडतिगडे तयोः  
 पुत्राभ्यां सा० पासदत्त सा० देवदत्ताभ्यां श्रीजी-  
 राडलापार्श्वनाथस्य चैत्ये देहरी ३ कारापिता  
 श्रीदेवगुरुप्रसादात्प्रवर्धमानभद्रं मांगलिकं भूयात् ।  
 सा० डीडा सुत सा० नागराज भार्या नारंगीदेव्या  
 आत्मश्रेयसे देहरी कारापिता ।

## देवकुलिकासंख्या ३३

( २९९ )

संवत् १४८३ वर्षे श्रीअंचलगच्छे श्रीमेरुतुंग-  
 सूरीणां पट्टे गच्छाधीश्वरश्रीजयकीर्तिसूरीश्वरसुगुरु-

( १५९ )

पदेशेन मीठडिया सा० नरसिंहभार्या मा० रुक्मा  
रमभेपसे देहरी करापिता शुभ भवतु ।

देवकुलिकासंख्या ३४

( ३०० )

मवत् १४८१ वर्षे य वैशाखवदि १३ गुरौ श्री  
अचलगच्छे श्रीमेस्तुंगसूरीणां पदे श्रीगच्छाधीश्वर  
श्रीजयकीर्तिसूरीश्वरसुगुरुपदेशेन मीठडिया सा०  
तेजा भार्या तेजलदे तयोः पुत्र मा० डोडा सा०  
स्त्रीमा सा० मूरा मा० फासा मा० गांगा सा० डोडा  
सुत सा० नागराज सा० कासा सुत सा० पासा  
मा० जीवराज सा० जिणवास सा० स्त्रीमा भार्या  
स्त्रीमावेण्या आत्मभेपोर्य देहरी करापिता ।

देवकुलिकासंख्या ३५

( ३०१ )

सं० १४८१ वर्षे य० वैशाखवदि १३ गुरौ श्री  
अचलगच्छे श्रीमेस्तुंगसूरीणां गच्छाधीश्वर श्रीजय  
कीर्तिसूरीणां पदेशेन श्रीश्रीमालज्ञातीप श्रीस्तंभ  
तीर्थदास्तप्य परीक्षः जमरा भार्या माऊ तयोः पुत्रः  
परीक्षः गोपाल प० राठल प० डोडा मा द्विपुत्र  
पुत्र सा० पूना मा० ऊंशी प० सोमा प० राऊल

( १५७ )

सुत प० भोजा, प० सोमा सुत आशा हृषकूभ्या-  
मात्मश्रेयसे देहरी कारापिता ।

देवकुलिकासंख्या ३८ स्तंभोपरि

( ३०२ )

सं० १५३४ वैशाखवदि १० सोमे सं० रतना  
साथी न्याति श्रीमालुगोत्रीयक सं० जीवा पुत्र सं०  
मांडण, जीवन, जीवदेव, ग्वेता सहित मांडेलगद्वी  
यात्रा(र्थ) आया ।

देवकुलिकासंख्या ४१

( ३०३अ )

संवत् १४२१ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० बुधे मूलनक्षत्रे  
सिद्धिनामयोगे श्रीउपकेशज्ञातीय चीचटगोत्रे वीस-  
टान्वये सा० लखण सुत आजडात्मज शाह गोसल  
सुत सा० देसल भार्या भोली पुत्राः सा० सहज सा०  
माहण सा० समर, माहण भार्या भावलदे पुत्र सं०  
घना सा० कडूआ सा० लिंवा भागिनी वाई मुकतु  
समस्तसायैः साध्वीभावलदेवीभिरात्मश्रेयसे श्री-  
पार्श्वनाथचैत्ये देवकुलिका का० उपकेशगच्छे ककुदा-  
चार्यसंताने कक्कसूरीणां पट्टालंकारदेवगुप्तसूरीणामुप-  
देशेन शुभं भवतु ।

( १५८ )

( ३०३५ )

सं० १४८३ वर्षे वैशाखसुदि ७ तिथौ घृहस्था  
गच्छापिपति श्रीदेवसुंदरसूरिपद्मावतस श्रीसोम  
सुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीखयचंद्रसूरि श्रीमु  
बनसुंदरसूरि श्रीजिनसुंदरसूरिरूपदेशेन श्रीमास  
शांतीय सुत ठ० सारंग पुत्र सा० शुणराज तत्पुत्र  
नागराजेन स्वभार्या ओषोर्ध्वमपेक्षित्वरं कारित ।

देवकुलिकासख्या ४२

( ३०४३ )

स्वस्तिश्रीशयोभ्युदयम्—

श्रीप्रतिष्ठनूपनन्दनः, सुसीमाश्रमबो विद्या ।

पद्मप्रमखिनः पादु, रक्तोत्पलदलपुतिः ॥

सं० १४९१ वर्षे कार्तिकसुदि ५ रवौ हस्तमक्षत्र  
कोशीभारनगरवास्तव्य मोहशांतीय आगमिक गच्छ-  
भक्तसुभाषक ठ० जाल्हा, समवेश ठ० पीमा ठ०  
सणसब, जयता सुत स० अजितेन भार्या द्विषादे  
प्रभृतिकुटुम्बकलितेन भवजपाय पद्मप्रमस्वामिर्विषं  
कारित । नेहद्वभार्या अदिबदेव्या श्रीपार्श्वनाथदेव-  
कुलिका कारिता आगमिकगच्छोपदेशेन शुभं  
भूयात् ।

( १५९ )

( ३०४ ष )

सं० १४८३ वैशाखसुदि ७ भट्टारकश्रीदेवसुंदर-  
सूरिपट्टे श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजय-  
चंद्रसूरिपट्टे श्रीभुवनसुंदरसूरि श्रीजिनसुंदरसूरि-  
धर्मोपदेशेन श्रीमालज्ञातीय विजयसी सुत सा०  
जगतसिंह पुत्र सा० गुणपति रतनसिंह कालु भार्या  
गज रंगदेवेन कारिता श्रेयोर्थ ।

देवकुलिकासंख्या ४३-४४

( ३०५-३०६ )

सं० १४८३ वर्षे प्रथम वैशाखवदि ७ रवौ श्री  
तपागच्छनायकश्रीदेवसुंदरसूरितत्पट्टालंकारभट्टारक  
श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि-  
णामुपदेशेन योगिनीपुरवास्तव्य रूला सुत हंसराज  
पुत्री हंसादे अंगजरंगदेवेन कारितः शुभं भूयात् ।

देवकुलिकासंख्या ४५

( ३०७ )

सं० १४८३ वर्षे वैशाखसु० १३ तपागच्छाधि-  
राज श्रीदेवसुंदरसूरि तत्पट्टालंकार श्रीसोमसुंदर-  
सूरि श्रीजयचंद्रसूरिरूपदेशेन रतननगरीय सं० लख-  
मण सुत राघव संघवी मंत्री गोसल सुत सोम-



( १९० )

प्रभराज तस्य भार्या रगादे सुत सोमदेवेन कारितो  
रंगादेभ्याः अयोधे ।

देवकुलिकासख्या ४६

( १०८ अ )

सं० १९६३ वर्षे आपादषष्टि ८ शुरौ श्रीठपकेस  
ज्ञातीय सो० आंयड पुत्र जगसिंह तत्पुत्र ठवय भा०  
ठवयादे पुत्र मेणेन अस्य पार्श्वनाथवैत्ये देवकुलिका  
कारापिता श्रीधर्मधोपसूररूपवेशेन श्रीधनमेतकार्ये  
श्रीरस्तु ।

( १०८ ब )

सं० १४८१ वर्षे आप्रभाषष्टि ७ शुरौ श्रीतपा  
गच्छनायक श्रीवेवसुंवरसूरिपदे श्रीसोमसुंवरसूरि  
श्रीमृनिसुंवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीमृबमसुंवरसूरि  
रूपवेशेन लंभाहत वास्तव्य ठसबाछज्ञातीय सोनी  
भरिभा पुत्र सो० पदमसिंह भार्या आसहप्यदेभ्या  
श्रीजीराठसासुबने बहुष्किका शिखर कारापितं ।

देवकुलिकासख्या ४८

( १०९ )

पातु नः पार्श्वनाथोऽयं, निष्कलैः सप्तभिः कर्मैः ।  
मयानां मारकानां च, जयद्रथसि संयकाम् ॥१॥

( १६१ )

संवत् १४१३ वर्षे फा० सु० १३ स्वामिनक्षत्रे  
वृहद्गच्छीय श्रीदेवचंद्रसूरीणां पदे श्रीजिन-  
चंद्रसूरीणां तपोवनतपोधनेन तपस्वीकरपरिवृतानां  
श्रीपार्श्वनाथस्य सुवने श्रीपार्श्वनाथस्य  
देवकुलिका कारिका ।

यावद् भूमोऽस्ति यो मेरुर्यावच्चन्द्रदिवाकरः ।

आकाशे तपतो यावन्नन्दिता देवगेहिका ॥ १ ॥

शुभं भवतु सकलसंघस्य जीरापल्लीयगच्छस्यैव ॥ ३५ ॥

देवकुलिकासंख्या ४९

( ३१० )

पातु वः पार्श्वनाथोऽयं, मकलैः सप्तभिः फणैः ।

मयाना नारकानां च, जगद्रक्षति संघकान् ॥ १ ॥

सं० १४११ वर्षे चैत्रवदि ६ बुधे अनुराधा-  
नक्षत्रे वृहद्गच्छीय श्रीदेवचंद्रसूरीणां पदे श्रीजिन-  
चंद्रसूरीणां तपोवनतपोधनेन तपस्वीकरपरिवृतानां  
श्रीपार्श्वनाथस्य देवकुलिका जीरापल्लीयैः श्रीराम-  
चंद्रसूरिभिः कारिता छः ।

यावद्भूमोस्ति यो मेरुर्यावच्चंद्रदिवाकरौ ।

आकाशे तपतो यावन्नन्दतां देवगेहिका ॥ १ ॥

( १६९ )

शुभ भवतु सर्वं जयतु ।

देवकुलिकासख्या ५०

( ३११ )

छिन्नस्तुटभूमोद, श्रीशान्तिनाथतां वलम् ।

कलानिधिमपु मित्रं, नैव दोषाकरे जन ॥ १ ॥

सन् १४१२ वर्षे आश्विनवदि ४ बुधदिने कृति

कानक्षत्रे उपकेषाज्ञातीय व्य० ज्ञमपपाल भार्या

राजुलदे पुत्र व्य० श्रीकमल भार्या पूजा पुत्र इगर

पाल्हा दोल्हाकेन समस्तकुटुम्बसहितेन श्रीपार्श्व

नाथचैत्ये स्वकुटुम्बमेपोर्य श्रीशान्तिनाथस्य देवग

हिता कारापिता श्रीविजयसेमसूरीणां शिष्यश्री

रत्नाकरसूरीणामुपवेशेन शुभ भवतु ।

देवकुलिकासख्या ५१

( ३१२ )

स १४८९ वर्षे भाद्रपददि ७ शुरौ श्रीतपा-

गच्छनायक श्रीदेवसुन्दरसूरिपदे श्रीसोमसुन्दरसूरि

श्रीमुनिसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि श्रीसुबनसुन्दरसूरि

रूपदेशेनकलवर्माबास्तव्य उत्सवाज्ञातीय मा०

मांडण सीधी पुत्र देसाकेन श्रीजीराडछासु० देव

कुलिकाशिष्यर कारापित ।

( १६३ )

देवकुलिकासंख्या ५२

( ३१३ )

संवत् १४८३ वर्षे भाद्रवावदि ७ गुरौ बीसा  
भार्ग्य वामादे पुत्र गो० सोनानी हीरा ।

( ३१४ )

सं० १४९२ वर्षे मार्गवदि १४ रविदिने घोघा-  
वास्तव्य आड भा० वा० अहडदे बेटी क्षमकुदेव्या  
शिवरं कारापितं सदाश्रेयोर्थ ।

पार्श्वनाथदेवकुलिका के छज्जा में-

( ३१५ )

वामादेसुत सीहड गोटी देहरी कारापिता ।  
मुख्यचैत्य के पृष्ठभाग की देवकुलिका के  
स्तंभ पर-

( ३१६ )

संवत् १४८७ अर्हंनमः गूंदीकर पीपलगच्छे  
त्रिभविद्या श्रीधर्मशेखरसुरिशिष्य वा० देवचंद्रः  
नित्यं प्रणमति मुद्राकलासहिता अर्हं नमः ताल-  
ध्वजीय वा० महजसुंदरः नित्यं प्रणमति । अर्हं नमः  
नमो जिणाणं ।

( ११४ )

षट्चतुष्किका के स्तंभ पर—

( ११७ )

संवत् १८५१ वर्षे आपादसुदि १५ दिने श्री  
जीराबलामदिर धित्तरजीरो सकलभहारकपुरपर  
भहारक श्री श्री श्री श्री १०८ श्रीरंगविमलसूरी  
श्वरेण जीर्णोद्धार कारापित, हजार १०२११) रुपिया  
खरबी लाम लीधो श्रीजीराबलीय गजधर सोमपुरा  
के० दला, सिरोही प्रण्यसचिता सा० रूपा सा०  
ज्योत्ता सा० अणवा सा० बीरम सा० रामजी सा०  
इजादे काम कारापित ।

लोढानातीर्थधैत्ये कायोत्सर्गस्थ प्रस्तर प्रतिमा—

( ११८ )

संवत् ११३० ज्येष्ठ शुक्ल ५ श्रीमिर्भूतिकुछे श्री  
नदेन आमपाछेन कारित पाण्डेजिनपुग्ममुत्तमं प्र०  
श्रीशेखरसूरिभिः ।

पावुकोपरि—

( ११९ )

स० १८६९ पौषसुदि १३ गुरी श्रीश्रवभदेव  
पावुकाण्डो ममा, भ० श्रीविजयलक्ष्मीसूरिभिः  
प्रतिष्ठित छोटीपुरपत्तने ।

( १६५ )

मंडपगत सपरिकर प्रस्तर प्रतिमा—

( ३२० )

संवत् ११४४ ज्येष्ठवदि ४ आद्धवती प्राग्वाट-  
वंशीय व्य० यापुश्रेष्ठी देवभार्या श्रीवर्धमानस्वामि-  
प्रतिमा कारिता, श्रीमद्देवाचार्येण लोटानक आदि-  
जिनचैत्ये प्रतिष्ठितं सहदेवेनाहेनगोत्रेण ।

धातुपंचत्तीर्थी—

( ३२१ )

सं० १०११ प्राग्वाट सा० नल पु० सिंहदेव भार्या  
जामलदेव्या का० श्रीशान्तिनाथः प्रतिष्ठिता उप-  
केशगच्छे श्रीदेवसूरिभिः ।

सेलवाड़ा में धातुचतुर्विंशतिः—

( ३२२ )

सं १३२८ वर्षे वैशाखवदि ५ गुरौ ब्रह्माणगच्छे  
श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० भूभव भार्या गूरी सुत  
सरवण ( श्रवण ) भार्या टमकू सुत धर्मा, उदा,  
पितृव्यजूगणेन श्रीधर्मनाथचतुर्विंशतिपट्टं कारापितं  
प्रतिष्ठितं श्रीविमलसूरिपट्टे भट्टारक श्रीबुद्धिसागर-  
सूरिभि राणपुरवास्तव्यः । श्रीः श्रीः ।

( ११९ )

मुछालामहावीरचैत्य के दहिनी भमती की  
छत में—

( ३२३ )

संवत् १०३३ माघसिंह ।

प्राचीनखदित पवासनोपरि—

( ३२४ )

सं० १२१४ फाल्गुनसुदि ५ दिने श्रीवशहातीय  
श्रीभांडबगोत्र यशोमद्रसुरिमनानीय शिष्य मग्नी  
सौदार कृतः श्रीप्रीतिसुरिभिः प्र० ।

वरमाणचैत्ये कायोत्सर्गस्थ प्रस्तरप्रतिमा—

( ३२५ )

संवत् १३५१ चर्षे माघषदि १ सोम प्राग्बाट  
हातीय भ० झांझण भार्या राठलपुत्रेण सिंह भा०  
पद्मा, लजातु पुत्र पद्मा भा० मोहनि पुत्र बिजय  
सिंह पुत्र बिजयसिंहसहितन पार्श्वयुगलं कारित ।

( ३२६ )

स० १३५१ चर्षे श्रीप्रह्लाणगच्छे मेता यडाहडिय  
भे० पूनसी भार्या पद्मल पुत्र पद्मसिंहेन जिनयुग्मं  
कारितं प्रतिष्ठितं श्रीः ।

( १६७ )

षट्चतुष्टिका स्तंभोपरि—

( ३२७ )

सं० १४८६ वर्षे वैशाखवदि १ बुधे ब्रह्माणीय-  
गच्छे भट्टारक श्रीमत्पुण्यप्रभसूरिपट्टे श्रीभद्रेश्वर-  
सूरिपट्टे श्रीविजसेनसूरिपट्टे श्रीरत्नाकरसूरिपट्टे  
श्रीहेमविमलसूरिभिः पुण्यार्थे रंगमंडपः कारितः ।

पद्मशिलोपरि—

( ३२८ )

संवत् १२४२ वर्षे चैत्र सुदि १५ ब्रह्माण०  
श्रीमहावीरविंशं श्रीअजितदेवस्वामिदेवकुलिकायाः  
पूनिग पुत्री ब्रह्मदत्ता जिणहा पोलहा नानरुदेवी  
सहितेन पद्मशिलाका कारिता सूत्र० फूहडेन घटिता ।

आरखीचैत्ये धातुमूर्त्ति—

( ३२९ )

सं० १३७३ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुके श्रीकुल-  
संघे भट्टा० श्रीपद्मानंदीगुरूपदेशेन ठ० झांझाकेन  
मातृ आजना पुत्रश्रेयोर्थ श्रीचंद्रप्रभविंशं प्रति-  
ष्ठापितं ।



( १५८ )

( १५० )

स० १४०६ वर्षे काशुणसुदि १० गुरो श्रीश्री  
मातृशर्माय नमः० सलम्बा भार्या सोहगदेव्याः  
श्रेयोर्थं सुत नमः० भार्याकेम श्रीपार्ष्णमाधविष कारित  
प्रतिष्ठित श्रीपमेश्वरसूरिभिः ।

दयाणा चेत्ये कायोस्तर्गस्थ प्रस्तरप्रतिमा—

( १५१ )

संवत् १०११ आषाढ सुदि ३ शनिश्चर सम  
भार्या नयणादेवी पुत्र बसिया भार्या वयजलदेवी  
पुत्र लालसिंहेन श्रीपार्ष्णयुग्मः कारितः, इह  
गच्छीय श्रीपरमानन्दसूरिधिष्य श्रीपद्मदेवसूरिभिः  
प्रतिष्ठितं ।

कासोलीचेत्ये मूलनायक परिकर—

( १५२ )

संवत् ११४३ वर्षे कपूरिका श्रीपार्ष्णमाध गोष्ठिक  
श्रेष्ठि श्रीपाल भार्या सिरियादेवी पुत्र मरदव श्रे०  
बोडा भार्या बीरी पुत्र श्रीरामदेव मह० देवसिंह  
मह० सलम्बा पु० गला श्रे० कर्मा भार्या अनुपमदे  
पु० मह० अजयमिहेन श्रे० प्रातृ लीला मोहम

( १६९ )

सहितेन श्रे० जगसिंह पुत्र श्रे० घनसिंह शंभुपाल  
श्रे० पूनड पुत्र धीरा श्रे० साहड पु० विजयसिंह  
श्रे० झांझण पु० रामसिंहप्रभृति सहितेन पितृ  
मातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथपरिकरहारः कारितः कच्छो-  
लीगच्छीयगुरुणामुपदेशेन श्रीः ।

पिंडवाडाचैत्ये धातुप्रतिमा-

( ३३३ )

सं० १००१ श्रेयांसनाथः श्रीय० पुंवणकारीयं  
श्रेयोर्थ ।

भीलडियातीर्थचैत्ये धातुपंचतीर्थी-

( ३३४ )

सं० १३६७ वर्षे वैशाख सुदि ९ प्राग्वाठे श्रे०  
तिहणसिंह भार्या हांसलश्रेयोर्थ पुत्र सोमाकेन श्री-  
आदिनाथविंश का०, प्रतिष्ठितं मडाहडियगच्छीय  
श्रीचंद्रसिंहसूरिशिष्य श्रीरविकरसूरिभिः ।

( ३३५ )

सं० १५३५ वर्षे माघ वदि ९ शनौ कुतवपुर-  
वासी प्राग्वाट व्य० काजा भार्या देवी पुत्र भोला-  
केन भा० राजू सुत हांसा रतादिकुटुंबयुतेन स्व-

( १७ )

पितृभयसे श्रीशान्तिनाथविच का०, प्र० तपागच्छे  
श्रीलक्ष्मीमागरसूरिभिः ।

पादुकायुगलोपरि—

( ३३६-३३७ )

सबत् १८३७ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे अयोद  
शीतिथौ चतुर्वासरे मङ्गलक श्री श्री श्री १० ८ श्री  
हीरविजयसूरीश्वरगुरुप्यो नमो नमः, श्रीहृत्विजग  
यणिपादुका छ श्रीमहिमाविजय ग० पादुका छे ।

भूमिगृहे पञ्चतीर्थी—

( ३३८ )

स० १५०७ वर्षे माघे कांक्षिमासे अ० इगर्  
भा० रूपी पुत्र माताकेस भा टीबू पुत्र कमाहेमा  
दिक्कुदुवयुतेन श्रीसुमतिनाथविच का० प्र० तपा  
गच्छेश श्रीमोमसुंवरसूरि श्रीजयचंद्रसूरिशिष्य श्री  
श्रीरत्नशेखरसूरिभिः श्रीः ।

( ३३९ )

सबत् १९३४ वैशाखवदि ५ बुधे श्रीगौतम  
स्वामिमुर्तिः श्रीजिनेश्वरसूरिशिष्य श्रीजिनप्रबोध  
सूरिभिः प्रतिष्ठिता कारिता च सा० बोद्धिछसुत

( १७१ )

व्य० वहजलेन मूलदेवादि भ्रातृसहितेन च स्वश्रेयोर्थं  
स्वकुटुंबश्रेयोर्थं च ।

पवासनभित्तिस्तंभोपरि—

( ३४० )

श्रीजीराडलजी भूः ङ ठं कं ।

सोपानस्तंभोपरि—

( ३४१ )

सा० जस बवल संघपति ।

भीलडीग्रामगृहचैत्ये प्रस्तरप्रतिमा—

( ३४२ )

सं० १८९२ वर्षे वैशाखसुदि १३ शुक्ले श्रीभील-  
डिया महाजनसमस्तेन श्रीनेमिनाथविं वं कारापितं ।

सं० १८९२ वर्षे वैशाखसुदि १३ शुक्ले श्रीचन्द्र-  
प्रभविं वं कारापितं श्रीभीलडीग्रामनगरना संघसम-  
स्तेन श्रीईडरनगरे प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे ।

अंबिका प्रस्तरमूर्तिः—

( ३४३ )

सं० १३४४ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० बुधे अ० लग्न-  
महिंहेन अंबिका( मूर्तिः ) कारिता ।

( १७९ )

अधिष्ठायकमूर्ति प्रस्तरमयी—

( १४४ )

सं० ११४४ ज्येष्ठसुवि १० शुभे अ० सम्ममसिंहेन  
कारिता ।

नेसडा(पालनपुर)चैत्ये धातुमूर्त्ति—

( १४५ )

स० १२४४ माघसुवि १० सोमे वीसावाल मे०  
राणा सुत आससेन आत् प्रेमसेन सा० कलत्र रत्न  
वेचेन भार्या मिरियादेवीअपोर्य चतुर्विंशतिजिन  
प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्रीप्रसन्नसूरिभिः ।

( १४६ )

सं १३६९ फा व० ५ सोमे श्रीमातृज्ञातीय  
पितृजेता मातृ लाडी अपोर्य सुत साजनभावकेन  
श्रीमुनिचंद्रसूरीणामुपवेशेन श्रीआदिनाथ ( पञ्च  
तीर्था ) विंश कारितं प्रतिष्ठित श्रीसूरिभिः ।

वात्पम(दियोदर)चैत्ये धातुमूर्त्तिः—

( १४७ )

संवत् १४४९ चर्ते वैशाखसुवि ६ शुके अंचल-

( १७३ )

गच्छे श्रीमेस्तुंगसूरीणामुपदेशेन शाला ठ० राणा  
भा० भोली सुत ठ० विक्रमेन स्वपित्रोः श्रेयसे  
श्रीमहावीर( पंचतीर्थी )वियं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीसूरिभिः ।

पादुकोपरि—

( ३४८ )

सं० १७८२ चर्षे वैशाखशुदि १५ गुरौ पं० श्री-  
जयविजयजी पं० शुक्लविजयजी पं० श्रीनित्यविजय-  
जी पं० श्रीहीरविजयजी पं० श्रीजीवविजयजी  
पादुका कारिता ।

वासणा (पालनपुर) चैत्य धातुमूर्तिः—

( ३४९ )

सं० १२४० माघसुदि १३ दिने लक्ष्मणसी रणसी  
श्रे० पोणदेवपालेन प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता  
श्रीयशोदेवसूरिभिः ।

वामभागे प्रस्तरप्रतिमा—

( ३५० )

सं० १९५५ फाल्गुनवदि ५ सांथुवास्तव्य ओ०  
धृ० शा० केशरीमल कस्तूरध्वदेन ( चंद्रप्रभ )वियं

( १७४ )

कारितं महारक श्रीराजेन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठित प्र०  
का० असुरूपजीतमहोन्न आहोरनगरे श्रीसुपर्मा  
तपा( सौधर्मबृहत्तप ) गच्छे ।

दक्षिणभागे प्रस्तर प्रतिमा—

( १५१ )

स० १९५५ का० ब० ५ समस्तसंचेम ( चंद्रप्रम )  
विष कारित प्रतिष्ठित श्रीराजेन्द्रसूरिभिः प्र० का  
असुरूपजीतमहोन्न आहोरनगरे ।

मूलनायक प्रस्तरप्रतिमा—

( १५२ )

स० १९५७ का० ब० ५ गुरौ प्राग्बाढ केरासुत  
रूपा तल्लाजीस्केम ( चंद्रप्रम ) कारित, प्र० अ०  
श्रीराजेन्द्रसूरिभिः, प्र० का० असुरूपजीतेन तपा  
गच्छे आहोरे ।

प्रतिष्ठाप्रशस्ति—

( १५३ )

श्रीराजेन्द्रसूरि श्रीधनचन्द्रसूरि श्रीभूपेन्द्रसूरि  
मदृगुरुभ्यो नमः । सवत् १९०७ वर्षे मासोत्तममासे  
मारवाडी फागुणकृष्णपक्षे पष्टि प्रवर्तमाने नन्दातिथौ

( १७५ )

कुंभलग्ने स्थिरांशे स्वातिनक्षत्रे सोमवासरे प्रभात-  
समये श्रीवासनानगरवास्तव्य श्रीवीसाश्रीमाली-  
वंशीय श्रीसंधेन श्रीचन्द्रप्रभुत्रयविंबं कारितं प्रति-  
ष्ठितं (स्थापितं) भट्टारक श्रीवर्तमानाचार्य श्री १००८  
श्रीविजययतीन्द्रसूरिआदेशात् मुनिसत्तम श्रीमत्-  
हर्षविजयेन भीमसिंहराज्ये श्रीसौधर्मवृहत्तपागच्छे  
शुभं भवतु ।

लुआणा(दियोदर) चैत्ये प्रस्तरमूर्ति—

( ३५४ )

सं० १९५५ फागुण वदि ५ गुरौ प्रतिष्ठितं भ०  
श्रीराजेन्द्रसूरिभिः, सियाणासमस्तसंधेन विमल-  
नाथ विंबं कारितं सुधर्मतपागच्छे ।

( ३५५ )

सं० १९५५ फागुणवदि ५ सियाणावास्तव्य-  
संधेन ( श्रीमहावीर ) विंबं प्रतिष्ठितं भ० श्रीराजे-  
न्द्रसूरिभिः, कारितेन जसरूपजीतमलेन सौधर्म-  
तपागच्छे ।

धातुमय—मूर्तयः—

( ३५६ )

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ९ सोमे श्रीश्रीमाल-



( १७१ )

झातीय इय० पाल्हा मा० पाल्हावे सुत बानरेन  
भा० श्रीकलव सुपुत्रसहितेन पितृमातृपैतृष्य०  
जाल्हा प्रातृ पीताम्र पूर्वज भेयोर्थ श्रीमजितनाथ  
चतुर्विंशतिपङ्क्तः का० पूर्णि० श्रीराजतिलकसूरिभिः  
प्र० ज्ञानदीपास्तव्यः ।

( १५७ )

सं० १५२२ चर्चे माघसुदि ९ शनौ श्रीप्राग्वाट  
झातीय भेष्टिबिरुभा भार्या आजी सुत स० मांकड  
भार्या सं० झाखी सुत स० अर्जुनकेन भा० अहिबदे  
सहितेन अपरा भार्या रामतिनिमित्त श्रीमुनिसु  
व्रतस्वामिर्बिष्य कारितं प्रतिष्ठित श्रीकृष्णपापशो  
प्रसुभङ्गारक श्री श्री श्री श्रीजिगरत्नसूरिभिः सह  
जाला वास्तव्यः ।

( १५८ )

स० १५२३ चर्चे वैशाखसुदि ३ प्राग्वाटझा०  
सं० नापा[केन] भा० लम्बमावे सुत न्योमा ठाईय,  
हांसा जाबड भाबड तदुभार्या अमरी नाथी कनार्ई  
मेघार्ई आसू तत्पुत्र नाकर झदका रूपा सुरादि  
कुबुचयुतेन श्रीविमलनाथर्बिष्य का०, प्र० तपागच्छे  
श्रीरत्नशेखरसूरिपदे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिर्वीरम  
प्रामवास्तव्यः ।

✓(१७७)

( ३५९ )

सं० १५१७ वर्षे फागुणसुदि ३ शुक्ले श्रीश्री-  
मालजातीय साह नागसी भार्या डाही सुत सा०  
वानर भार्यया आसीनाम्न्या आत्मश्रेयोर्थ श्री-  
अजितनायादिपंचतीर्थोर्विवं श्रीविमलगच्छे श्री-  
धर्मसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना अहमदावादे ।

( ३६० )

सं० १५०५ वर्षे माघसुदि ५ रवौ श्रीश्रीमाल-  
जातीय श्रे० वगरसी भा० सामलदे सुत समधरेण  
पितृश्रेयसे श्रीकुंथुनाथविवं पूर्णिमापक्षे श्रीगुण-  
समुद्रसूरीणामुपदेशेन कारितं प्र० विधिना ।

( ३६१ )

सं० १५३२ वर्षे वैशाखसुदि १० शुक्ले श्रीश्री-  
वंशे सं० घना भार्या धांधलदे पुत्र सं० पांचा  
सुश्रावकेण भार्या फकू पुत्र महं० सालिगसहितेन  
पितुः पुण्यार्थ श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणा-  
मुपदेशेन श्रीसुविधिनाथविवं कारितं प्रतिष्ठितं  
श्रीसंघेन लोलाढायामे श्रीरस्तु ।

( ३६२ )

सं० १६२४ वर्षे शाके १४८९ प्रवर्तमाने माघ-

( १७६ )

ज्ञातीय व्य० पास्हा भा० पास्पादे सुत बानरेन  
भा० बीकलवे सुपुत्रसहितेन पितृमातृपैतृव्य०  
जास्हा भ्रातृ पीताम्र पूर्वज अयोधं श्रीअजितनाथ  
चतुर्विंशतिपद्मः का० पूर्णि० श्रीराजतिष्ठकसूरिभिः  
प्र० जाणवीवास्तव्यः ।

( १५७ )

सं० १५२२ वर्षे माघसुदि ९ शनौ श्रीप्राग्बाद  
ज्ञातीय अष्टविंशति भाषां बाजी सुत स० मांकु  
भाषां स० झाली सुत स० अर्जुनकेत भा० अहिबदे  
सहितेन अपरा भाषां रामतिनिमित्त श्रीमुनिसु  
व्रतस्वामिर्विषयं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबृहत्पापक्षे  
प्रभुमहारक श्री श्री श्री श्रीजिनरत्नसूरिभिः सह  
आता वास्तव्यः ।

( १५८ )

स० १५२३ वर्षे वैशाखसुदि ३ प्राग्बादज्ञा०  
सं० मापा[केन] भा० लम्बमावे सुत न्योना ठाह्य,  
हासा जाबड भाषड तवूभाषां अमरी माधी कनाई  
मेपाई आसू तत्पुत्र नाकर सडका रूपा सुरादि  
कुसुमयुतेन श्रीविमलनाथविषयं का०, प्र० तपागच्छे  
श्रीरत्नशेखरसूरिपदे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिर्वीरम  
ग्रामवास्तव्यः ।

( १७९ )

कुंयुनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० श्रीनागेंद्रगच्छे  
श्रीगुणसमुद्रसूरिभिः वाराहीवास्तव्यसोरतिया । .

( ३६६ )

सं० १६६५ वर्षे वैशाखसुदि ६ बुधे श्रीराजपुर-  
पुरे श्रीश्रीमालज्ञातीय सा० बहोला नागा भा० मूनी  
तत्सुत शिवसी[सिंहेन] भार्या रत्नादे सुत मा०  
मेघसिंघ भार्या वीरादे प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रेयसे  
श्रीपार्श्वनाथविंश का०, प्र० तपागच्छे भट्टा० श्रीहीर-  
विजयसूरि भट्टा० श्रीश्रीविजयसोमसूरिभिः ।

( ३६७ )

संवत् १५८२ वर्षे वैशाखसुदि १० शुके श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्य० बल्लटा भा० मांकु सुत सोमा भा०  
सुहवदे सुत श्रीपाल भा० सिरियादेव्या स्वपूर्वज-  
निमित्तमात्मश्रेयसे श्रीनमिनाथविंश कारितं प्रति-  
ष्ठितं श्रीचैत्रगच्छे धारणपट्टीयभट्टारक श्रीविजय-  
देवसूरिभिर्लूदाग्रामवास्तव्यः श्रीः ।

( ३६८ )

सं० १५१५ वर्षे आषाढसुदि ५ श्रीश्रीमालज्ञा०  
परी० हांसा भार्या वरजु सुत भोजाकेन भार्या सोनू  
कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथविंश कारितं

( १७८ )

मासे सुविपक्षे १ सोमे ओसधशास्त्रीय मे०  
 धरणाभार्या धरणादे पु० देवचद भा० सुभाणर्षे  
 प्रमल्लदेव्या स्वकुटुम्बभेषसे साधुपूर्णिमापक्षे महा-  
 एक श्री श्री श्री श्रीविद्याचन्द्रसूरीणास्तुपदेशेन श्री-  
 वास्तुपूज्यमाधस्य विंशं कारापितं प्रतिष्ठित श्रीसंवेन।

( १७९ )

संवत् १५१३ वर्षे पौष वदि ३ शुक्ले महाज्ये  
 सुहृदसी भार्या सुहृददे सुत भोजाकेन भा० अमरी  
 मातृपितृनिमित्त आत्मभेयोर्षं श्रीशान्तिमाधविंशं  
 का० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीकमलसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

( १८० )

संवत् १५१० वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे पञ्चमी-  
 दिने बृद्धशास्त्रार्या मोहशास्त्रीय भणशास्त्री मांगा  
 भार्या सोमार्ह सुत तुल्यार्ह कारित श्रीशान्तिनाथ  
 विंशमात्मभेयोर्षं प्रतिष्ठितं तपागच्छे बृद्धशास्त्रार्या  
 श्रीचनरत्नसूरिभिः पञ्चनमगरे।

( १८१ )

स० १५१० का० सु० ३ श्रुते श्रीश्रीमातृशा-  
 मे० मोक्तु भा० सोहगदे पु० गोहदेम मातृपितृ  
 भेयोर्षं पितृव्य मातृतिहुणा भा० मांग्रभेयोर्षं च श्री

( १८१ )

धातुपञ्चतीर्थी—

( ३७२ )

सं० १४२५ वर्षे वैशाखसुदि ११ दिने श्रीब्रह्माण-  
गच्छे श्रीमालजातीय पितामही रामादेवी पितृनाथा  
मातृलीलादेवी श्रेयसे ठ० श्रीपालेन श्रीशांतिनाथ-  
विवं कारितं प्र० श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः ।

( ३७३ )

सं० १४८८ वर्षे मार्गवदि ५ गुरौ श्रीमाल-  
जातीय व्य० आंजण भार्या भोली सुत व्य० आका-  
केन श्रीपार्श्वनाथविवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसोम-  
सुंदरसूरिभिः श्रेयस्करी श्रीः ।

( ३७४ )

सं० १४२५ वर्षे माघसुदि ८ व्य० जयता भार्या  
हांसीदे पुत्र बाहडेन स्वपितुः पितृव्यश्रेयोर्थं श्री  
श्रीपद्मप्रभविवं कारापितं ।



( १८० )

पूर्णमाषक्ष श्रीसागरतिलकसूरीणासुपदशन प्रति  
ष्ठित श्रीः ।

मोटीपावट(बाधतालुका)चैत्ये—

( १६९ )

सं० १४७२ ज्येष्ठशदि ११ सोमे श्रीश्रीमास  
ज्ञातीप पितृ बुद्धरा भा० मासही पितृमातृनिमित्तं  
सुत हेमा पूडा धमावियुतः श्रीशांतिनाथशत्रुर्षि  
शतिजिनपदः करापित प्र० नागेंद्रगच्छे श्रीरत्न  
सिंहसूरिभिः ।

जेतडा(थराद)चैत्ये प्रस्तरप्रतिमा—

( १७० )

सं० १८१३ वर्षे माघशुक्ल ७ शुक्ले श्री श्वनाप  
जिमर्षिष कारापित गेलाग्राम समस्तश्रीसय श्रीश्री  
मासज्ञातीयेन न श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिभिः प्रति  
ष्ठित श्रीतपागच्छ ।

( १७१ )

सं० १८१३ माघ सु० ७ शुक्ले श्रीचन्द्रप्रभजिनर्षिष  
का० ग्रामगेलासमस्तसंघे श्रीश्रीमासज्ञातीयेन न०  
श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठित श्रीतपागच्छे ।

का संकेत मान कर इन्होंने गाढ़ी वहीं रोक दी और आशा-पूरी माता को वहीं प्रतिष्ठित की । नाढ़ दूटी, हमलिये माता का नाम भी ' नाणदेवी ' पड़ गया, जो अभी तक चला आता है । नाणदेवी का उपरोक्त स्थान थराद से ईशान कोण में अर्ध-मील के अन्तर पर है । जैन जैनेतर सब ही लोग इसको मानते हैं ।

प्राचीन लोग शकुन, शुभ लक्षणों और सकेतों में अधिक विश्वास रखते थे । उपरोक्त भूमि पर उन्होंने कुत्तों के पीछे अशकोंको दौड़ते हुए देखा । वस, उन्होंने भूमि को वीरप्रम-विनी समझा और वहीं पर बस गये । ग्राम का नाम थिर-पालधर के नाम के पीछे ' थिरपुर ' रखवा, जो आज थराद के नाम से विख्यात है ।

थराद के उत्तर में मारवाड़, पूर्व में पालनपुर, दक्षिण में सुईग्राम और पश्चिम में वाव है । बढ़ते बढ़ते थराद एक अति विशाल नगर बन गया । धरुवंश के चौहानक्षत्रियों का थराद पर ७६५ वर्ष तक अर्थात् विक्रम सं० १०१ से सं० ८६६ ( ईस्वीसन् ७८० ) तक राज्य रहा । धरुवंश के राजा, वीरवादी एवं महात्मा मोहनदास के वंशजों के सदा रहे और ठेठ तक उनका अच्छा सम्मान रक्खा ।



# लेखों का अनुवाद और अवलोकन ।



धरावनगर और उसका प्राचीन गौरव—

धराव जिसको धिराव, धिरावद या धिरपुर भी कहते हैं, विक्रम सं० १०१ में बना है । इस नगर का बसानेवाला धिरपाठक या ओ जोहाणबख्शीय खत्री था । यह मिश्र-माल का रहनेवाला था । यह आधापूरी माता का परम भक्त था । ये दो भाई थे । पिता की मृत्यु के पश्चात् दोनों भाईयों में कलह उत्पन्न हुआ । यह आधापूरी माता की मूर्ति गाड़ी में बिठा कर अपने स्वयंनों के सहित मिश्रमाल का त्याग कर उत्तर-गुजरात बनासखैठा की ओर चल पड़ा । इसका साथ में महात्मा मोहनदास और बीरबाहीबा इन्स भी था । जमी जिस स्थल पर धरावनगर बना है, वहाँ जाते-जाते गाड़ी की नाक ( नाव ) टूट गई । उपरोक्त भूमि को पवित्र समझ कर और नाक के टूटने को माता

उनकी लः पीढ़ी पर्यन्त रहा । अन्तिम चौहान राजा पूंजाजी के ऊपर मुसलमानोंने आक्रमण किया और थराद को जीत लिया । हम प्रकार संवत् १२३० से १३०० तक थराद पर यवन अधिकार रहा । मुसलमानों के हाथ में थराद के चले-जाने पर राणा पूंजाजी की विधवा राणी अपने शिशु लड़के को लेकर अपनी माता के घर चली गई । कुंवर जब युवा-वस्था को प्राप्त हुआ तो वीर निकला और थराद के राज्य के लोगों की महाय पाकर उमने पुनः थरादराज्य पर अपना अधिकार कर लिया । उसने ' वाव ' नामक नवीन-नगर को अपनी राजधानी बनाई, जहाँ पर अभी तक भी उसके वंशज राज्य कर रहे हैं । यवनों के मय से थराद से । उमने राजधानी उठा ली । अवसर पाकर नाडोल के चौहानोंने थराद पर पुनः अधिकार कर लिया । परन्तु अठारहवीं शताब्दि के उत्तरार्ध में थराद पर राधनपुर के नवाबों का अधिकार हो गया जो विक्रमसं० १८१५ तक रहा । विक्रमसं० १८१५ में वर्तमान ठाकुरों के पूर्वज खानजीने थराद पर अधिकार किया जो अद्यावधि उनके वंशजों के अधिकार में ही चला आ रहा है । थराद के वर्त्तमान ठाकुर ( दरबार ) भीमसिंहजी हैं और उनके ज्येष्ठ पुत्र युवराज जोरावरसिंहजी हैं । यह तो हुआ थराद के ऊपर शासन करनेवाले राजा और उनके शासनकालों का संक्षिप्त परिचय ।

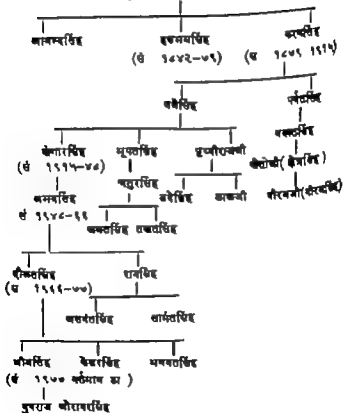
पुरुष के सत्री आज भी बराद के आम-पास के ग्रामों में बसे हुए हैं और जैनधर्मी हैं। बाब के नरेशों का जब राज्यविकास होता है तब वीरबाहीबख्त का पुरुष अपने अंगूठे को पीर कर रक्त निकालता है और मोहनदास के बख्त का पुरुष उस रक्त से सिंहासनासीन होनेवाले नरेश के ललाट पर चिह्न करता है। जैनधर भी इन दोनों के बख्तों के पुरुषों को पुत्र-रूप के समय एक एक टका प्रदान करते हैं। यह पद्धति उनके पूर्व सम्बन्ध एवं गौरव को प्रकट करती है। पुरुषधियों के दीर्घकालीन शासन में बराद की अच्छी उन्नति हुई। जैन आबादी बढ़ते बढ़ते दो हजार साठवीं पौरो तक बढ़ गई। राजा विरपाल बहुत स्वयं जैन था। बराद में जैनियों का सरा अविश्वय प्रभाव रहा।

अन्य कुलों एवं बख्तों का राज्य—

पुरुषधियों के शासनकाल के पश्चात् बराद में परमारों का राज्य रहा। अन्तिम परमार राजा निस्सन्तान था। यह धर्म से जैन था। उसने माहोल के राजा को, जो उसका मायेज था बराद का राज्य लेकर स्वर्ण मायवती दीवा प्रदान करली। बराद के ऊपर माहोल के बौद्धानों का राज्य

उनकी छः पीढ़ी पर्यन्त रहा । अन्तिम चौहान राजा पूंजाजी के ऊपर मुसलमानोंने आक्रमण किया और थराद को जीत लिया । इस प्रकार संवत् १२३० से १३०० तक थराद पर यवन अधिकार रहा । मुसलमानों के हाथ में थराद के चले-जाने पर राणा पूंजाजी की विधवा राणी अपने शिशु लड़के को लेकर अपनी माता के घर चली गई । कुंवर जब युवा-वस्था को प्राप्त हुआ तो वीर निकला और थराद के राज्य के लोगों की सहाय पाकर अपने पुनः थरादराज्य पर अपना अधिकार कर लिया । उसने ' वाव ' नामक नवीन-नगर को अपनी राजधानी बनाई, जहाँ पर अभी तक भी उसके वंशज राज्य कर रहे हैं । यवनों के भय से थराद से उसने राजधानी उठा ली । अवसर पाकर नाडोल के चौहानोंने थराद पर पुनः अधिकार कर लिया । परन्तु अठारहवीं शताब्दि के उत्तरार्ध में थराद पर राधनपुर के नवाबों का अधिकार हो गया जो विक्रमसं० १८१५ तक रहा । विक्रमसं० १८१५ में वर्तमान ठाकुरों के पूर्वज खानजीने थराद पर अधिकार किया जो अद्यावधि उनके वंशजों के अधिकार में ही चला आ रहा है । थराद के वर्तमान ठाकुर ( दरबार ) भीमसिंहजी हैं और उनके ज्येष्ठ पुत्र युवराज जोरावरसिंहजी हैं । यह तो हुआ थराद के ऊपर शासन करनेवाले राजा और उनके शासनकालों का संक्षिप्त परिचय ।

( ~~सिद्ध~~ सं १८१५ )



## यवन आक्रमण के पूर्व थराद—

थराद की जाहोजलाली और आभूथ्रेष्टी—

धरुवंशीय, परमार और नाडोल के चौहान इस प्रकार तीनों कुलों का थराद पर राज्य विक्रम की तेरहवीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध तक रहा। इतनी शताब्दियों तक हिन्दू राज्य रहने के कारण थराद व्यापार, कला, वाणिज्य, व्यवसाय, धन और समृद्धि में गुर्जर और सौराष्ट्र के प्रमुख नगरों में गिना जाने लगा। इस नगर में जैनियों का मदा प्रभुत्व रहा। अनेक धनी मानी कोटीध्वज जैन यहां और इसके ग्रामों में रहते थे। विक्रमसं० ११११ में जब मरुघरप्रदेश के प्रसिद्ध, ऐतिहासिक, समृद्ध नगर भिन्नमाल को जीत कर मुसलमानोंने नष्ट-भ्रष्ट किया, तब वहां से ग्यारह कोटीद्रव्य का स्वामी शखसेठ का वंशज महमाशाह और श्रीमाली-ज्ञातीय काश्यपगोत्रीय श्रे० जूना का वंशज थरादराज्य के अचवाड़ीग्राम में आकर बसे। इसी प्रकार श्रीमालीज्ञातीय वृद्धशाखीय इक्कीस कोटीद्रव्य के स्वामी सोमासेठ का वंशज तिहुअणसी(त्रिभुवनसिंह) और तीन कोटीद्रव्य का स्वामी श्रीमालीज्ञातीय चंडीसर का वंशज वीरदाम खेनप में आकर बसे। इस प्रकार थरादराज्य में विपुल धनशाली श्रीमन्तों का प्रभुत्व बढ़ता ही गया और वह अक्षुण्ण रहा। थराद में श्रीमालीज्ञातीय श्रेष्टी संवपति आभू अधिक

गौरवशाली एवं प्रसिद्ध भीमन्त हुआ है, वह अपार वैभव-  
शाली था। जैसा वैभवपति था, वैसा ही वह धर्मानुष्ठी  
एवं उदार भीमन्त था। उसने अपनी आयु में तीन सौ माठ  
भाषारण्य स्थापितवाले स्वधर्मों की प्रतिमाओं को भीमन्त  
बनाया। तीर्थयात्रा में उमन बारह कोड़ स्वयं-महोर व्यय  
की। उसकी तीर्थयात्रा में ७०० जिनमन्दिर थे। उसने  
तीन कोड़ टक व्यय करके वर्ष आयवसत्रों की एक एक प्रति  
सुवर्णपत्रों में और द्वितीय प्रति स्याही से लिखवाई तथा  
उसने माठो धर्मपत्रों में साठ कोड़ द्रव्य व्यय किया।  
धिरापद्रव्यपत्र की उत्पत्ति बरादनगर में हुई। धिरापद्रव्यपत्र  
बादिबेताल भीमन्तधरि विक्रमसं० ११८५ में विद्यमान  
थे। इस गण्ड का जन्म बराद की उत्पत्ति का परिणाम है।

बराद के उत्पत्ति काल में वहाँ पर एक अति विशाल  
जैनमन्दिर बना था, जिसके १४४४ स्तम्भ थे। इस है कि  
आज वह नामशेष रह गया है। उस बगद आज केवल  
सूचिक्रमय जमीन है। यह सुसलमान बंधुओं का कार्य है।  
आज भी उस जगह पर दो फीट ऊँची ईंटें निकलती हैं  
तथा समय समय पर अपूर्व क्यरीयरी के बनेक ललित  
प्रस्तरलक्ष्य निकलते रहते हैं। महाराजा गुर्जरसम्राट्  
कुमारपालने भी बराद में एक विशाल चतुर्दश त्रिनालय  
बनवाया था। एक प्रतिमा पर प्रसिद्ध, देवचन्द्राचार्य का  
नामोल्लेख भी है। परन्तु तेराही छताम्ब के श्राद्ध में

थराद पर यवनों का घातक आक्रमण हुआ और इस आक्रमण से थराद की जाहोजलाली को बड़ा घका लगा । १४४४ स्तम्भों का मन्दिर तथा कुमारपाल का बनवाया मन्दिर तोड़ डाला गया । थराद का व्यापार, वाणिज्य भी नष्ट हो गया । धीरे धीरे थराद की स्थिति सुधरी, परन्तु वह पूर्व की शोभा फिर नहीं आ पाई । सं० १२३० में थराद पर यवनों का आक्रमण हुआ था और सं० १३०० तक थराद यवनों के अधिकार में रहा । चौदहवीं शताब्दि के प्रारम्भ में पुनः इस पर नाडोल के क्षत्रियों का और बाव पर जैमा ऊपर कहा जा चुका है राणा पूजा के पुत्रने अपना राज्य पुनः स्थापित किया । इस प्रकार थरादराज्य के दो विभाग हो गये, परन्तु यवनराज्य तो समाप्त हो गया । चौदहवीं शताब्दि से थराद यवनों के आक्रमण से बचा और उसकी शोभा एवं समृद्धि तो घटी, परन्तु आबादी पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ पाया । क्योंकि यवनराज्य केवल सत्तर (७०) वर्ष पर्यन्त ही रहा, अधिक नहीं रह सका ।

इस शिलासंग्रह में २७३ शिलालेख तो केवल थराद के ही हैं । ये लेख थराद के जिनालयों में विराजित घातुमय चौबीशियों, पंचतीर्थियों और छोटी बड़ी प्रतिमाओं के हैं । इनमें जूना से जूना लेख ग्यारहवीं शताब्दि का है । शताब्दि बार लेखों की संख्या इस प्रकार है ।



गौरवघासी एवं प्रसिद्ध भीमन्त हुआ है, वह अपार वैभव-  
 छासी था। जैसा वैभवपति था, वैसा ही वह धर्मानुरागी  
 एवं उदार भीमन्त था। उसने अपनी आपु में तीनसौ माठ  
 माधारण स्थितिवाले स्वयंसी झांति माईयों को भीमन्त  
 बनाया। तीर्थयात्रा में उमने बारह कोड़ स्वर्ण-महोर ज्वर  
 की। उसकी तीर्थयात्रा में ७०० जिनमन्दिर थे। उसने  
 तीन कोड़ टंक व्यय करके सर्व आगमग्रन्थों की एक एक प्रति  
 सुवर्णाक्षरों में और द्वितीय प्रति स्याही से लिखवाई तथा  
 उसने पाँचो धर्मग्रन्थों में साठ कोड़ द्रव्य व्यय किया।  
 विरापद्रमच्छ की उत्पत्ति बरादनगर में हुई। विरापद्रमच्छीय  
 वादिचेताल भीशान्तिपुरि विक्रमसं० ११८५ में विद्यमान  
 थे। हम यच्छ का जन्म बराद की उत्पत्ति का परिणाम है।

बराद के उत्पत्ति काल में वहाँ पर एक अति विशाल  
 जैनमन्दिर बना था, जिसके १४४४ स्तम्भ थे। इतल है कि  
 आज वह नामोशेष रह गया है। उस जगह आज केवल  
 मृत्तिकाभय बची है। यह वृत्तसमान बंधुओं का कार्य है।  
 आज भी उस जगह पर दो फीट लम्बी हट्टें निकलती हैं  
 तथा समय समय पर अपूर्व कारीगरी के अनेक लंबित  
 प्रस्तरलब्ध निकलते रहते हैं। महाराजा गुर्जरमगध  
 कुमारपालने भी बराद में एक विशाल चतुर्भुज शिनालय  
 बनवाया था। एक प्रतिमा पर प्रसिद्ध, हमचन्द्राचार्य का  
 नामोशेष भी है। परन्तु तेराही जलाम्बि के पूर्वाक्ष में

कि थराद में जैन-वस्ती घट अवश्य गई थी, परन्तु इतनी अवश्य रही कि जहाँ प्रसिद्ध प्रसिद्ध गच्छों का निर्वाह प्रायः हो सकता था। लेखों में सब से अधिक लेख पिष्पलगच्छ के हैं, फिर पूर्णिमा, ब्रह्माण और तपागच्छों के अन्य गच्छों के लेखों से अधिक हैं। परन्तु यह तो स्पष्ट है कि थराद में लगभग बीस गच्छों के अनुयायियों के या उनके अनुरागियों के घर रहे हैं। जहाँ एक साथ १०-१५ गच्छों के घर मिलते हों, वह नगर उस काल में अवश्य समृद्ध और उन्नत ही माना जायगा। शताब्दिवार लेखों में अधिक लेख पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दि के हैं। जिसमें सोलहवीं शताब्दि के तो १६० लेख हैं। ये लेख विविध गच्छों के भिन्न भिन्न आचार्यों के एवं श्रावकों के नामों से संग्रहित हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि थराद एक बार पुनः पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में समृद्ध, वैभवशाली और धर्मकृत्य, व्यापार-वाणिज्य में आगे बढ़ गया था। लेखों में ७० लेख श्रीमालीज्ञाति के हैं। अतः यह भी सिद्ध है कि थराद में श्रीमालीज्ञाति के घर अधिक संख्या में थे। केवल लेखों की संख्या पर ही गच्छ, समृद्धि और ज्ञाति का लेखन किया गया हो, सो बात नहीं है। विभिन्न संवत्, विभिन्न श्रावक और भिन्न भिन्न नाम के आचार्यों पर अधिक जोर रख कर ऐसा लिखा गया है।

विक्रमसं० १८६९ में थरादराज्य में मयंकर दुष्काल

शताभिद्	सेखनंख्या	शताभिद्	संख्यसंख्या
११	१	१५	१
१२	२	१६	१५६
१३	८	१७	२०
१४	१३	१८	३
			<hr/> २०१

### गण्डवार् सेखों की संख्या ।

गण्ड	संख्यसंख्या	गण्ड	संख्यसंख्या
अंशस	१७	नागन्द्र	१०
आगम	४	निगम	२
उपकेस	२	पिप्पल	५०
कुरुआमति	२	पुर्विमा	१७
कोरंट	२	बृहत्पत्र	२
सरतर	७	प्रश्नाण	२१
वेत्र	७	माषदार	१२
बीरापल्ली	४	नडेरक	२
तपा	२१	सरस्वति	२
पारापत्र	८	सैद्यान्तिक	६
धर्मपोष	४		<hr/> २२५

येन केसों में गण्डनाम नहीं है ।

उपरोक्त दोनों अनुक्रमविधियों से यह सिद्ध होता है

कि थराद में जैन-वस्ती घट अवश्य गई थी, परन्तु इतनी अवश्य रही कि जहाँ प्रसिद्ध प्रसिद्ध गच्छों का निर्वाह प्रायः हो सकता था। लेखों में सब से अधिक लेख पिप्पलगच्छ के हैं, फिर पूर्णिमा, ब्रह्माण और तपागच्छों के अन्य गच्छों के लेखों से अधिक हैं। परन्तु यह तो स्पष्ट है कि थराद में लगभग बीस गच्छों के अनुयायियों के या उनके अनुरागियों के घर रहे हैं। जहाँ एक साथ १०-१५ गच्छों के घर मिलते हों, वह नगर उम काल में अवश्य समृद्ध और उन्नत ही माना जायगा। शताब्दिवार लेखों में अधिक लेख पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दि के हैं। जिसमें सोलहवीं शताब्दि के तो १६० लेख हैं। ये लेख विविध गच्छों के भिन्न भिन्न आचार्यों के एवं श्रावकों के नामों से संग्रहित हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि थराद एक बार पुनः पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में समृद्ध, वैभवशाली और धर्मकृत्य, व्यापार-वाणिज्य में आगे बढ़ गया था। लेखों में ७० लेख श्रीमालीज्ञाति के हैं। अतः यह भी सिद्ध है कि थराद में श्रीमालीज्ञाति के घर अधिक संख्या में थे। केवल लेखों की संख्या पर ही गच्छ, समृद्धि और ज्ञाति का लेखन किया गया हो, सो बात नहीं है। विभिन्न संवत्, विभिन्न श्रावक और भिन्न भिन्न नाम के आचार्यों पर अधिक जोर रख कर ऐसा लिखा गया है।

विक्रमसं० १८६९ में थरादराज्य में मयंकर दुष्काल

पड़ा और अनेक कुल पराद छोड़ कर अन्यत्र चले गये । अहमदाबाद, पारुनपुर रावनपुर, डीपा, धानेरा, पायवरण, चढावरा, बीसनगर, बीरमगाम, और काठीयावाड़ नगरों में तथा दक्षिण में पूना आदि नगरों में ऐसे अनेक कुल हैं जो 'परादरा' कहाते हैं । इन कुलों में से अनेक छोप छुहार करने के लिये पराद में नाणदेवी और समकाठ देवी के दर्शनो को प्रतिवर्ष जाते हैं । इस समय पराद में शैलाम्बर जैनो के ६०० घर आबाद हैं और ५ भीमाठ जैन कहाते और सभी त्रिस्तुतिक आम्नाय वाले हैं ।

मन् १९४८ में इन पक्षियों के ठेसक को आचार्य दश भीमविजयपतीब्रह्मजीश्वरजी महाराज के दर्शनार्थ पराद जाने का अवसर प्राप्त हुआ था । मैंने परादनगर को दूर दूर तक ठसक बाहर घूम कर देखा अनक दूर और समे दूर देखे । कलापूर्ण प्रस्तर-समूह देखे । अधिक आकर्षित करनेवाली एक मस्जिद देखी जो राजप्रासाद के सिंहाद के बाई और है । उसमें जैनमन्दिरों के अण्डित पत्थर लगे हुए देखे । आंगन में एक लम्ब अड़ा हुआ था, जो सुता झू रहा था कि मैं मन्दिर की देखली के बाहर का परपर काल के अनेक छरपात सहम करके भी पराद सुली, समुद्र और गौरववाली है ।

( १९३ )

श्रीवीरचैत्य में वासुपूज्यमन्दिर की धातु पंचतीर्थियों

( १ )

सं० १५०५ माघ शु० ९ शनिश्चरवार के दिन धंधुका निवासी श्रीमालज्ञातीय व्यव० पर्वत भार्या खीमल-देवी पुत्री मांजुबाईने अपने कल्याणार्थ आगमगच्छीय श्री हेमरत्नसूरिगुरु के उपदेश से श्रीसुविधिनाथ का पंचतीर्थी विंव प्रतिष्ठित करवाया ।

( २ )

सं० १५१५ ज्येष्ठ शु० ९ शुक्रवार के दिन गुर्जगवाड़ा निवासी श्रीमालज्ञातीय व्यव० जेमा भार्या जानूदे पुत्र मूल-चंदने पूर्णिमागच्छीय श्रीसाधुरत्नसूरि के उपदेश से श्रीसु-विधिनाथ का पंचतीर्थी विम्ब करवा कर उसकी प्रतिष्ठा करवाई ।

( ३ )

सं० १५१३ पौषकृ० ५ रविवार को श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि-महाजन घना, सारंग, गेला, घर्मा, राजा, दूदा, नारद आदि कुटुम्बियोंने चैत्रगच्छीय श्रीलक्ष्मीदेवसूरि के द्वारा पूर्वज सांगा के निमित्त श्रीअजितनाथ प्रतिमा(पंचतीर्थी) प्रतिष्ठित करवाई ।

✓ (१०१)


( १० )

सं० १५८३ ज्येष्ठ शु० ११ बुधवार के दिन उत्स  
( उपकथगण्डीय ) श्रीकृष्णार्चसन्तानीय उपकथगण्डीय  
श्रीगोत्रीय (सठिया) शार महाराष्ट्र पुत्र ससत्त्व माया  
पुजारद्वी पुत्र हरिनाथन मा० हेमाद्वी पुत्र मीनरात्र सप्रित  
श्रीशक्तिनाथ का पंचतीर्थी विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
श्रीवधदेवधरि द्वारा हुई ।

( ११ )

सं० १५३६ श्रीश्रीमासगण्डीय ज्य० नाथा मा० धर्मिणी  
बाई पुत्र रत्नामज मा० गूरीबाई, शिवदत्तन स्वभार्या कृष्णरि  
बाई आदि परिवर्तनों के सप्रित श्रीशक्तिनाथ का विम्ब  
अपने आता रत्नामज के कस्यानार्थ पुर्विमापणीय श्रीपुत्र  
रत्नधरि क उपद्वय से करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विधिपूर्वक  
काकरग्राम में हुई ।

( १२ )

सं० १५९८ वैशाख शु० ३ शनिवार के दिन श्रीश्रीमास  
गण्डीय ज्य० उदिरा (सदपन) मा० कटूबाई पुत्र मोटाक  
( मोटमस )मे अपने पिता माता एवं पितामह बापा और  
अपने कस्यान के लिए श्रीशक्तिनाथपुत्र का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा पिम्पसमण्डीय  श्रीधर्म  
सागरधरिके द्वारा मोयसीग्राम

( १९७ )

इम बिम्ब की प्रतिष्ठा होनेकी तिथि यही है जो लेखाङ्क ५ में है । दोनों लेखों में आचार्य, संवत् और ग्राम भोगली ही है । अतः वणचीर और उदिरा महोदर हैं ।

( १३ )

सं० १४१७ वैशाखशु० २ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० लीम्बा, भा० नामलदेवी पुत्र महजाने भा०  
सहजलदेवी पिता लीम्बा के कल्याणार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी  
का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीउदया-  
नन्दसूरिके पट्टाधीश श्रीगुणदेवसूरिके द्वारा हुई ।

( १४ )

सं० १४९५ आपाढशु० ९ रविवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० गोरा भा० देल्हणदेवी के  
पुत्र भारमल भा० पोमादेवी के पुत्र हूंगर और भास्तरने  
पितृजनों के श्रेयार्थ श्रीधर्मनाथजी का बिम्ब करवाया, जो  
श्रीमद् जज्ञगसूरिके पट्टाधीश पञ्चुनसूरिके द्वारा प्रति-  
ष्ठित हुआ ।

( १५ )

सं० १४२९ माघकृ० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० अमयसिंह भा० आल्हणदेवीने पितृ कमा-  
(कर्मचन्द्र) के कल्याणार्थ श्रीमूलनाथक पार्श्वनाथप्रभु का  
श्रेयस्कर बिम्ब श्रीनरप्रमसूरिके उपदेश से करवाया ।



( १९४ ) ✓

( ४ )

सं० १५०१ चौकट० ६ श्रीभीमालक्ष्मीय मन्त्रीसन्ताने  
पिता मे० जेसिम(अयसिंह), माता पद्मापरी, स्वमार्पा  
राष्ट्रबाईने माता-पिता, पुत्र के मेयोर्ष सिद्धान्तमण्डीय  
श्रीसोमचन्द्रधरि के द्वारा श्रीकृष्णनाथजी का विम्ब प्रति  
ष्ठित करवाया । पर मे सर्वत्र सौभाग्य हो ।

( ५ )

सं० १५२८ बेघालसप्त० ३ अतिवार के दिन मोरली  
ग्राम निवासी श्रीभीमालक्ष्मीय मन्त्री बापा मार्पा रतनदेवी  
के पुत्र बनधीरने पिप्पल्लगण्डीय त्रिमयीया मन्त्री श्रीधर्म-  
सागरधरि के द्वारा श्रीविमलनाथ प्रभु का पंचतीर्थी विम्ब  
स्वमार्पा धात्रीदेवी, माता, पिता और पितृजनो के मेवार्ष  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( ६ )

सं० १४२१ बेघालसप्त० ५ अतिवार के दिन पुत्र देला  
कने नागेन्द्रगण्डीय श्रीगुणाकरधरि के द्वारा अपने पिता  
अपन्त, माता अयतलदेवी और पितृम्य कर्मज (कर्मराज)  
के मेय के सिधे श्रीपार्थनाथ प्रभुका पंचतीर्थी विम्ब  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( ७ ) ✓

सं० १४२३ बेघालसप्त० ९ अतिवार के दिन कोरमक

( १९५ )

गच्छीय श्रीनन्नाचार्यानुयायी ओसवालज्ञातीय मंडपुत्र-  
शाखीय(भणशाली) श्रे० महिमदेव मा० मंदोदरी के पुत्र  
नरश्रेष्ठिने स्वमाता पिता के श्रेयके लिये श्री शान्तिनाथप्रभु  
का पंचतीर्थी बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीभावदेव-  
सूरिने की ।

( ८ )

स० १५१९ मार्गसिर गुरुवार के दिन श्रीमालज्ञातीय  
लघुशाखीय व्य० जेसा (जसराज) भार्या हरखू (हर्षाबाई)  
के पुत्र व्य० राजाने स्वभार्या भवकूबाई सहित अपने कल्या-  
णार्थ पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरि के उपदेश से श्रीपार्श्व-  
नाथ का पंचतीर्थी बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ९ )

सं० १५१२ मार्गसिर शुक्ला पूर्णिमा सोमवार के दिन  
भावहारगच्छीय श्रीमालज्ञातीय व्य० पद्मराज, मा०  
पालहणदेवी पुत्र माला(मालराज) मा० मालहणदेवी पुत्र  
रत्नराज, पर्वत, संघा, मोकल, देवा, जाणा (ज्ञानराज)  
सहित व्य० मालाक(मालराज)ने अपने पितामह के आता  
व्य० घड़मिह के कल्याणार्थ श्रीसुमतिनाथ का बिम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीकालकाचार्यसन्तानीय पूज्य  
श्रीवीरसूरि के द्वारा हुई ।

( १९४ ) ✓

( ४ )

सं० १५०१ पौषकृ० ६ भीभीमासहातीय मन्वीसन्ताने  
पिता भे० जसिग(अयसिंह), माता पत्रापरी, स्वमार्पा  
राज्जुसार्इने माता-पिता, पुत्र क भेयोर्धे सिद्धान्तगन्ध्रीय  
भीसोमचन्द्रसरि के द्वारा भीकृन्पुनाधमी का विम्ब प्रति  
ष्ठित करवाया । पर में सर्वत्र सौभाग्य हो ।

( ५ )

सं० १५२८ वैशाख शु० २ अतिवार के दिन मोमछी  
ग्राम निवासी भीभीमासहातीय स्व० बापा मार्या रतनूदेवी  
क पुत्र बनबीरन विष्णुलग्छीय विमवीया मन्हा० भीषर्म-  
सागरसरि के द्वारा भीविमकनाथ प्रभु का पञ्चतीर्थी विम्ब  
स्वमार्पा छावीदेवी, माता, पिता और विह्वनो के भेषार्थ  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( ६ )

सं० १७९१ वैशाखशु० ५ अतिवार के दिन पुत्र देसा-  
कमे नागेन्द्रगच्छीय भीगुणाकरसरि के द्वारा अपने पिता  
अयन्त, माता अयतलदेवी और विह्व कर्मज (कर्मरात्र)  
क भेष के लिये भीपार्थनाथ प्रभुका पञ्चतीर्थी विम्ब  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( ७ ) ✓

सं० १७१३ वैशाखशु० ९ अतिवार के दिन कोरण्टक-

गच्छीय श्रीनन्नाचार्यानुयायी ओमवालझातीय मंडपुत्र-  
शाखीय(भणशाली) श्रे० महिमदेव मा० मंदोदरी के पुत्र  
नरश्रेष्ठिने स्वमाता पिता के श्रेयके लिये श्री शान्तिनाथप्रभु  
का पंचतीर्थी विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीभावदेव-  
सूरिने की ।

( ८ )

सं० १५१९ मार्गसिर गुरुवार के दिन श्रीमालझातीय  
लघुशाखीय व्य० जेसा (जमराज) भार्या हरखू (हर्षाबाई)  
के पुत्र व्य० राजाने स्वभार्या भवकूबाई सहित अपने कल्या-  
णार्थ पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरि के उपदेश से श्रीपार्श्व-  
नाथ का पंचतीर्थी विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ९ )

सं० १५१२ मार्गमिर शुक्ला पूर्णिमा सोमवार के दिन  
भावहारगच्छीय श्रीमालझातीय व्य० पद्मराज, मा०  
पालहणदेवी पुत्र माला(मालराज) मा० मालहणदेवी पुत्र  
रत्नराज, पर्वत, संघा, मोकल, देवा, जाणा (ज्ञानराज)  
सहित व्य० मालाक(मालराज)ने अपने पितामह के आता  
व्य० घड़मिह के कल्याणार्थ श्रीसुमतिनाथ का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीकालकाचार्यसन्तानीय पूज्य  
श्रीवीरसूरि के द्वारा हुई ।

✓ (१०४)

( १० )

सं० १५८३ ज्येष्ठ शु० ११ बुधवार के दिन उपस  
( उपकृष्णशुक्लीय ) श्रीकृष्णार्चसन्तानीय उपकेशजातीय  
श्रेष्ठिगोत्रीय (सठिया) छाह महाराष्ट्र पुत्र सप्तसप्त माया  
पुंवारदेवी पुत्र हरिराजन मा० देवादेवी पुत्र मीमराज सहित  
श्रीशान्तिनाथ का पञ्चतीर्थी विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
जीयन्तदेवद्वारि द्वारा हुई ।

( ११ )

सं० १५३६ श्रीश्रीमाठजातीय ज्य० नाथा मा० चर्मिणी-  
बाई पुत्र राममन मा० गुरीबाई, शिवदत्तने स्वभार्या कुमरि  
बाई आदि परिवारों के सहित श्रीशान्तिनाथ का विम्ब  
अपने भ्राता राममन के कल्याणार्थ पूर्णिमापक्षीय श्रीपुण्य  
रत्नद्वारि के उपवस्रस करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विधिपूर्वक  
काकरग्राम में हुई ।

( १२ )

सं० १५२८ वैशाखशु० ३ धनिवार के दिन श्रीश्रीमाठ  
जातीय ज्य० उदिरा ( उदपन ) मा० फरूबाई पुत्र मोगक  
( मोटमल ) ने अपने पिता माता एवं पितामह बापा और  
अपने कल्याण के लिए श्रीशान्तिनाथप्रभु का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा पिण्डसमष्टीय त्रिमयिया महाराज भीषम  
सागरद्वारि द्वारा मोगलीग्राम में हुई ।

( १९७ )

इस विम्ब की प्रतिष्ठा होनेकी तिथि वही है जो लेखाङ्क ५ में है । दोनों लेखों में आचार्य, संवत् और ग्राम भोयली ही है । अतः वणवीर और उदिरा महोदर हैं ।

( १३ )

सं० १४१७ वैशाखशु० २ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० लीम्बा, मा० नामलदेवी पुत्र महजाने मा०  
सहजलदेवी पिता लींबा के कल्याणार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी  
का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीउदया-  
नन्दसूरिके पट्टाधीश श्रीगुणदेवसूरि के द्वारा हुई ।

( १४ )

सं० १४९५ आपाढशु० ९ रविवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० गोरा मा० देल्हणदेवी के  
पुत्र भारमल मा० पोमादेवी के पुत्र हूंगर और भाखरने  
पितृजनों के श्रेयार्थ श्रीधर्मनाथजी का विम्ब करवाया, जो  
श्रीमद् जजगसूरि के पट्टाधीश पञ्जुनसूरि के द्वारा प्रति-  
ष्ठित हुआ ।

( १५ )

सं० १४२९ माघकु० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० अमयसिंह मा० आल्हणदेवीने पितृ कमा-  
(कर्मचन्द्र) के कल्याणार्थ श्रीमूलनायक पार्श्वनाथप्रभु का  
श्रेयस्कर विम्ब श्रीनरप्रमसूरि के उपदेश से करवाया ।

( १९८ )

( १६ )

सं० १५०१ चौपड़० ९ बुनिवार के दिन मचलगम्हे-  
र श्रीअपकीर्तिधरि के उपदेश से छा० काछू मार्या  
कमलादेवी पुत्र हरिवनन स्वस्ती मासहजदेवी के कन्याचार्य  
श्रीमद्विठनाथ का विम्ब करवाया और यह श्रीसंघ द्वारा  
प्रतिष्ठित हुआ ।

( १७ )

सं० १५१३ चौपड़० ५ बुनिवार के दिन बाबीग्राम  
निवासीश्रीभीमासहायीय जे० तिहुषा(त्रिभुवन) मा०  
कमादेवी के पुत्र बाहान मा० पारणपट्टी और मेष् पुत्र  
माखर महित माता पिता के कन्याचार्य श्री मविठनाथ का  
विम्ब करवाया, जो चित्रगम्हीय म श्रीलक्ष्मीदेवधरि के  
द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

( १८ )

सं० १५११ माचल्लु ५ सोमवार (गुरुवार) के दिन  
श्रीभीमासहायीय ज्य० बानर के पुत्र जोधराय की श्री रत्न-  
बाईन अपन पति के आत्मकन्याय के लिये श्रीविठस्वामि  
श्रीहनुपुनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीराय  
तिलकधरि के उपदेश से श्रीधरि द्वारा हुई ।

---

१ जेकाह ९४ १९१ १५६ को देखते हुए सोमवार के  
काव पर गुरुवार ही जाधिये ।

( १९९ )

( १९ )

सं० १५०९ माघशु० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
झातीय श्रे० सोना ( मोनमल ) ने स्वभार्या गजीबाई,  
भ्राता बदा ( वृद्धिचन्द्र ), भा० पूरीबाई के निमित्त श्री-  
सुमतिनाथ का विम्ब करवाया, जो सिद्धान्तगच्छीय श्री-  
सोमचन्द्रसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

( २० )

सं० १३४९ ज्येष्ठशु० २ भावहारगच्छीय शा० सोमा  
( सोमचन्द्र ) भा० सोमश्री के पुत्र छाडा, नागा, गजधर्मे  
स्वमातृ के कल्याणार्थ श्रीपार्श्वनाथ का विम्ब करवाया, जो  
श्रीविजयमिहसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

( २१ )

सं० १४३२ फाल्गुनशु० २ शुक्रवार के दिन श्रीश्री-  
मालझातीय व्य० बागमल भार्या विजयश्री के कल्याणार्थ  
पुत्र विजयकर्णने श्रीनरप्रमसूरि के उपदेश से श्रीवासुपूज्य-  
स्वामी का विम्ब करवाया ।

( २२ )

सं० १५०९ माघशु० १० शनिवार के दिन थिरापट्टे  
निवासी श्रीश्रीमालझातीय पितामह हापा पितामही हासल-  
देवी पुत्र चूंडा भा० चांपलदे सुत देवाने भा० लूणादे सहित



पिता माता, पितृजन चांपा, इमा भावु बीशा और अन्य सर्व पूर्वजों के कस्यात्मार्य श्रीश्रीतलनाथ चतुर्विंशतिपद करवाया, त्रिमकी प्रतिष्ठा पिप्पलमच्छीय श्रीसोमचन्द्रचरि क पद्मावीथ श्री उदयद्वचरि के द्वारा हुआ ।

सेठों की सेरी के श्रीवीरचैर्य की चौबीशी तथा पचसीपिया—

( २३ )

सं० १४८३ ज्येष्ठकृ० ८ रविवार के दिन श्रीभीमाठ छातीय व्य० सिम्बा मा० कसमादे पुत्र सरसा मा० प्रेमलदे पुत्र गोला, सीम्बा, सिंहने अपने माता पिता क कस्यात्मार्य श्री मेमिनाथप्रसू का विम्ब करवाया, त्रिमकी प्रतिष्ठा ब्रह्माव गच्छीय श्रीवीरचरि क पद्मावीथ श्रीमविचन्द्रचरिने की ।

( २४ )

सं० १५०५ चैत्रकृ० १३ रविवार के दिन राखरनिवासी श्रीब्रह्मागमच्छीय श्रीभीमाठछातीय व्य० राखर पुत्र मेवा ( मेवराख ) मार्या श्रीमसदेवी पुत्र सीमा, गोसल, देसल, गोसल की पुत्री सिमारदे पुत्र गङ्गमा, कर्मसिंहने अपने पितृजनों के भेषार्थ श्रीविमलनाथ चतुर्विंशतिपद करवाया, त्रिमकी प्रतिष्ठा श्रीपञ्चन(प्रपुत्र)चरिने की ।

( २५ )

सं० १५१५ फागुनशु० ७ शनिवार क दिन उदयादित-

( २०१ )

निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय आहु रामा श्रे० कुंभा, मा० काश्मीरश्री पुत्र लापाकने मा० फलीबाई, पुत्र घना, मा० साबलीबाई, पांची बाई, पुत्र मेहराज आदि कुटुम्ब सहित अपने कल्याणार्थ श्रीशान्तिनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा ब्रह्माणगच्छीय श्रीवीरसूरिने की ।

( २६ )

सं० १५२८ चैत्रकृ० १० गुरुवार के दिन श्रीश्रीवंशीय मंत्री सांगा मा० टीवूबाई पुत्र मं० सुश्रावक रत्नाने भा० धारिणीदेवी पुत्र वीरा, हीरा, नाना, बाबा सहित पितृव्य मंत्री सहसा के श्रेयार्थ अचलगच्छीय गुरु श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीसुविधिनाथ प्रभु का चिम्ब करवाया और प्रतिष्ठा श्रीसंघने करवाई ।

( २७ )

सं० १६१७ ज्येष्ठ शु० ५ काकरग्राम निवासी श्रीश्री-मालज्ञातीय श्रे० नवा मा० घनीबाई पुत्र श्रे० घरणा मा० प्रोमी पुत्र जेसा रत्नाने श्रीविमलनाथप्रभु का चिम्ब नागेन्द्रगच्छीय मट्टा० श्रीधरसघसूरि के पट्टाधीश मट्टा० श्रीज्ञानसागरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २८ )

सं० १५१३ माघकृ० ७ बुधवार के दिन प्राग्वाट-ज्ञातीय लघुसन्तानीय परीक्षक बाला (बालचन्द्र) भा० डाही-

( २०२ )

बाई पुत्र मोघा(मोघराज) से मा० हाडीबाई, पुत्र नाथा,  
सज्जन सहित पिठा याता के कन्याचार्य श्रीसुमन्तिनाथ का  
विम्ब करवाया, जो पूर्णिमापञ्चीय श्रीमाभियामङ्गा० श्रीजय  
शेखरधरि के उपदेश से लापताग्राम में प्रतिष्ठित हुआ ।

( २९ )

सं० १५८० वैशाख शु० १३ बुधवार के दिन श्री  
भीमासहायीय सं० हीरा मा रासीबाई पुत्र महं० हेमा  
मा० इमीरदे पुत्र सं० तेजाने मा० नीतिबाई, पुत्र हंवर,  
भूंमर, माया सहित अपने कन्याचार्य श्रीसुपायनाथ का विम्ब  
पूर्णिमापञ्चीय श्रीपुष्परत्नधरि के पञ्चाशीष्ठ श्रीसुमतिरत्न  
धरि के उपदेश से विधिपूर्वक प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३० )

सं० १५१७ वैशाखशु० ३ कासुमा निवासी प्रतपाट  
हायीय प्य कृपा मा० कन्डीबाई पुत्र देवसी( देवसिंह )  
मा० बाह्मीबाई पुत्र देपास( देवपास )ने मांडा( मंडपास )  
आदि कुटुम्ब सहित अपने कन्याचार्य श्रीविमलनाथ का  
विम्ब करवाया, जो तपागञ्चीय श्रीरत्नशेखरधरि के पट्टार  
श्रीलक्ष्मीसागरधरि द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

( ३१ )

सं० १५६३ आशुम शु० ८ बुधवार के दिन बिरा

( २०३ )

पटनगर निवासी श्रीश्रीमालझातीय आजु( अर्जुन ) सखा  
व्य० मेघा पुत्र आशा भा० अमरीबाईने अपने कल्याणार्थ  
जीवितस्वामि-श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब करवाया, जो  
श्रीपूर्णमापक्षीय भ० श्रीसुमतिनाथप्रभसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित  
हुआ ।

( ३२ )

सं० १५१६ संवदी गेलाने ( पूर्णिमापक्षीय ) श्रीगुण-  
धीरसूरि के उपदेश से श्रीगौतमस्वामी का बिम्ब मणिकर  
करवाया ।

( ३३ )

सं० १६५१ फाल्गुनकृ० १० शनिवार के दिन थिरापट्ट  
निवासीने श्रीमुनिसुव्रतस्वामी का बिम्ब प्रतिष्ठित कराया ।

( ३४ )

सं० १२९१ माघ शु० ५ गुरुवार के दिन पिप्पल-  
गच्छानुयायी व्य० वीरा( वीरचन्द्र ) पुत्र झाझणने तथा  
पुत्र नेनक, नेढक, ब्रह्मा, केथुने तथा आम्रदेवने श्रीश्रयभ  
देव के मन्दिर में दो कायोत्सर्गस्थ जिन-बिम्ब करवाये ।  
इम चैत्य का जीर्णोद्धार बला अमयकुमार आदि कुटुम्ब  
समुदायने करवाया । प्रतिष्ठाकार्य श्रीसर्वदेवसूरि के द्वारा हुआ ।

लेख में दो कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा होने का उल्लेख है,  
परन्तु वर्तमान में यह एक ही प्रतिमा विद्यमान है जो

मध्य अति चमत्कार पूर्ण और खेतवर्ष ६८ इंची बड़ी प्रस्तर प्रतिमा है। इस समय यह बीरप्रभु के मंदिर में उनके दहिज माग में स्थापित है। बीरप्रभु की विशाल प्रतिमा के छिमे एक त्रिशिसरी मन्दिर बरादर्सप की ओर से बन रहा रहा है, उसीमें बीरप्रभु के साथ यह प्रतिमा स्थापित होगी।

आदिनाथचैत्य में बीबीक्षी-पञ्चतिथिर्षो—

( ३५ )

सं० १५१९ माघ० २ बुधवार के दिन कोहर निवासी श्रीभीमासहायीय अ० सापा भा० साछादेवी पुत्र बाप्ता, हाछा, भा० हमीरदेवी पुत्र बेला, गेला न बेला की बी बचलदेवी सहित पिता, मातृमण और पूर्वजों के भेदाय भीष्मलनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जो पिप्पलगच्छीय श्रीमुनिमुन्दरसुरि के पट्टपर श्रीचमरचन्द्रसुरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

( ३६ )

सं० १५१५ वैशाख २ गुरुवार के दिन सत्यपुर ( मांनोर ) निवासी श्रीभीमासहायीय परीक्षक खेता मा० खेतलदेवी पुत्र ईशर मा० रावलदेवी पुत्र मोरल मा० मदि गललदेवीने पुत्र बल्लता सहित अपने पितृजनो के कस्यानार्थ भीषितस्वामि श्रीआदिनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, त्रिपक्षी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीचन्द्रप्रमसुरि द्वारा हुई।

( २०५ )

( ३७ )

सं० १५०८ पौषकृ० ३ सोमवार के दिन काकरग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय भंडारी भोला भा० बाहोवाईने अपने कल्याणार्थ जीवितस्वाप्ति श्रीविमलनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा चैत्रगच्छीय धारणपट्टी म० श्री-ज्ञानदेवधरिने की ।

( ३८ )

सं० १५३४ ज्येष्ठशु० १० के दिन प्राग्जाटज्ञातीय व्य० गोपाल भा० लाखीवाई पुत्र व्य० लाखा ( लक्ष्मण ) भा० कीमीवाईने प्रमुख परिजनो के सहित अपने कल्याणार्थ श्री-शान्तिनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी तपगच्छीय श्री-सोमसुन्दरधरि, मुनिसुन्दरधरि श्रीरत्नशेखरधरि के पट्टधर श्रीलक्ष्मीमागरधरिने प्रतिष्ठित किया ।

( ३९ )

सं० १५३३ वैशाखशु० ६ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० कर्मसिंह भा० लाखीवाई पुत्र श्रे० मामाकने अपनी भार्या देवलीवाई के सहित माता पिता और आत्म-श्रेयार्थ श्री सुविधिनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा थरादनगर में नागेन्द्रगच्छीय भट्टा० श्रीगुणदेवधरिने की ।

( ४० )

सं० १५२२ पौषकृ० १ गुरुवार के दिन उपकेशज्ञातीय

( २०९ )

१) भेष्टिगोत्रीय महाशुन मोला पुत्र म० बनराजने मा० सारदा देवीन म० सीता क पुण्यार्थ श्रीश्रीलक्ष्मणाय का विम्ब कराया, जिसकी प्रतिष्ठा वाराणसनगर में उपकथमण्डीय श्रीकृष्णार्थमन्दानीय श्री कञ्जधरिने की ।

( ४१ )

सं० १७५७ माघशु० ५ के दिन पिरापट्टनिवासी श्री श्रीमालङ्कातीय बृद्धशास्त्रा में बोहरा ( बहुधरा ) देवराजने मा० मानीबाई, पुत्र सो० बासा, साँकठा पुत्र मोहराबादि सहित स्वभेयार्थ श्रीसंभवनाथ का विम्ब कराया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागण्डीय महा० श्रीविजयप्रमथुरि के पट्टाधीश्व संविद्यवाधीय महा० जीद्वानविमलधरिने की ।

( ४२ )

सं० १५१० माघशु० ४ रविवार के दिन श्रीश्रीमालङ्कातीय ज्य० मोला मा० मावळदबी के पुत्र सूर्यसिंहने आता हीमला के पुण्यार्थ तथा अपने परिधनों क भेयार्थ श्री दान्तिनाथपत्नीर्षी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा विष्णुसगण्डीय त्रिमविपागण्ठनाथक ओपर्मेश्वरधरिने बिरपट्ट( पराद ) नगर में की ।

( ४३ )

सं० १५०९ वैशाखशु० ८ रविवार के दिन पारापट्टनगर

( २०७ )

निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० मोला पुत्र सं० लूणसिंह-  
भा० लूणादेवीने निज श्रेयार्थ जीवितस्वामि श्रीश्रेयांसनाथ  
का पंचतीर्थी चिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पल-  
गच्छीय त्रिभवीयागच्छनायक भट्टा० श्रीधर्मशेखरसूरिने की।

( ४४ )

सं० १५१७ माघशु० १० बुधवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० शार्दूलमल पुत्र  
भारमलने अपनी भार्या कर्पूरदेवी, पुत्र डाहा, बेला, और  
माता पिता के कल्याणार्थ श्रीअजितनाथ का चिम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा मईडका ग्राम में श्रीपञ्जूनसूरि (प्रद्युम्नसूरि)  
ने की।

( ४५ )

सं० १५०८ वैशाखशु० ४ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० नयनराजने भा० टही कुवाई, पुत्र लक्ष्मण,  
हेमराज, दूदराज आदि परिवार सहित पितृव्य कुतुहण भा०  
हासुबाई के श्रेयार्थ श्रीशीतलनाथ का चिम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा सिद्धान्तगच्छीय श्रीसोमचन्द्रसूरिने की।

( ४६ )

सं० १५०६ वैशाखशु० ८ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्यव० वरसिंह भा० तिल्लुश्रीने निजश्रेयार्थ जीवित-



स्वामि भीमेश्वरनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विष्णुहयग्रीव त्रिमयीया भीषर्मदेसरक्षरिने की ।

( ४७ )

सं० १३१८ माघशु० १३ प्राम्बाट सोनीगोत्रीय सामा की पुत्री सोनीदेवीन भीमादिनाथ प्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा त्रिशग्रीव भीषिखपदानक्षरिने की ।

( ४८ )

सं० १५१० आषाढशु० १ सुक्रवार के दिन ठपकेय ब्रह्म में ममछालीपोत्रीय महाजन माला मा० मास्वदेवी के पुत्र काका भाषकने अपने बन्धुमन्त्र गुणिया, ईमर, पुत्र मादा, बदा, राजा प्रभुस परिवार सहित भीषान्तिनाथ का विम्ब स्वपुष्पार्थ करवाया, जो सरतग्रीव भीषिखप-राक्षरि के पक्षर भीषिनमरुक्षरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

( ४९ )

सं० १५२८ वैशाखशु० ५ गुरुवार के दिन प्राम्बाट भारतीय संपदी काका मा मास्वदेवी पुत्र सं० रत्ना मा० साम्बुर्दा सं० भीमाक(भीमराज)न मा० ब्रह्मपति परिवार सहित स्वकस्याथार्थ बृहत्पापघ्नीय भीषानसाधरक्षरि के द्वारा भीषुषिबिनाथ का विम्ब मराया ।

( ५ )

सं० १४९९ कार्तिकशु० १५ गुरुवार के दिन

( २०९ )

श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० खीदा मा० काठवाई पुत्र घोराने अपने कल्याणार्थ श्रीशीतलनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभवीया भ० श्रीधर्मशेखरसूरिने थिरापद्रपुर में की ।

( ५१ )

सं० १२६३ वैशाखशु० ६ गुरुवार के दिन शा० टीला पुत्र शा० लूणाने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिमा करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीदेवसूरि के शिष्य श्री-वयरसेनसूरिने की ।

( ५२ )

सं० १५३४ वैशाखकृ० १० रविवार ( सोमवार ) के दिन प्राग्वाटज्ञातीय व्यव० शैलराज भा० तेजूबाई पुत्र अजा( अजयराज ) भा० वमीबाई पुत्र नरपालने पितृव्य व्य० वाछा( वत्सराज ) डाहा, पांचा आदि परिजनों सहित श्रीश्रेयांसनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा हीसा-नगर में श्रीसूरिने की ।

( ५३ )

सं० १६१५ चैत्रकृ० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-

---

१ लेखाङ्क ३०२ में सोमवार लिखा है ।

( ५१० )

द्वितीय महाश्वनी सोमरात्र मा० समकलदेवी, द्वितीया मा०  
मृगादेवी के पुत्र बाछान माता, पिता, पितृघनों के भेयार्थ  
भीष्मद्रुमस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
पूर्विमागष्ठीय भीषीरप्रमथुरि के पङ्कपर भीष्मद्रुमप्रमथुरिने  
सविधि की ।

( ५४ )

सं० १४९७ वैशाख० ६ शुकवार के दिन पटली  
नगर निवासी भीसावालद्वितीय मे० कठ्ठा मा० मातृ के  
पुत्र समचरन मा० छाहरी ( सप्ती ) के सहित अपने पिता  
क कल्याणार्थ भीसुपार्थनाय का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा पूर्वमागष्ठीय भीमागिया भीष्मसेसरसुरि के उप  
देश से हुई ।

( ५५ )

सं० १३५० वैशाख० ५ शुकवार के दिन भीमन्म  
बडनेगुरु के उपदेश से साधुप्रमथिरसुरि के द्वारा प्रतिमा  
( प्रतिष्ठित ) करवाई ।

( ५६ )

सं० १५१५ माघ० १ शुकवार के दिन भीभीमास  
द्वितीय पिता देवास, माता पाणुवाई के भेयार्थ उसके पुत्र  
सीमा और खेताने भीनमिनाय का विम्ब करवाया, जिसकी

( २११ )

प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीमाधुरत्नसूरि के उपदेश से हडिया-  
नगर के श्रीसंघने की ।

( ५७ )

सं० १३६९ वैशाखकृ० ८ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय  
परीक्षक भंडराज के श्रेयार्थ उसके पुत्र पाताने श्रीचतुर्विंशति-  
तीर्थकरो का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय  
श्रीभुवनानन्दसूरि के शिष्य श्रीपद्मचन्द्रसूरिने की ।

( ५८ )

सं० १४८८ ज्येष्ठशु० ३ सोमवार के दिन श्रीमालज्ञातीय  
माहणसिंह जयन्तसिंह मा० जयतलदेवी पुत्र वीरधवल हरि-  
धवल विक्रमने एकमत होकर मातापिता और स्वकल्याणार्थ  
श्रीविमलनाथ चतुर्विंशति जिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
त्रिभविद्या पिप्पलाचार्य श्रीधर्मशेखरसूरिने की ।

( ५९ )

सं० १५१७ पौषकृ० ५ (गुरुवार) के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्यव० माहण पुत्र व्य० सूरामा० सुहवदेवी  
पुत्र व्य० सदा, राणाने अपने कल्याणार्थ श्रीशान्तिनाथ  
चतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय  
त्रिभविया भ० श्रीधर्मशेखरसागरसूरिने थरादनगर निवासी  
सर्व पूर्व पुरुषों की शान्ति बढ़ाने के लिये की ।

( २१२ )

( ६० )

सं० १४८२ वैशाख० ४ गुरुवार के दिन श्रीमती  
मासहातीय स्वयं० स्वदेव मा० हांसलदेवी पुत्र मोला मा०  
मासलदेवी पुत्र नेमा, खाने माता पिता तथा भाता हेमला  
के कर्पाचार्य भीष्मजितनाथ चतुर्विंशति जिनपट्ट करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलमच्छीय त्रिमयिया श्रीधर्मप्रमदरि  
के पट्टपर श्रीधर्मशेखरहरिने की ।

( ६१ )

सं० १५१६ पौष० ५ गुरुवार के दिन धरादनिवासी  
धिरापद्मगच्छाजुषापी श्रीमतीमास हातीय स्व० स्व मा०  
श्रीदेवी पुत्र बीसलन मा० नीनादेवी, पुत्र बीरा, कला,  
हनुम संहित अपनी माता और पिता के कर्पाचार्य श्री  
भैयासनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्री  
विजयसिंहहरिने की ।

✓ ( ६२ )

सं० १४५१ वैशाख० २ सोमवार के दिन भोसवाल  
बंशीय मह० माहण मा० आसलदेवी पुत्र खमा, बाठा,  
वेरमल, केला आदि भाताजनोन अपन माता भाता सर्व  
जनोके मर्ष श्रीचतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
श्रीराठसीपुरीमच्छीय श्रीवीरचन्द्रहरि के पट्टपर श्रीदासि-  
मद्रहरिने की ।

( २१३ )

( ६३ )

सं० १५३५ पौषकृ० १२ रविवार के दिन उपकेश-  
वंशीय श्रे० हीरा भा० हीरादेवी पुत्र सुश्रावक पासु (पारस-  
मल) ने अपनी भार्या पूर्णिमादेवी पुत्र क्षेमराज भूतराज  
और देवराज सहित अपने श्रेयार्थ अंचलगच्छीय श्रीजय-  
केशरसूरि के उपदेश से श्रीसंभवनाथ का विम्ब करवाया,  
प्रतिष्ठा वागूडीग्राम में श्रीसंभने करवाई ।

( ६४ )

सं० १५०७ माघशु० १३ शुक्रवार के दिन वीरवंशीय  
सं० लीम्बा भा० मोटीवाई पुत्र सं० सुश्रावक नारदने स्व-  
भार्या जयरुदेवी सहित अंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के  
उपदेश से श्रीधर्मनाथ का विम्ब पिता के श्रेयार्थ करवाया  
और श्रीसंभने प्रतिष्ठित करवाया ।

( ६५ )

सं० १५०१ पौषकृ० ६ बुधवार के दिन वराहीगोत्रीय  
श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० महिपाल पुत्रव्य० सिंह भा० सुहव-  
देवी पुत्र नाथा, राहुल, धरणने अपनी माता के कल्याणार्थ  
श्रीश्रेयांमनाथ का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा थारा-  
पट्टीयगच्छीय श्रीमर्वदेवसूरि के पट्टधर श्रीविजयसिंहसूरिने की।

( ६६ )

सं० १४७९ माघशु० ४ काकवंशीय जोहराशास्त्रीय

( २१४ )

छा० राबिगसिंह पुत्र गंगासिंह मा० मदघरदेवी पुत्र मांरठ  
सिंहने पुत्र बत्सा, तेसा सहित स्वमार्ग क्षेत्रदेवी और  
बछाठदेवी के भेषार्थ श्रीशान्तिमाधवी का बिम्ब करवाया,  
जिसको भरतगण्डीय श्रीधनमन्त्रसरिने प्रतिष्ठित किया ।

( ६७ )

सं० १५११ यापशु० ५ भीभीमासङ्गातीय व्य० सांझा  
पुत्र अरु मा० गेठीबाई पुत्र हरराजन मा० बाळबाई सहित  
अपने पिता के भेषार्थ श्रीबादिनाथ का बिम्ब करवाया,  
जिसको चैत्रगण्डीय चारणपट्टीय श्रीलक्ष्मीदेवसरिने प्रतिष्ठित  
किया ।

( ६८ )

सं० १५५३ वैशाखशु० १३ सोमवार के दिन वासी  
नगर निवासी भीभीमासङ्गातीय व्य० मना मा० डाहीबाई  
पुत्र रहिमान स्वमार्ग रंगीबाई सहित अपने पिता, माता  
और पितृजनो के एवं आता के निमित्त तथा अपने भेषार्थ  
श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब करवाया जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पल-  
गण्डीय श्रीपद्मानन्दसरिने की ।

( ६९ )

सं० १५ ५ वैशाखशु० ३ शुक्रवार के दिन ब्रह्मप  
गण्ठासुपायी भीभीमासङ्गातीय व्य० मेघाने पुत्र गोसल

( २१५ )

मा० शृंगारदेवी पुत्र कर्मसिंह सहित पितृ देमलदेव, मातृ महंगदेवी के श्रेयार्थ श्रीनमिनाथ का विम्ब करवाया, जिसको श्रीपञ्जूनसूरिने प्रतिष्ठित किया ।

मेघा के पिता देमलदेव थे और महंगदेवी माना श्री । प्रथा की दृष्टि से पितृमातृ का उल्लेख मेघा के पूर्व होना चाहिये था ।

( ७० )

सं० १४८५ माघशु० १० शनिवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय सं० ठाकुरसिंह मा० हनकूदेवी पुत्र सं० काला ( कल्याणसिंह ) ने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीपद्मप्रमम्बामी का विम्ब करवाया, जिसकी विधिपूर्वक प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीविद्याशेखरसूरि के उपदेश से हुई ।

( ७१ )

सं० १५१७ माघकृ० ८ बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० वीरा मा० शानीवाई पुत्र जोगाने मा० मानू-वाई पुत्र महीराज कुटुम्ब सहित अपने श्रेयार्थ श्रीनमिनाथ का विम्ब पूर्णिमापक्षीय श्रीगुणमगुद्रसूरि के पट्टवर श्रीपुण्य-रत्नसूरि के उपदेश से दोलावाड़ा ग्राम में सविधि प्रतिष्ठित करवाया ।

( ७२ )

सं० १५३५ माघशु० ३ रविवार के दिन उपकेशवंश



(११९)

में रायचठा सेठिया गोत्रीय घरवा पुत्र बेठराबने मा० विमलादेवी पुत्र सेमा, बेठा, गवा आदि के भेषार्थ भीनमि नाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सरस्वरमन्त्रीय भीमिनचन्द्रसरिने की ।

(७२)

सं० १४९३ कास्गुनष्ट० १ उपकेसरवर्षीय नवसुधा सासा में डा० पासा पुत्र डा० पीसा, कमला भावकीने भीमादिनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सरस्वरमन्त्रीय भीमिनचन्द्रसरिने की ।

(७४)

सं० १५९८ वैश्व० ५ बुधवार के दिन कावेसरिग्राम निवासी भीभीमासहायीय भे प्रपितामह पेसा प्रपितामही प्रथमादेवी पितामह भीम्बराब पितामही कमदेवी पिता मेधराब माह आसादेवी के पुत्र पारसराब, सस्कुने अपने पूज्य तथा माता पिता के भेषार्थ भीष्मिस्तनाथप्रभुर्दिशति विनयक करवाया, जिसकी पिप्पलमन्त्रीय भीममरचन्द्रसरि के पदपर भीष्मचन्द्रसरिने प्रतिष्ठित किया ।

(७५)

सं० १४७१ भीभीमासहायीय भे० केरदुधा मा० मज्झाई पुत्र बाठर्षदने अपने आता साठर्षद के भेषार्थ

( २१७ )

श्रीचतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी सविधि प्रतिष्ठा आगमगच्छीय श्रीअमरसिंहसरि के उपदेश से हुई ।

( ७६ )

सं० XX६५ माघशु० १२ शुक्रवार के दिन माद्रीपुर निवासी प्राग्वाटझातीय व्य० पूनमचन्द्रने अपने पिता जसराज के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीश्रीसरिने की ।

( ७७ )

सं० १५०६ माघशु० १० शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
झातीय श्रे० चूणा भा० वापलदेवी पुत्र देवराजने माता पिता  
के श्रेयार्थ श्रीजीवितस्वामि श्रीशीतलनाथजी का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीसोमचन्द्रसरि  
के पट्टघर श्री उदयदेवसरिने पट्टघलियाग्राम में की ।

( ७८ )

सं० १४९९ कार्तिकशु० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्री-  
मालझातीय व्य० महन भा० महणदेवी पुत्र बचा, बरदाने  
अपने आता कर्मसिंह, राघवसिंह के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभ-  
स्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय  
त्रिमविया भ० श्रीधर्मशेखरसरिने की ।

( ७९ )

सं० १५२७ ज्येष्ठशु० १० बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-

( २१८ )

हातीय भे० संवा (चन्द्रराम) भे० छरदेवन पुत्र देव, पोपट  
आदि परिवर्तनो सहित भार्या बागूबाई के भेषार्थ भीकन्यु  
नाथस्वामी का विम्ब करवाया, विमकी प्रतिष्ठा पूर्वमा-  
पक्षीय भीपुष्परत्नसरि के उपदेश से विधिपूर्वक हुई ।

( ८० )

सं० १५८१ माघकृ० १० शुक्रवार के दिन भीभीमाळ  
हातीय इदमासा में म० सासा ने मा० लीलादेवी पुत्र  
माधुगज मा० उमादेवी पुत्र सासा, हीरा, आदि परिवार  
सहित निगमप्रभावक भीभानन्दमागरसरि क द्वारा भीभान्ति  
नाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ८१ )

स० १५१० कार्तिककृ० ४ रविवार के दिन भीभी  
माळहातीय म्य० लूणसिंह मा० लूणादेवी पुत्र संप्रामसिंहने  
मा० बान्हीदेवी के भेषार्थ भीभान्तिनाथजी का विम्ब  
करवाया, विमकी प्रतिष्ठा विरापत्र में विष्णुसमष्टीय त्रिम  
विषा भीसेमशेखरसरिने की ।

( ८२ )

स० १५२९ कषष्ठकृ० १ शुक्रवार के दिन विरावपुर  
निवासी भीभीमाळहातीय भे० धमा मा बापलदेवी पुत्र  
प्रेमरावने मा० आषादेवी पुत्र बापा सहित माता पिता के

( २१९ )

श्रेयार्थ श्रीपद्मप्रभपंचतीर्थी करवाई जो श्रीआगमगच्छीय श्रीअमररत्नसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित हुई ।

( ८३ )

सं० १५१६ आषाढशु० १ शुक्रवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय व्य० कान्हा मा० कमलादेवी के पुत्र गुहिंग-राज, सूरदेवने मातापिता व आत्मधेयार्थ श्रीनमिनाथजी का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा पिष्पलगच्छीय श्रीमोम-चन्द्रसूरि के पट्टघर श्रीउदयदेवसूरिने की ।

( ८४ )

सं० १५१७ चैत्रपूर्णिमा के दिन श्रीमालज्ञातीय क्षेड-रियागोत्र में स० कानू (कन्हैयालाल) पुत्र रणवीर श्रावकने मा० हर्पादेवी के सुपुण्यार्थ श्रीशान्तिनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय जिनमद्रसूरि के पट्टघर श्रीजिनचन्द्रसूरिने की ।

( ८५ )

सं० १२२० ज्येष्ठशु० ९ रविवार के दिन श्रियाहडने श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिमा करवाई जिसकी प्रतिष्ठा प्रभुश्री-हेमचन्द्रसूरिने की ।

( ८६ )

सं० १५११ माघशु० ५ गुरुवार-के दिन श्रीश्रीमाल-

( २२० )

शांतीय व्य० सायर मा० संसारदेवी पुत्र व्य० कुरसिंह मा०  
नयनादेवी के पुत्र अयसिंहने श्रीधर्मनाथप्रभु का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलमच्छीय त्रिभवीया श्रीधर्म  
सेसरसरि के पङ्कपर श्रीधर्मसुन्दरसरिने की ।

( ८७ )

सं० १५२५ ज्येष्ठ शु० ५ सोमवार के दिन बहरवाड़ा  
ग्राम निवासी श्रीभीमासहातीय व्य० मोहराज मा० गुरु  
देवी पुत्र हेमराजने मा० हीरादेवी माधु (माध्वी) पुत्र  
विजयराजसिंह परिव्रजों के सहित अपने कल्याणार्थ श्री  
अक्षितनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्री  
ब्रह्मायमच्छीय श्रीभीरसरिने की ।

( ८८ )

सं० १५१० फागुनशु० ११ बुधवार के दिन श्रीभी  
मासहातीय व्य० पुण्यपाल मा० वासुदेव देवी के पुत्र  
हीराचन्द्र, हरिचन्द्रने पूर्वजों के श्रेयाथ श्रीमादिनाथप्रभु  
का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीभारदारगच्छीय  
श्रीकाष्ठिकाचार्यसन्तानीय श्रीभीरसरि के उपदेश से हुई ।

( ८९ )

सं० १५९१ माघशु० ५ शुक्रवार के दिन श्रीभीपाल  
शांतीय व्य० देवठ( देवराज ) मा० वागीबाई पुत्र हेमराज

( २२१ )

भा० वरजुवाई के पुत्र माजूने अपने पिता माता व आत्म-  
कल्याणार्थ श्रीनमिनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिमविया भट्टा० श्रीधर्मसागरसूरि के  
पट्टधर भ० श्रीधर्मप्रभसूरिने की ।

( ९० )

सं० १५३० कार्तिकशु० १२ सोमवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्य० लीम्बराज भा० लाट्टवाई पुत्र धर्मसिंह  
भा० घांघलदेवीने भ्राता बीना के व आत्मश्रेयार्थ श्रीशीतल-  
नाथजी का विम्ब कराया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय  
श्रीमुनिसिंहसूरि के पट्टधर श्रीअमरचन्द्रसूरिने की ।

( ९१ )

सं० १५०१ फाल्गुनशु० ५ गुरुवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० तेजपाल भा० मूलावाई  
पुत्र लाखाने भा० ललितावाई, पुत्री रत्नू, पिता-माता के  
श्रेयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का विम्ब श्रीपज्जूनसूरि के द्वारा  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( ९२ )

सं० १५२४ मार्गशिरकृ० २ के दिन प्राग्वाटज्ञातीय  
व्य० तेजपाल भा० श्रीदेवी पुत्र व्य० पोपमल भा० पांतीदेवी  
पुत्र ब्रजांगदेव, देवपालने प्रमुख परिजनों सहित अपने

( ९२ )

भेयार्य भीमविधिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा उपामच्छेखर भीरत्नसेखरछरि के पदुपर भीमहमीसागर छरिने की ।

( ९३ )

सं० १५१७ पौषकृ० ५ गुरुवार के दिन राठपड़ग्राम निवासी भीमाळझातीय भे० वीरमदेव या० विठ्ठलदेवी के पुत्र राहुळ, भीमदेव भा० वीरमदेवी पुत्र आपने अपन पिता माता के भेयार्य भीमविधिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पुर्णिमापक्षीय भीमनिर्दिष्टछरिने की ।

( ९४ )

सं० १५११ माघशु० ५ गुरुवार के दिन भीभीवाल झातीय ब्यव० कर्मसिंह मा मदीबाई पुत्र महिपालने पिता माता व आरमभेयार्य भीममहिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पुर्णिमापक्षीय भीरत्नविलकछरिने स्विरापद्र ( पराद ) पुर में की ।

( ९५ )

सं० १५३६ फागुनशु० २ सोमवार के दिन साथी ग्राम निवासी भीभीवालझातीय भे० लूणसिंह मा० बमडुबाई पुत्र मोहरामने या० बमडुबाई, पुत्र रहियादि परिवर्तनों सहित अपने माता पिता के भेयार्य भीभेवांसनाथजी का

( २२३ )

विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमागच्छीय श्रीगुणधीर-  
सूरि के उपदेश से हुई ।

( ९६ )

सं० १५०१ पौषकृ० ६ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० बगसा भार्या जेसलदेवी के पुत्र धरसिंहने  
अपने पिता, माता, आता के श्रेयार्थ जीवितस्वामि श्रीसुमति-  
नाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय  
श्रीपद्मानन्दसूरि के पट्टधर श्रीविनयप्रमसूरि के द्वारा हुई ।

( ९७ )

सं० १५०५ वैशाखशु० २ बुधवार के दिन लढाऊ-  
गोत्रीय सं० नगराज भा० लाठीबाई पुत्र सं० धनराजने  
मा० सुवर्णादेवी पुत्र सं० कालू प्रमुख परिजनो के साथ  
अपने श्रेयार्थ श्रीसुविधिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा श्रीखरतरगच्छीय गुरुश्रीलिनमद्रसूरिने की ।

( ९८ )

सं० १४९३ वैशाखशु० ५ बुधवार के दिन फलौदिया-  
गोत्रीय शा० छाहू भा० छाजूबाई पुत्र सावाने अपने पुण्यार्थ  
श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा धर्म-  
घोषगच्छीय मट्टा० श्रीपद्मशेखरसूरि के पट्टधर म० श्रीविजय-  
चन्द्रसूरिने की ।



( २९४ )

( ९९ )

सं० १४३५ माघकृ० १२ सोमवार के दिन श्रीभीमाल  
जातीय सं० खेडसिंह सुत सं० हादामे श्रीशान्तिनाथजी का  
विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीवीरसिंहसरि के पदपर  
श्रीवीरचन्द्रसरिने की ।

( १०० )

सं० १५१० पौषकृ० ५ गुरुवार क दिन श्रीभीमान-  
जातीय व्य० सुरदेव भा० सुरदेवी पुत्र रुद्र रावाकरने  
अपने माता पिता के कस्याचार्य श्रीशान्तिनाथजी का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विष्णुगण्डीय त्रिमयिया श्रीधर्म  
साधरसरिने की ।

( १०१ )

सं० १५७२ वैशाखकृ० ४ रविवार के दिन श्रीभी  
मालजातीय व्य० मूरर पुत्र व्य० पोपटने भा० प्रेमलदेवी,  
माता गोपाल के पुत्र हादासदित अपने वेवार्थ श्रीसुविधि  
नाथजी का विम्ब करवाया जिसकी प्रतिष्ठा पूर्वमापण्डीय  
प्रधानशास्त्रा मे श्रीशुचनप्रमसरिने की ।

( १०२ )

सं० १४३४ वैशाखकृ० बुधवार क दिन श्रीमालजातीय  
व्य० बाठिल भा० प्रेमलदेवी ने० मालरावने श्रीशान्ति

( २२५ )

नाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छा-  
चार्य श्री मुनिप्रभसूरिने की ।

( १०३ )

सं० १४६२ वैशाखशु० ५ शुक्रवार के दिन प्राग्वाट-  
ज्ञातीय भे० प्रलेपनदेव भा० साथलदेवी के पुत्र भापलदेवने  
श्रीआदिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भडा-  
हड़ाग्राम में श्रीहरिमद्रसूरिने की ।

( १०४ )

सं० १५०६ वैशाखशु० ६ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय भे० लारवा भार्या पातलीबाई के पुत्र कीकाने अपने  
कल्याणार्थ श्रीनमिनाथजीका बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
श्रीजिनमाणिक्यसूरिने की ।

( १०५ )

सं० १४३० माघकृ० ८ सोमवार के दिन ओसवाल-  
ज्ञातीय व्य० आशधर भा० रामलदेवी के पुत्र सादरावने  
पितृजनों के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलाचार्य श्रीधर्मदेवसूरिसन्तानीय श्री  
प्रीतिसूरिने की ।

( ११६ )

( १०६ )

सं० १३०९ माघकृ० २ के दिन श्रीश्रीमाठझातीय मे०  
नरसिंह मा० नयनादेवी, छेमराज साहमठ पुत्र कर्मदेवने  
श्रीधामनिनाथजी का विम्ब करवाया, भित्तकी प्रतिष्ठा वैत्र  
गण्डीय श्रीहरिभन्द्रसरिन की ।

( १०७ )

सं० १३९९ फाल्गुनशु० १३ सोमवार के दिन बयडडी  
ग्राम के संघन प्रतिष्ठा कराई । -----

( १०८ )

सं० १७०८ मार्गशिरशु० ९ रविवार के दिन छा०  
यधराजने तथा कडुबामठागुप्ताधुपायी मापची लाधाजीने  
श्री पार्वनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित किया ।

( १०९ )

सं० १९८३ ज्येष्ठशु० ३ के दिन कडुबामठागुप्तायी  
वराह के ठाकुर रत्नपाल मा० ठाकुराणी रघादेवीने श्री  
सुमतिनाथजी का विम्ब करवाया, भित्तकी प्रतिष्ठा धादवी  
ठगपासने की ।

( ११० )

सं० १९९९ फाल्गुनशु० २ बुधवार के दिन वराह

( २२७ )

नगर निवासी व्य० द्वारमलने पिताश्री माजनसिंह के पुण्यार्थ  
श्री वासुपूज्यस्वामी का विम्ब करवाया ।

( १११ )

सं० १३६४ वैशाखशु० १३ के दिन श्रे० छाड़राज पुत्र  
क्षेमराज भा० जयतुदेवी पुत्र केलहण भा० लूणीवाई पुत्र  
हरपाल भा० कर्पूरदेवी पुत्र रत्नसिंहने भा० गौरादेवी महित  
काका देवल, पुण्यपाल, पिता पितृव्य नरपाल के श्रेयार्थ  
श्रीआदिनाथ प्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्री  
महेन्द्रसूरि के प्रदुधर श्रीअमयदेवसूरिने की ।

( ११२ )

सं० १४३६ वैशाखकृ० ११ सोमवार के दिन श्रीमाल-  
ज्ञातीय व्य० बीवा, भा० हमीरदेवी के पुत्र भूदेवने अपने  
माता पिता के कल्याणार्थ श्रीपार्श्वनाथप्रभु का विम्ब कर-  
वाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीविजयप्रभसूरि के  
पदुधर श्रीउदयानन्दसूरिने की ।

( ११३ )

सं० १४७९ माघकृ० ७ सोमवार के दिन भावडार  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातिय व्य० भर्मराज के पुत्र सरवण-  
( श्रवण )ने पुत्र पर्वत के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का विम्ब  
श्रीविजयसिंहसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १५८ )

( ११४ )

सं० १६१७ पौषक० १ गुरुवार के दिन राजाधिराज श्रीमन्महाराज, रानी श्रीबाबादेवी के पुत्र श्रीभी ५ श्रीपार्श्व नाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिरापत्र निवासी छत्रुदासा में श्रीमासङ्गातीय भे० बीबा पूजा मूढाने अपने कर्मों के क्षयार्थ करवाई ।

( ११५ )

सं० १६१७ पौषक० १ गुरुवार के दिन राजा श्री कुम्भराजा राक्षिभीप्रभावतीदेवी के पुत्र श्रीभीमकिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिरापत्रनगरनिवासी श्रीभीमासङ्गातीय मह० बक्सिह, रंगराज, उदयवंत, धन पाठ संधरीने अपने कर्मों के क्षयार्थ करवाई ।

( ११६ )

सं० १५७८ माघक० शुक्रवार के महाराजाधिराज श्रीहरराज महाराज श्रीनन्दादेवी के पुत्र श्रीभीभीभी श्री भीतलनाथजी का विम्ब करवाया ।

( ११७ )

सं० १६११ वैशाख कृ० १० गुरुवार के दिन राजाधिराज महाराज श्रीमामिनरेखर राक्षिभीमदेवी के पुत्र

( २२९ )

श्रीश्रीश्री श्रीआदिनाथप्रभु का विम्ब थिरापद्रनिवामी श्री-  
भीमालङ्घातीय नीतूवाईने अपने कर्मों के श्रेयार्थ करवाया ।

( ११८ )

सं० १५११ ज्येष्ठकृ० ९ रविवार के दिन श्रीभीमाल-  
ङ्घातीय सं० सोना (सुवर्णराज) मा० सेतलदेवी पुत्र गान्धराज  
मा० मोलीबाई पुत्र कालूचन्द्र मा० कामलदेवी, भाता घर्मा,  
नरिया ने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीनमिनाथजी का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगन्ठीय भट्टा० श्रीउदय-  
देवसरिने बालहर ग्राम में की ।

( ११९ )

सं० १५०६ चैत्रकृ० ५ गुरुवार के दिन श्रीभीमाल-  
ङ्घातीय सं० जयसिंह मा० बापुदेवी के पुत्र वनगजने पितृ  
सारंग, भाता कर्मण(कर्मसिंह) के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी  
का विम्ब करवाया, जिसकी सविधि प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय  
श्रीवीरप्रभसरि के उपदेश से निउरवाड़ा ग्रामे में हुई ।

( १२० )

सं० १५३६ माघकृ० सोमवार के दिन उपकेशवंशीय  
आ० राणा, मा० रयणाबाई के पुत्र खरहत्थ आवकने  
स्वभार्या भाणिकबाई पुत्र लक्ष्मण, केशवण, कीर्त्ति, पौत्र  
मदराज, सरराज भाणिकराज महित पुत्र रावण के श्रेयार्थ

( ६३० )

शीर्षाक्षगण्डीय श्रीधरकेसरधरि के उपदेश से श्रीसमय  
नाथप्रभु का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १२१ )

सं० १५११ माघशु० ५ गुरुवार के दिन श्रीभीमाक्ष  
हात्तीय ध्य० कर्मसिंह मा० महीबाई पुत्र बाबा ( ध्यात्र  
सिंह )ने अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीमधिरनाथजी का  
विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीपू० महा० राजसिंहक  
धरि के उपदेश से श्रीधरिने बिराजमानगर में की ।

( १२२ )

सं० १५१० वैशाखशु० ३ बुधवार के दिन श्रीभी  
माक्षहात्तीय ध्य० सारंगदत्त मा० रंगीबाई क पुत्र लक्ष्मणने  
स्वभार्या पादूबाई पुत्र रहिया, दत्तपात्र सहित अपने पिता  
क और अपने श्रेयार्थ श्रीध्यानान्तिनाथप्रभु का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा नामेन्द्रगण्डीय म० श्रीसोमरत्नधरि के पद  
पर महा० श्री हेमसिंहधरिने की ।

( १२३ )

सं० १५२१ ज्येष्ठशु० ९ सोमवार के दिन पूंछपुरनिवासी  
उपकेन्द्रहाति में माहरगोत्रीय कुशलराज मा० केन्द्रदेवी के  
पुत्र माहरराजन अपने पितृव्य के तथा अपने श्रेयार्थ श्री  
धर्मधोत्रगण्डीय श्रीध्यानानन्दधरि के द्वारा श्रीसुमतिनाथ  
प्रभु का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २३१ )

( १२४ )

सं० १५३२ ज्येष्ठशु० १३ बुधवार के दिन उपकेश-  
झातीय व्य० कीका मा० सरस्वती पुत्र खेता मा० रंगी-  
नाई पुत्र रूपचन्द्रने आता देवराज के तथा अपने श्रयार्थ  
श्रीनमिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा मत्स्यपुर  
में भावहारगच्छीय श्रीभावदेवसूरिने की ।

( १२५ )

सं० १५६० वैशाखशु० ३ के दिन सं० खेता मा०  
हांसलदेवी के पुत्र सं० खेता के आता सं० अर्जुनदेवने स्व-  
भार्या अधिकादेवी, पुत्र सं० मांडन, आतृज सं० डूंगर, वना,  
जेसा आदि परिजनों के सहित बृद्धपितृव्य सं० मेहराज के  
श्रयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीसोमसुन्दरसूरि के पट्टघर श्रीकमल-  
सूरिने की ।

( १२६ )

सं० १५४३ ज्येष्ठशु० ११ के दिन श्रीश्रीमालझातीय  
व्य० ममघर मा० जीवनीदेवी के पुत्र व्य० धर्मसिंहने स्वमा०  
मणिकदेवी पुत्र महिराज, चरजा आदि सहित अपने श्रयार्थ  
श्रीशीतलनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीश्री-  
सूरिने तथा पूज्य श्रीसौभाग्यरत्नसूरिने की ।



( २३९ )

( १२७ )

सं० १५— माघकृ० २ गुरुवार के दिन सह्यात्रा  
ग्राम निवासी प्राम्बाटहातीय भे० धामा मा० पंमादेवी के  
पुत्र परवतन स्वमार्पा मटकुदेवी पुत्र कर्मज आदि कुटुम्बी  
जन सहित भीषिमसुनायकी का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा वृद्धतपायच्छीय भ० भीषिनसुन्दरसरिने की ।

( १२८ )

सं० १५२३ वैशाखशु० १३ क दिन प्राम्बाटहातीय  
भय० सुंदराज मा० अश्वदेवी के पुत्र हापाकन स्वमा०  
रत्नादेवी पुत्र बाबड़, बीरराज, जागा आदि कुटुम्बीजन  
सहित अपने भेयार्थ भीषमिनन्दनप्रभु का विम्ब कर  
वाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपायच्छनायक भीरुस्मीसागरसरिने  
भूषिगपुरमें की ।

( १२९ )

सं० १५२६ पौषकृ० २ गुरुवार क दिन कछीत्राया  
ग्राम निवासी ब्रह्माण्णच्छीय भीभीमासहातीय भ० रामा  
मा० रत्नदेवी के पुत्र परदेवन स्वमा० बीरुगदेवी पुत्र  
मांझर, मास्वर सहित अपने माता पिता क भेयार्थ भी  
सुमतिनायकी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भी बुद्धि  
सागरसरिने की ।

( २३३ )

( १३० )

सं० १५१७ वैशाखशु० १२ मंगलवार के दिन बालु-  
कढ़ ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० हलराज भा०  
हेलीबाई के पुत्र शिवसिंहने अपने पिता, माता तथा पूर्वजों  
के श्रेयार्थ श्रीश्रेयांसनाथ पंचतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा  
पिष्पलगच्छीय भट्टा० श्रीगुणरत्नसूरिने की ।

( १३१ )

सं० १५४८ वैशाखशु० १० रविवार के दिन पत्तन  
निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय सिद्धशाखा में शा० लक्ष्मणसिंह  
भा० मांजूदेवी पुत्र मदा ( मदनसिंह ) भा० मांकूदेवी पुत्र  
तेजसिंहने अपनी भा० मल्हादेवी सहित पिता, माता, आता  
एवं अपने श्रेयार्थ श्रीशीतलनाथजी का बिम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा पिष्पलगच्छीय श्रीरत्नदेवसूरि के पट्टघर श्री  
पद्मानन्दसूरि के द्वारा हुई ।

( १३२ )

सं० १४९९ कार्तिकशु० १५ गुरुवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्यव० सूरु भा० सुहवदेवी के पुत्र पता ( प्रताप-  
मल ) और रुद्रदेवने अपने कल्याणार्थ श्रीसंभवनाथजी का  
बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिष्पलगच्छीय त्रिमत्रिया  
श्रीधर्मशेखरसूरिने थारापद्र नगर में की ।

( २३४ )

( १३३ )

सं० १५१३ माघशु० ३ गुरुवार क दिन बराठदुमाम  
निवासी श्रीश्रीमालहातीय म सुरा मा० नाडीबाई के पुत्र  
हापराधने स्वमा० कासीदेवी, पुत्र समधर, सहसा, बरदेव,  
बीरा, पंचापन, महीराज सहित अपने पिता माता के भेषार्थ  
भीजादिनाचप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा प्रज्ञान  
गच्छीय श्रीमणिचन्द्रशरिने की ।

( १३४ )

सं० १५२७ पौषकु० ४ गुरुवार क दिन श्रीश्रीमाल  
हातीय सिद्धदासा में व्यव० दूदा मा० माबिकदेवी के पुत्र  
राधाने अपने माता के सहित अपने भेषार्थ श्रीसुमतिनाथजी  
का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलमच्छीय श्री  
विजयदेवशरि के शिष्य धासिमद्रशरिने की ।

( १३५ )

सं० १५३४ पौषकु० १० के दिन संस्कार धाम निवासी  
भे० मांजा मा० मासहबदेवी पुत्र मासह मा० तूबीबाईने  
अपने भेषार्थ भीजादिनाचप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा महा० श्रीलक्ष्मीसायरशरिन की ।

( १३६ )

सं० १४५० माघकु० ९ सोमवार के दिन भीमाल

( २३५ )

ज्ञातीय घाँघलियागोत्र में ठकुर हरिराज पुत्र ठ० हापराज  
ठ० जयपाल के श्रेयार्थ ठ० हेमराजने श्रीअजितनाथजी का  
विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय भ० श्री-  
जिनवल्लभसूरिने की ।

( १३७ )

स० १५३७ वैशाखशु० १० सोमवार के दिन श्रीवीर-  
वंशीय श्रे० मोखा (मोक्षराज) मा० रामतीबाई के पुत्र  
सुश्रावक देवराजने पुत्र नारद पूना सहित अपने श्रेयार्थ  
श्रीअंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीअनन्त-  
नाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पत्तननगर में  
श्रीसंघने करवाई ।

( १३८ )

सं० १५२७ माघकृ० ७ रविवार के दिन उपकेश-  
ज्ञातीय व्य० मांडन मा० कणुबाई पुत्र मोका मा० अदी-  
बाई द्वितीया मा० ममूबाई के पुत्र आल्हणने आता पांचा  
सहित अपने श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा जीरापल्लीय श्रीउदयचन्द्रसूरि के पट्टधर  
भट्टा० श्रीसागरचन्द्रसूरिने की ।

( १३९ )

सं० १५०५ वैशाखकृ० ९ शुक्रवार के दिन थिरापट्ट-

( २३९ )

नगर निवासी श्रीभीमासहातीय महाशनी साष्टा मा०  
फर्रुखदेवी पुत्र खेमराज मा० खेतलदेवीने पुत्र रामा सहित  
अपन कल्याणार्थ श्रीवितस्वामि श्रीनमिनाथजी का बिम्ब  
श्रीपू० मङ्गा० श्रीवीरप्रमद्वरि क सङ्गुपदेश से प्रतिष्ठित करवाया।

( १४० )

सं० १५१६ आषाढ रविवार के दिन श्रीभीमास-  
हातीय भे० बत्ता मा० बीमलदेवी के पुत्र शिवराजन अपने  
पिता, माता के अर्थार्थ श्रीवितस्वामिजी का बिम्ब पूर्णिमाप  
क्षीय श्रीगुणसङ्गद्वरि के पङ्कज श्रीगुणवीरद्वरि के उपदेश  
से तट्टेडाग्राम में मन्दिषि प्रतिष्ठित करवाया।

( १४१ )

सं० १५१६ माघकृ० ९ सोमवार क दिन प्राग्वाट  
हातीय भू० खोखा मा० कीर्तनदेवी पुत्र देवराजने मा  
सुसङ्गभी, पुत्र भरमा आदि सहित अपने आत्मकल्याणार्थ  
श्रीश्रीतलनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमा-  
पक्षीय श्रीदेवचन्द्रद्वरि के उपदेश से हुई।

( १४२ )

सं० १५०५ वैशाखशु० ३ बुधवार के दिन विरापट्ट  
नगर निवासी विरापट्टगण्डीय श्रीभीमासहातीय धु० बीर-  
रामलाल माह नरसिंह, वीररामल मा० पांचलदेवी के पुत्र

( २३७ )

इलाराज, अर्जुन और गोलराजने अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीविजयसिंहसूरिने की ।

( १४३ )

सं० १५२० चैत्रकृ० ५ बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय श्रे० शालिगने स्वभार्या गेरीवाई सहित पिता कालह-  
राज, माता रूपमति और अपने श्रेयार्थ भीकून्धुनाथजी का  
बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिण्पलगच्छीय त्रिमविया  
श्रीधर्मशेखरसूरि के पट्टघर श्रीधर्मसूरिने की ।

( १४४ )

सं० १५१५ वैशाखशु० १३ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-  
ज्ञातीय व्यव० मेहा भा० खंतलदेवी के पुत्र जयसिंहने स्व-  
भार्या जयमादेवी के सहित माता, पिता और अपने श्रेयार्थ  
श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
पिण्पलगच्छीय भट्टा० श्रीविजयदेवसूरि के उपदेश से श्री  
शालिमद्रसूरिने मजोहग्राम में की ।

( १४५ )

सं० १५२४ वैशाखशु० ३ सोमवार के दिन सिद्ध-  
सन्तानीय श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० लक्ष्मणसिंह भा० मंजूदेवी  
के पुत्र गणियाने भा० विजयदेवी, पुत्र आशुधर सहित

( १३८ )

पिता, माता के भेषार्थ भीभेषासनायत्री का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिम्पलमण्डीय भीठदयदेवधरि के पट्टघर भी रत्नदेवधरिने पचननगर में की ।

( १४६ )

सं० १५२९ फाल्गुनशु० २ शुक्रवार के दिन उपदेश पंथीय बड़हराध्यास में छा० दुरगा मा० लीलादेवी के पुत्र सुभावक विक्रमदेवने स्वमा परदादेवी, पुत्र व्याघ्रसिंह, मोहराज, छेमराज, छेत्रराज सहित पितृभ्य साधन के भेषार्थ अक्षगण्डीय गुरुभीमपकेश्वरधरि क उपदेश सं भीमसनायप्रभु का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १४७ )

सं० १५१० वैशाखशु० ३ के दिन ऊजग्राम निवासी प्रातःवाटवार्तीय ब्यब० बीरमदेव या० सनूबाई के पुत्र राधदेवने आरु हेमा, हीरा, बीसल मा० मण्डुबाई के पुत्र वर्धन, सांगा, सह्या, आदि इष्टुम्भीयनों क सहित पिता के भेषार्थ भीसुमसिनायत्री का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तथागण्डीय भीरत्नशेखरधरिने की ।

( १४८ )

सं० १५०७ फाल्गुनशु० ११ गुरुवार के दिन ब्यब० मोहराजने मा० महामलदेवी क भेषार्थ भीकृष्णनायत्री का

( २३९ )

विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा ब्रह्माणगच्छीय श्रीमणि-  
चन्द्रस्वरिने की ।

( १४९ )

सं० १३४१ ब्रह्माणगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे०  
साहद के श्रेयार्थ उसके पुत्र लापराजने श्रीधरस्वरि के द्वारा  
विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १५० )

सं० १५०३ ज्येष्ठकृ० ३ सोमवार के दिन भावडार-  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० मोनराज भा० मही-  
देवीने अपने पुण्यार्थ श्रीवासुपूज्यम्बामी का विम्ब कर-  
वाया, जिमकी प्रतिष्ठा श्रीकालिकाचार्यसन्तानीय पूज्य श्री  
वीरस्वरिने की ।

( १५१ )

सं० १५२७ माघकृ० ५ गुरुवार के दिन प्राग्वाट-  
ज्ञातीय शा० करणा भा० भापुदेवी के पुत्र वीढाने स्वभा०  
राजुलदेवी, पुत्र शा० पालराज आदि कुटुम्बीजन सहित  
श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा तपा-  
गच्छीय श्रीलक्ष्मीमागरस्वरिने की ।

( १५२ )

सं० १४७१ माघशु० ३ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय



( १४० )

भीदेदा मा० देवराजदेवी के पुत्र सुहराजने अपने पिता माता के सेवार्थ भीममलनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विष्णुसङ्गच्छीय त्रिमयिया भीषर्मप्रमहरिने की ।

( १५३ )

सं० १५०१ पौषक० भीमीमलहातीय से० नयनराज के पुत्र कर्कराजने पितृव्य सुहभा, मना, ईगर, बदा (जौर) माता पाठी के सेवार्थ भीममलनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सिद्धान्ती भीमोमचन्द्रहरिने की ।

( १५४ )

सं० १५१५ ज्येष्ठक० १ शुक्रवार क दिन महमदाबाद निवासी प्राग्वाट्यातीय म० लीकराज मा० मंथूरार्ज के पुत्र मदराज मा० मांजीबाईने अपने अपार्थ भीममलनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सुहसपापक्षीय भीमलसिंहहरिने की ।

( १५५ )

सं० १५२४ चैत्रक० ५ क दिन भीममलहातीय म मावराज मा० साखदेवी पुत्र राजाने मा० रज्जू, पुत्र बीरराज, सावरराज, रत्नराज सहित पिता माता और स्वसेवार्थ भीमपासनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा चारणपक्षीय महा० भीमलसिंहदेवहरिने की ।

( २४१ )

( १५६ )

सं० १५०६ माघशु० . . के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय  
श्रे० सूराने भा० रूपावार्ह, पुत्र धर्मराज के श्रेयार्थ, आविका  
सूढी तथा अपने श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया,  
जिमकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीधर्मशेखरसूरि के पट्टधर  
श्रीविजयदेवसूरिने की ।

( १५७ )

सं० १५१० फाल्गुन . ११ शनिवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्यव० पुण्यपाल भा० पाल्गदेवी पुत्र हीरा,  
हरियाने पुत्र नगराज नरपाल महित अपने आता ( हीरा )  
के श्रेयार्थ श्रीअभिनन्दनप्रभु का विम्ब करवाया, जिमकी  
प्रतिष्ठा भावडारगच्छीय श्रीकालिकाचार्यसन्तानीय श्री  
वीरसूरिने की ।

( १५८ )

सं० १३५९ ब्रह्माणगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे०  
ज्ञांज्ञाने पिता थिरपालश्रीमन्त के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी  
का विम्ब श्रीवीरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १५९ )

सं० १४४९ वैशाखशु० ६ शुक्रवार के दिन उपकेश-  
ज्ञातीय श्रे० वीका ( विक्रम ) ने पिता कुरसिंह माता कामल-

( २४९ )

देवी के भेयार्थ भीममतिनाथजी का विम्ब भीपार्थचन्द्रसरि के उपदेश से करवाया ।

( १६० )

सं० १५०३ ज्येष्ठकृ० ७ के दिन ब्रह्माणगच्छामुवासी मोरिग्राम निवासी श्रीभीमाष्टकासीप भ्य० छा० हीरा पुत्र बयराज मा० छाकीबाई पुत्र मण्डनमे मा० पाख्खाई पुत्र छा० समथर, धनराज सहित अपने भेयार्थ भीमामुपन्यस्वामी का विम्ब भीपन्जनसरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६१ )

सं० १४४२ वैशाखकृ० १० रविवार के दिन भीमाष्टकासीप भे० हरपाल मा० हीरादेवीने अपने भेयार्थ श्रीविक्रस्वामि—भीमादिनाथजी का विम्ब पिण्डमच्छीप भीसामर चन्द्रसरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६२ )

सं० १५०३ मार्गशिरकृ० ५ माषहारपच्छानुयासी—  
सं० हादा पुत्र सं० काळा मा० कमलाबाई के पुत्र भीमा, बेला, माळामे अपने भेयार्थ श्रीवीरसरि द्वारा भीममतिनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६३ )

सं० १४९९ में ग्राम्बाटकासीप भ० माळसतिह मा०

( २४३ )

माणिकदेवी के पुत्र ठाकुरसिंहने भार्या पातूदेवी, पुत्र वानर-  
राज आदि महित श्रीसोमसुन्दरसूरि द्वारा श्रीसुमतिनाथ-  
स्वामी का चिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६४ )

सं० १४८२ वैशाखकृ० ४ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय  
श्रे० देवराजने पिता आपमल, माता ऊमादेवी, पितृव्यरण-  
सिंह के श्रेयार्थ पिप्पलगच्छीय श्रीसागरमद्रसूरि द्वारा श्री  
संभवनाथजी का चिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६५ )

सं० १५२७ कार्तिककृ० ५ सोमवार के दिन थिरापद्र-  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशास्त्रीय व्य० कर्माण भा०  
हमीरदेवी के पुत्र नामराजने अपने पिता माता के श्रेयार्थ  
श्रीअजितनाथप्रभु का चिम्ब श्रीविजयसिंहसूरि के पट्टघर  
श्रीशान्तिनाथसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १६६ )

सं० १५५२ फाल्गुनशु० ३ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय  
नियूगोत्रीय व्य० जीता भा० वानूदेवी पुत्र भीमराज भा०  
वरजूदेवी द्वि० भार्या कामलदेवी के पुत्र रामचन्द्र, रग-  
राजने कंछोली पूर्णिमापक्षीय भट्टा० श्रीविजयरामसूरि के  
द्वारा श्रीसुमतिनाथजी का चिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २४४ )

( १३७ )

सं० १५३० ज्येष्ठशु० २ सोमवार के दिन प्राग्वाट  
जातीय लघुवासीय भे० हरदास मा० गोलीबाई पुत्र रामा  
मा० टक्कूबाईन अपने भेपार्य भीमजितनाथजी का विम्ब  
तपागण्डीय भीमस्मीसामरसुरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १३८ )

सं० १५३३ माघशु० १३ सोमवार के दिन सनाकुम्भ  
ग्राम निवासी भीभीमालजातीय भे० ठाकुरसिंह मा० कर्मा  
देवी पुत्र महासखन मा० माण्डवदेवी, पुत्र संचारणद्वय  
जयमाल सहित द्वि० मा० दबहुमारी या झाडादेवी ।  
भेपार्य भीसुमतिनाथजी का विम्ब पुर्विमापण्डीय महा० भी  
कमलप्रमसरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १३९ )

सं० १४८४ में प्राग्वाटजातीय ज्येष्ठ सापर के पुत्र  
ज्येष्ठ० गदाराखने अपने चाचा पचराब के भेपार्य भीमान्ति-  
नाथजी का विम्ब तपागण्डीय भीसोमसुन्दरसुरि के द्वारा  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७ )

सं० १४३६ वैशाखशु० ११ के दिन प्राग्वाटजातीय  
ज्येष्ठ० असरीर मा० बांसदेवी के पुत्र मामान अपने पिता

( २४५ )

माता के श्रेयार्थ श्रीमहावीरप्रभु का विम्ब श्रीपार्श्वचन्द्रसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७१ )

सं० १५२९ माघशु० १ बुधवार के दिन ब्रह्माणगच्छा-  
नुयायी श्रीमालज्ञातीय श्रे० भावराज भा० भावलदेवी के पुत्र  
रामाशाहने स्वभार्या लाडीदेवी के श्रेयार्थ पुत्र वरजू सहित निज  
पूर्वजों के श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का विम्ब श्रीविमलसूरि  
के पट्टघर श्रीवृद्धिमागरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७२ )

सं० १५३२ वैशाखशु० १३ सोमवार के दिन थारा-  
पट्टगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० ठाकुरसिंह भा०  
पाल्हरणदेवी के पुत्र उदयसिंहने भा० अहिषदेवी, पितृव्य  
फाफराज, कालूराज, झालिया के श्रेयार्थ श्रीशान्तिसूरि के  
द्वारा श्रीअजितनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७३ )

सं० १२०४ वैशाखशु० ३ गुरुवार के दिन पंढेरक-  
गच्छानुयायी देल्हा भा० देल्हीबाई के पुत्र रत्नमिह के  
श्रेयार्थ कुंवरसिंहने श्रीपार्श्वनाथजी का विम्ब श्रीशान्तिसूरि  
के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७४ )

सं० १५१३ वैशाख शु० ३ के दिन मूलसंघ में सर-

( २४६ )

स्वर्गीगच्छीय कुन्दकुन्दाचार्यसन्तानीय महा० श्रीसकल-  
कीर्ति के पदपर विमलेन्द्रकीर्तिगुरु क द्वारा हम्मदजातीय  
मे० बनद मा० बामदेवी, पुत्र काला मा० पार्वीदेवी,  
आता कीका मा० गोमतिदेवी, आता शिवसिंह, आता  
पूनमचन्द्र, वत्सराजन श्रीभेयांसनाथनी का विम्ब करवाया।  
( यह मूर्ति दिव्यवरसम्प्रदाय की है )

( १७५ )

सं १५३७ ज्येष्ठ शु० २ सोमवार के दिन वीरबंशीय  
मे० रत्ना मा० रत्नदेवी पुत्र मे० बनराज सुभादकन मा  
शशीबाई पुत्र पार्थदेव पदराज सहित अपनी भार्या क  
भेयार्थ अचलगच्छीय श्रीवपकशरहरि के उपदेश से श्री-  
सुमतिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसको भावस्तीनगर में  
भी संभने प्रतिष्ठित किया।

( १७६ )

सं० १४८५ माघ क० ९ गुरुवार क दिन मावडाट-  
गच्छाजुषायी श्रीभीमासङ्गातीय ज्य० परमदेव मा०  
कर्गदेवी के पुत्र पुण्यपाळने पुत्र हीरा, हरदेव, यक्षपाळ  
तथा माता पिता के भेयार्थ श्रीविजयसिंहहरि के द्वारा श्री  
संभनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

( १७७ )

सं १५९१ पौषक० १ बुधवार के दिन श्रीभीमल

( २४७ )

ज्ञातीय श्रे० पूनमचन्द्र पुत्र डाहाचन्द्र मा० लाखुबाई पुत्र  
मेहा, समधर मा० लालीबाईने माता पिता के तथा अपने  
हितार्थ ब्रह्माणगच्छीय श्रीविमलसूरि के द्वारा वावड़ी ग्राम में  
श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १७८ )

सं० १४०४ कार्तिककृ० ९ सोमवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्य० नरदेव मा० नीनादेवी तथा पितृव्य  
क्षेमराज, विजयराज के श्रेयार्थ तथा भ्राता नरसिंह आदि  
सर्व के हितार्थ ( नरदेव ) के पुत्र तिलकाने पूर्णिमापक्षीय  
श्रीसूरि के द्वारा श्रीपद्मप्रभपंचतीर्थी प्रतिष्ठित करवाई ।

( १७९ )

सं० १३८७ वैशाखशु० २ रविवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० वयराजने अपने  
श्रेयार्थ श्रे० कुरसिंह सहित श्रीपार्श्वनाथजी का बिम्ब श्री-  
जगसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८० )

सं० ११४८ श्रीनागरदेवने अपने श्रेयार्थ करवाया ।

( १८१ )

सं० १४५२ वैशाखशु० ५ गुरुवार के दिन श्रे० राठ  
पुत्र महं० राणा के पुत्र लालचन्द्रने अपने माता, पिता,



( १४८ )

पितृभ्य विजयरात्र के भेषार्थ भीषणवित्तकछरिद्वारा श्री-  
छान्दिनायत्री का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८२ )

सं० १४५६ ज्येष्ठशु० १३ गुरुवार के दिन शम्भाट  
द्वातीय भे० मांगण मा० सुगुणादधी के पुत्र मधरात्रने  
आता गुणपाल, शगडुमल माता कुरदेवी क भेषार्थ श्री-  
संमरनायत्री का विम्ब भीरत्नप्रमछरि के उपदेश से प्रति-  
ष्ठित करवाया ।

( १८३ )

सं० १४६५ वैशाखशु० ३ गुरुवार के दिन श्रीभी-  
माष्टद्वातीय ज्येष्ठ० बीरा मा० बीरहणदेवी के पुत्र परवतमे  
अपनी माता क भेषार्थ श्रीसंमरनायत्री का विम्ब नानेन्द्र  
मण्डीय भीरत्नसिंहछरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८४ )

सं० १४५३ वैशाखशु० ३ गुरुवार के दिन श्रीभी-  
माष्टद्वातीय ज्येष्ठ० द्वाकने पितृभ्य नक्षीमल, माता मुहडा  
देवी, आता सीमा, मडुआ, पंचजन के भेषार्थ भीषणवित्तक-  
छरि के उपदेश से श्रीछान्दिनायपचतीर्षी प्रतिष्ठित करवाई ।

( १८५ )

सं० १४९६ कार्तिकशु० रविवार के दिन श्रीभीमाष्ट-

( २४९ )

झातीय श्रे० फला, मा० पोमीबाई, आता जयकुरुगिह के  
श्रेयार्थ (फलराज) के पुत्र रहियाने श्रीकुन्धुनाथजी का बिम्ब  
पिप्पलगच्छीय म० श्रीप्रीतिरत्नसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८६ )

सं० १४८४ वैशाखकृ० ११ रविवार के दिन श्रीश्री-  
मालझातीय व्यव० फूटरमल मा० हांसलदेवीने अपने  
पिता माता के श्रेयार्थ श्रीकुन्धुनाथजी का बिम्ब पिप्पल-  
गच्छीय श्रीधर्मशेखरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८७ )

सं० १०४६ चैत्रकृ० १ के दिन अचलपुर के मघने  
( बिम्ब प्रतिष्ठित ) करवाया ।

( १८८ )

सं० १४८९ वैशाखशु० ३ बुधवार के दिन श्रीश्री-  
मालझातीय श्रे० हीराने मा० हीरादेवी, पुत्र भाखर मा०  
साणीबाई अपने आता के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथजी का बिम्ब  
श्रीब्रह्माणगच्छीय श्रीक्षमासूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १८९ )

सं० १५५२ वैशाखकृ० ३ शनिवार के दिन श्रीकुंडी-  
शाखा के श्रीश्रीवंशीय व्यव० गहिआ मा० सांशुबाई पुत्र  
करणराज मा० तारू पुत्र पांता मा० रामतीबाईने पिता के

( २५० )

शेपार्थ अक्षयगण्डीय भीतिहान्तसागरधरि के उपदेश से भीष्मपुनायत्री का विम्ब करवाया, जिसको संपने प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९० )

सं० १७९९ कार्तिक० पूर्णिमा गुरुवार क दिन भी भीमालहातीय ज्य० अर्जुनदेव मा० काष्मीरदेवी पुत्र साय पौत्र बनराजने अपने पितामह के तथा अपने शेपार्थ भीष्म-न्तिनायत्री का विम्ब विष्णुगण्डीय त्रिमयिया म० भीष्म-क्षेत्रधरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९१ )

सं० १५१५ कार्तिक० १४ गुरुवार के दिन मावहार-गण्डीयभीभीमालहातीय ज्य० मेहाबलने मा० लाम् बाई, पुत्र पुना, गंगा, सांगा, और पितृभ्य गेसा सहित अपने शेपार्थ भीष्मालहातीय का विम्ब भीष्मधरि के पञ्चर भी बिनदेवधरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९२ )

सं० १३०० वैशख० ८ मंगुवार क दिन सासुठा-योत्रीय ज्य० कर्मसिंह मा० बरजभी के पुत्र ज्य० साहबने भीदेवधरि के द्वारा भीष्मालहातीय का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २५१ )

( १९३ )

सं० १३१४ वैशाखशु० ९ बुधवार के दिन ओसवाल-  
ज्ञातीय ठाकुर श्रीदेल्हा भा० सुहृदादेवी के पुत्र शा० झांझण-  
देवने अपने पूर्वजों के श्रेयार्थ श्रीजयवल्लभसूरि द्वारा श्रीपद्म-  
प्रभस्वामि का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९४ )

सं० १५४७ वैशाखशु० ३ सोमवार के दिन प्राग्वाट-  
ज्ञातीय डीसाग्रामनिवासी व्य० लक्ष्मणने स्वभार्या रमकू-  
देवी, पुत्र लींवरराज भा० टमकूदेवी, तेजराज, जिनदत्त,  
सोमराज, सूरदेव आदि महित अपने कल्याणार्थ श्रीशान्ति-  
नाथजी का बिम्ब अंचलगच्छीय श्रीसिद्धान्तसागरसूरि के  
द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९५ )

सं० १५१७ मार्गसिरशु० १० सोमवार के दिन उष्टम-  
ज्ञीय शा० राणा भा० राणलदेवि के पुत्र सुश्रावक खरह-  
त्यने स्वभार्या माणिकदेवी तथा पुत्र लक्ष्मण महित अंचल  
गच्छीय श्री जयकेशरसूरि के उपदेश से श्री चन्द्रप्रभस्वामी  
का बिम्ब अपने पिता के श्रेयार्थ करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
श्रीसंघने करवाई ।

( १९६ )

सं० १४९४ श्रावणकृ० ९ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-

( १९२ )

इातीय व्य० समरदेव मा० मारहमदेवी के भेयार्थ पुत्र  
अमराजन पिप्पलगच्छीय त्रिमविया भीमर्ममरसरि के  
द्वारा भीमविधिनाथ पञ्चतीर्थी प्रतिष्ठित करवाई ।

( १९७ )

सं० १५०१ माघसु० १० सोमवार क दिन भीमाल-  
इातीय व्य० पर्वत मा० राजुदवी पुत्र सहाददर, मेहराज,  
महीपालने अपन पिता माता के भेयार्थ नागेन्द्रगच्छीय भी  
पद्मानन्दसरि के पङ्कपर भीमिनपत्रमसरि के द्वारा भीमपु  
नाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १९८ )

सं० १४८९ वैशाखसु० १ सोमवार के दिन भीभीमाल  
इातीय सं० सास्वराज मा० मयादवी क पुत्र शोस्वराजने  
अपन माता बडुजा के पुत्र माजन क भेयार्थ पिप्पलगच्छीय  
भी सोमचन्द्रसरि के द्वारा भीमान्तिनाथजी का विम्ब प्रति  
ष्ठित करवाया ।

( १९९ )

सं० १३०९ काषणसु० १३ बुधवार के दिन सोराथा  
योष्ठिक शा० हरदेवन अपन पुत्रों तथा अपने भेयार्थ भी  
पाथेनाथ प्रभु का विम्ब चर्मपोषमच्छीय भीजमरप्रमसरि के  
द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २५३ )

( २०० )

सं० १२१७ वैशाखकृ० १ के दिन ब्रह्माणगच्छीय श्री-  
प्रद्युम्नसूरि के द्वारा व्य० जोगराज के पुत्र विणुचन्द्र के  
श्रेयार्थ ( विम्ब ) प्रतिष्ठित करवाया ।

( २०१ )

सं० १४१२ ज्येष्ठशु० १३ गुरुवार के दिन श्रे० लूण-  
सिंह पाल के पुत्र विजयराजने अपने कल्याणार्थ श्री-  
अम्बिकाजी का विम्ब श्रीमाणिक्यसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित  
करवाया ।

( २०२ )

सं० १४३७ वैशाखशु० ११ सोमवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय कालदेवने पितृव्य तथा माता किसलदेवी के  
श्रेयार्थ पिष्पलगच्छनायक श्रीजयतिलकसूरि के द्वारा श्री-  
ऋषभदेवजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २०३ )

सं० १२६१ में शान्तू आसल सं० धारणने ( विम्ब  
प्रतिष्ठित करवाया । )

---

१ बुद्धिसागरजी के जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह के द्वितीय-  
भाग के लेखाङ्क ९३१ में जयतिलक को धर्मतिलक भी लिखा है ।

( ५५४ )

( २०४ )

सं० १५७२ कार्तिकशु० २ सोमवार के दिन भी  
आदिनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

भोजकों की सेरी के आदिनाथचैत्य में पातुमूर्तियाँ-

( २०५ )

सं० १४८० कात्थगुप्तशु० १० बुधवार के दिन कोरंट  
गण्डीय भीमभाचार्यसन्तानीय उपकेश<sup>का</sup>तीय भे० हेमराज  
मा० मरमीबाई पुत्र बनराज मा० तारु पुत्र आस्ता मा०  
आशुदेवी के पुत्र हेमराज, सांगण मा० मामिनीने भीआदि  
नाथचतुर्विंशतिदिनपट्ट भीरुपुरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २०६ )

सं १४७९ चैत्रशु० १ गुरुवार के दिन भीभीमाज  
कातीय मंत्री वीरदेव मा० सखमादेवो के पुत्र वत्सराज मा०  
रामादेवी के भेयार्थ वीरदेव क पुत्र देवराज, बनराज व  
भी आदिनाथचतुर्विंशतिपट्ट करवाया, विषुवकी प्रतिष्ठा द्वारा  
पद्मगण्डीय भी छान्तिपुरिन की ।

( २०७ )

सं० १५८२ वैशाखशु० २ के दिन पत्तननगर निवासी  
भीभीमाजकातीय भे० नरवद मा० जीविनी पुत्र विजय  
राज, हरराज, विजयराज मा० वयप्रलदेवी के पुत्र राज

( २५५ )

राजने अपनी पितामही लीलादेवी के श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय प्रधान-शाखीय श्रीकमलप्रभसूरि के उपदेश से हुई ( लीलादेवी नरवद की द्वि० भार्या होगी )

( २०८ )

सं० १४८३ वैशाखशु० ५ गुरुवार के दिन उपकेश-वशीय सं० जसराजने मा० चांपलदेवी, पुत्र वीसल, कन्या वडलीबाई के सहित स्वश्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पडेरकगच्छीय श्रीशान्तिसूरिने की ।

( २०९ )

सं० १५०५ माघशु० १० रविवार दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० कर्मसिंह मा० हासदेवी पुत्र श्रे० नरपति सुश्रावकने स्वभार्या नयनादेवी, प्रमुख परिजनों के सहित माता पिता के श्रेयार्थ अंचलगच्छाघिराज श्रीश्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीसुविधिनाथजी का बिम्ब करवाया, श्रीसंघने उसकी प्रतिष्ठा की ।

( २१० )

सं० १५०३ माघशु० १३ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मालदेव मा० कामलदेवी पुत्र व्य० केलहा मा० हर्ष-देवी पुत्र व्य० मंडन मा० देहीबाईने पुत्र व्य० बेलराज,



( २५६ )

गेलराम आदि परिवारों के सहित श्रीधर्मनाथजी का विम्ब  
अपन कन्याभार्य करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय  
भीरत्नशेखरसरिने की ।

( २११ )

सं० १५१५ वैशाखशु० ३ अतिवार के दिन बीजापुर  
निवासी जोगबालुदासीय दोशी बसराज मा० बसमाबाई पुत्र  
दो० अमरचन्द्र मा० देवबी के पुत्र दो० छत्रमछने स्वमा०  
कामछदेवी, द्वि० मा० हीरदेवी पुत्र दो० बनराज, दो०  
बनराज मा० मोही, बनराज पुत्र कान्हा दगड प्रमुख परि  
वारों के सहित श्रीधर्मनाथजी का विम्ब श्रीसरि क द्वारा  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( २१२ )

सं० १५१५ वैशाखशु० २ गुरुवार के दिन प्राग्वाठ  
जातीय भे० वागमछने मा० पोमी पुत्र बेलराज मा० डांवी,  
पुत्र बीरदब सहित अपन भेयार्य श्रीचन्द्रप्रमप्रसू का विम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सिद्धान्तमच्छीय म० श्रीसोम  
चन्द्रसरिने की ।

( २१३ )

सं० १५३८ वैशाखशु० ५ बुधवार के दिन श्रीभीमाठ  
जातीय भे० बीराने मा० मसीबाई पुत्र आधराज, मनुदेव,  
चतुदेव देवराज ईगारजी, अदुराज सहित अपने भेयार्य श्री

( २५७ )

चन्द्रप्रमस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा चैत्र-  
गच्छीय म० श्रीरत्नदेवस्वरि के पट्टधर भट्टा० श्रीअमर-  
देवस्वरिने की ।

( २१४ )

सं० १५२५ भाषक० ६ दिन चांपानेरनिवासी गुर्जर-  
ज्ञातीय महाजन नरसिंहने स्वभा० आशूबाई, पुत्र जिनकाम,  
पुत्र पद्मकिरण, श्रीवत्सराज, पहिराज आदि स्वपरिजनों सहित  
अपने श्रेयार्थ श्रीनमिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीलक्ष्मीमागरस्वरिने की ।

( २१५ )

सं० १५३३ वैशाखशु० ६ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल  
ज्ञातीय श्रे० कर्मसिंह भा० लाछूबाई पुत्र श्रे० अमरराजने  
भा० देसलबाई सहित अपने पिता-माता के तथा स्वश्रेयार्थ  
श्रीसुविधिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा  
नागेन्द्रगच्छीय म० श्रीगुणदेवस्वरिने थिरापट्टनगर में की ।

( २१६ )

सं० १२४४ फाल्गुनशु० ३ बुधवार के दिन आम्रयक्ष  
पुत्र आमूने अपनी माता राजिमति के श्रेयार्थ प्रभुविम्ब  
करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीमतिप्रमस्वरिने की ।

( २५८ )

( २१७ )

सं० १५४५ कार्तिक ८० २ सोमवार के दिन गाँफ्राम निवासी श्रीभीमाछाटीय मं० भीमराज मा० नामिनी पुत्र कन्देया मा० पुतलीचार्ने अपने माता पिता के भेषार्थ श्रीमतिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी सविधि प्रतिष्ठा पूर्विमाषधीय श्रीसाधुसुन्दरधरि के पङ्कपर श्री श्री श्रीदेव सुन्दरधरि के उपदेश से हुई ।

( २१८ )

सं० १४८१ पौष ८० ८ बुधवार के दिन श्रीभीमाछाटीय व्य० विरूमा मा० अमरदेवी क पुत्र हरप्रबने अपने माता पिता के भेषार्थ श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय श्रीपद्मानन्दधरिने की ।

( २१९ )

सं० १५०३ ज्येष्ठ १० ९ बुधवार के दिन व्य० मेरम मा० मास्देवी के पुत्र मदनने अपने पुत्र श्रीरजराज के सहित अपने भेषार्थ श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा हरदगच्छीय सत्यपुरीय महा० श्रीपार्थ पन्द्रधरिने की ।

( २२० )

सं० १५१३ माघ ३० ३ बुधवार के दिन उपदेश

( २५९ )

ज्ञातीय पर्वजगोत्रीय व्य० शिव के पुत्र देवराजने अपनी मा० देवली के सहित माता संसारबाई के श्रेयार्थ श्रीपद्म-प्रभस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा बड़गच्छीय श्रीमर्वदेवस्वरिने की ।

( २२१ )

सं० १५१० माघशु० १० बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० श्रवण, कालू तथा समघने पिता भामट, माता मीनलबाई के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुस्त्नस्वरि के उपदेश से मविधि वयणाग्राम में हुई ।

( २२२ )

सं० १५६५ ज्येष्ठकृ० २ के दिन मुनिमहिमेरुने श्रीपार्श्वनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित किया ।

( २२३ )

सं० १७८५ मार्गशिरशु० ५ के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय वीरा जसराजने स्वश्रेयार्थ श्रीधर्मनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा कडुआमतानुयायी शाहाजी लाधाजी थोभनजीने करवाई ।

( २२४ )

सं० १४११ ज्येष्ठकृ० ९ शनिवार के दिन श्रीश्रीमाल-

( २३२ )

( २३२ )

सं० १६११ वैशाखशु० १० बुधवार के दिन पिराह नगर निवासी श्रीभीमालक्ष्मीय शृङ्गछासा में सेवक पुत्र मठ हसरामने स्वकर्मभयार्थ श्रीमादिनाथजी का विम्ब करवाया ।

( २३३ )

सं० १५६८ माघशु० ५ शुक्रवार के दिन पिडाठभा श्राव निवासी प्रद्याणगच्छानुयायी श्रीभीमालक्ष्मीय भे० ससराम मा० सलम्बबाबाई के पुत्र पासरावने अपने तथा माता, पिता के भेयार्थ श्रीचन्द्रप्रमस्वामी का विम्ब मुनिचन्द्रहरि क द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २३४ )

सं० १५६९ ज्येष्ठशु० ५ सोमवार क दिन भे० सेवक कासरामने श्रीपामनाथजी का विम्ब ( प्रतिष्ठित ) करवाया ।

( २३५ )

सं० १५१८ फाल्गुनशु० ९ सोमवार के दिन उपकर्म श्रातीय छाह नवलमठ मा० नामसबाई क पुत्र दवराम मा० माणदेवीने अपने भेयार्थ श्रीसंमबनाथपरचरीर्षी करवाई जिसकी प्रतिष्ठा माण्डारगच्छीय भ० श्रीमाणदेवहरिने की ।

( २३६ )

सं० १५३९ ज्येष्ठशु० ३ रविवार क दिन पटल घा

( २६३ )

सामन्तराज भा० कमीदेवी के पुत्र वत्सराजने स्वभा०  
द्वीपदेवी, रत्नदेवी, आता हीराके पुत्र ठाकुरदेव प्रमुख  
कुटुम्बी जनों के सहित श्रीविमलनाथ प्रभु का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छनायक श्रीलक्ष्मीसागरसूरिने की ।

( २३७ )

सं० १४८८ कार्तिकशु० ३ बुधवार के दिन अंचल-  
गच्छीय श्रीजयकीर्तिसूरि के उपदेश से नागरजातीय परी-  
क्षकगोत्रीय व्य० धंधराजने भा० आल्हणदेवी, पुत्र हापराज  
के श्रेयार्थ श्रीअभिनन्दनम्बामी का विम्ब करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा श्रीसूरिने की ।

( २३८ )

सं० १४९९ कार्तिककृ० २ रविवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्य० वासरदेव भा० रामलदेवी ( के पुत्र )  
धनराजने आता तेजपाल के श्रेयार्थ पिप्पलगच्छीय त्रिम-  
विया श्रीधर्मगेखरसूरि के द्वारा श्रीशीतलनाथजी का विम्ब  
थिरापद्रनगर में प्रतिष्ठित करवाया ।

( २३९ )

सं० १५२० वैशाखशु० ५ बुधवार के दिन श्रीश्री-  
वंशीय ठ० कन्हैयालाल पुत्र सारगदेव भा० हरखादेवी के  
पुत्र महिराज सुश्रावकने स्वभा० कुवरदेवी, आता शिवराज,

( २६४ )

सिहराज, चतुर्वराज तथा पुत्र जेठमल के सहित माता पिता के भेषार्थ अंबलगञ्जीय भीमपकेश्वरधरि के उपदेश से श्रीवासुपुन्यस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भीसंघने करवाई ।

( २६० )

सं १५२५ ज्येष्ठशु० ५ सोमवार क दिन बयसाड़ा ग्राम निवासी भीभीमालङ्घाटीय व्य० सठस्र मा० ब्रेमी के पुत्र व्य० सिहराजने स्व मा० लीलादेवी (लाङ्कमारी) पुत्र महिराज मोहराज आदि कुटुम्बी घरों के सहित परम कन्यास क लिये श्रीकुम्पुनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा अम्बाजगञ्जीय भीवीरधरिने की ।

( २६१ )

स० १५८१ भाषष्ठ० १० शुक्रवार के दिन भीभीमालङ्घाटीय बृहधाम्ना में सीनाराम निवासी भे० लालचन्द्र मा० लीलादेवी पुत्र बत्सराम मा० बीमलदेवीन पुत्र बनराज, हंसराज कुटुम्बीघरों के सहित भीषान्तिनाथजी का विम्ब नियमप्रमाणक भीमानन्दधरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २६२ )

सं १५२३ वैशाखशु० १२ के दिन मुधिरापुर निवासी प्राग्वाट्याटीय व्य० मेहराज मा० लोपार्थ क पुत्र महिम

( २६५ )

राजने स्वमा० मरघू पुत्र लटकनदेव, आता नरवद आदि कुटुम्बीजनों के सहित अपने श्रेयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीलक्ष्मी-सागरसूरि के द्वारा हुई ।

( २४३ )

सं० १५०६ माघशु० ५ रविवार के दिन ब्रह्माण-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० पेथड़ पुत्र देसल मा० महिगलवाईने अपने श्रेयार्थ जीवितस्वामि श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब श्रीपञ्जूनसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २४४ )

सं० १४९३ फाल्गुनशु० १० शुक्रवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय श्रे० आलहणसिंह मा० लाड़ीवाई के पुत्र श्रे० भूमवराजने अपने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीसूरि के द्वारा श्रीशीतलनाथप्रभु का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २४५ )

सं० १४२२ ज्येष्ठशु० ५ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० पीपाने पिता लक्ष्मण, माता लक्ष्मणी, पितृव्य सिंहाराज के श्रेयार्थ श्रीविमलनाथ प्रभु का विम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीमुनिप्रमसूरिने की ।

( २४६ )

सं० १५६४ वैशाखशु० ३ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-



( २९९ )

जातीय व्य० धीरदेव मा० मृंगारदेवी के पुत्र धीरमदेव मा० हेमदेवी के पुत्र वेठरावने पिता माता के भेषार्थ श्रीवासु पूज्यस्वामी की पक्षतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्विमा पक्षीय श्रीरत्नदेवसरस्वति के उपदेश से हुई ।

( २४७ )

सं० १५८१ माघशु० ५ गुरुवार के दिन आदित्यपुर निवासी श्रीभीमासहायीय महं० रत्नराज पुत्र... मा० प्रीतम देवीने अपने कुटुम्बीयों क भेषार्थ श्रीमृनिमुक्तस्वामी की पक्षतीर्थी आगममच्छीय श्रीसोमरत्नसरस्वति के उपदेश से प्रतिष्ठित करवाई ।

( २४८ )

सं० १५०७ वैशाखशु० ११ सोमवार के दिन श्रीभी मासहायीय व्य० अयंतराज मा० बासुगदेवी के पुत्र आश्वपदेवने अपने पिता माता के साथ अपने भेषार्थ पिप्पलमच्छीय त्रिमयिया मङ्गल० श्रीचन्द्रप्रमसरस्वति के द्वारा श्रीवासुपूज्यस्वामी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( २४९ )

सं० १२९९ वैशाख शु० ७ गुरुवार के दिन श्रीमास हायीय भ० बयरबसिंह मा० विजयादेवी....पिता माता के भेषार्थ श्रीपाशनाथ प्रभु का विम्ब श्रीदेवेन्द्रसरस्वति के पङ्कज श्रीविनयन्द्रसरस्वति के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( २६७ )

( २५० )

सं० १६८१ व्यव० नानदेवने श्रीशान्तिनाथप्रभु का  
चिम्ब ( प्रतिष्ठित ) करवाया ।

( २५१ )

सं० १६२४ फाल्गुनशु० ४ मंगलवार के दिन श्री-  
सुरिने श्रीसुमतिनाथजी का चिम्ब प्रतिष्ठित किया ।

सुनारों की सेरी के पार्श्वनाथचैत्य में धातुमूर्तियाँ—

( २५२ )

सं० १५०८ वैशाखकृ० ४ सोमवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय श्रे० नयनराजने भा० टहिकुवाई, पुत्र श्रे०  
लक्ष्मणदेव, हेमराज और दूदा कुडुम्बसहित पिता माता के  
श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी का चिम्ब करवाया, जिमकी प्रतिष्ठा  
सिद्धान्तीय श्रीनोमचन्द्रसुरि के द्वारा हुई ।

( २५३ )

सं० १६१७ पौषकृ० १ गुरुवार के दिन राजाधिराज  
श्रीअश्वसेन राज्ञि श्रीवामादेवी के पुत्र श्री श्री श्रीपार्श्वनाथ-  
प्रभु का चिम्ब थिरापट्ट निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० सुरा  
धींगा के पुत्रोंने कर्मों के क्षय के लिये(प्रतिष्ठित) करवाया ।

( २१८ )

आमली सेरी के सुपार्श्वचैत्य में धातुमूर्तियाँ—

( २५४ )

सं० १५०८ ज्येष्ठसु० ७ बुधवार क दिन भीभीमाह  
 राष्ट्रीय सांडलगोत्रीय श्राद्ध हापराब मा० बीराबाई के पुत्र  
 दा० पोपट सुधाबकने मा० मास्तरनदेवी, दोहित्र लक्ष्मणदेव,  
 लक्ष्मण के सहित पुत्र भक्ता के भेषार्थ अंबडगच्छीय  
 भीमयक्षेपरसरि के उपदेश से भीमासुपूज्यस्वामी का विम्ब  
 करवाया, और उसकी प्रतिष्ठा भीसंपने करवाई ।

( २५५ )

सं० १४९९ वैशाखसु० ४ गुरुवार क दिन उपदेश  
 राष्ट्रीय कीकान पिता मास्तराब, माता मोलसबाई के  
 भेषार्थ भी नमिनाबजी का विम्ब करवाया, विमकी प्रतिष्ठा  
 माबडारगच्छीय भक्ता० बीरसरिन की ।

( २५६ )

सं० १५०८ ज्येष्ठसु० १० सोमवार क दिन प्राम्ना  
 राष्ट्रीय स्व० मोकसदेवन मा० दूयकदेवी, पुत्र हीराचन्द्र,  
 स्व० लक्ष्मणराब पुत्र ऊठल के सहित अपने भेषार्थ भीभेषांत  
 नाबजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा बीरापस्ती-  
 गच्छीय भीठदयचन्द्रसरिने की ।

( २६९ )

( २५७ )

सं० १६८३ वैशाखशु० ७ गुरुवार के दिन राजधन्यपुर  
(राधनपुर) निवासी श्रीश्रीमालजातीय शा० हरदासने मा०  
हीरादे सहित श्रीशीतलनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया  
. ... .. (यहाँ आचार्य का नाम होना चाहिये)

( २५८ )

सं० १५६७ ज्येष्ठशु० ५ बुधवार के दिन मूलसधीय  
शा० हीरादेवीने (पंचतीर्थी करवाई)

( २५९ )

सं० १२०९ उहूल की पुत्री ढोलिकाने (ढोलतदेवी)  
यह चतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया ।

राशिया की सेरी के अभिनन्दन चैत्य में  
धातुमूर्तियाँ—

( २६० )

सं० १५५३ आषाढशु० २ शुक्रवार के दिन पत्तन-  
निवासी प्राग्वाटजातीय बृद्धशाखा में स० सेंगा मा० हरग्वू  
पुत्र स० अमा (अमृतराज) ने मा० लीलादेवी पुत्र धेमा,  
सिन्धु, लखमण, अलवा, घना सहित अपने कल्याणार्थ  
श्रीमृनिमुव्रतस्वामी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा

( २६० )

पूर्णिमापक्षीय भीमपल्लीय मङ्गा० भीषारित्रपन्द्रहरि क  
पङ्कपर म० भीमनिपन्द्रहरि के उपदेश से हुई ।

( २६१ )

सं० १५१९ माघशु० ७ सोमवार क दिन धिरापर  
नगर निवासी भीषीमालङ्कातीय गांधिक हापरात्र मा०  
हमीरदेवी क पुत्र आगराजन प्यमा० पमुनादेवी पुत्र बेठा,  
छाम, मादा खेला के सहित पिता, माता, आता मंडन के  
भयार्थ भीषमनाथचतुर्विंशति दिनपङ्क करवाया, बिसफी  
प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय प्रधान मङ्गा० भीत्रयसिंहहरि के पङ्क  
पर भीषयप्रभहरि क उपदेश से हुई ।

मोदियों की सेरी के विमलनाथचैत्य में  
भासुमूर्तियाँ—

( २६२ )

सं० १५१५ फाल्गुनशु० ४ छनिवार के दिन भीषी-  
मालङ्कातीय रत्नपाल मा० रत्नादेवी क पुत्र छाह सामयवे  
मा ललितादेवी, पुत्र गौपल मा० रुविणी के भयार्थ,  
आता सं० दूंगरने मा० आसिदेवी पुत्र गोपा सहित मोझा,  
विश्वराजन भीनमिनाथपूज्य चतुर्विंशतिदिनपङ्क करवाया,  
बिसफी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय भीसापुररत्नहरि के पङ्कपर  
भीसाधुसुन्दरहरि के उपदेश से सपिनमर में हुई । ( प्रतीव

( २७१ )

ऐसा होता है कि भोज और विजयराज अविवाहित थे ।  
चारोंने मिलकर पट्ट प्र० करवाया । )

( २६३ )

सं० १५१९ मार्गशिरशु० ५ शुक्रवार के दिन श्रीश्री-  
मालज्ञातीय व्य० हिमाला मा० हिमादेवी के पुत्र वनराजने  
अपने श्रेयार्थ मा० चांपू, पुत्र पर्वत, नरवर, नायक, नल-  
राज, जुगराज, लक्षराज सहित श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का विम्ब  
अंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित  
करवाया ।

( २६४ )

सं० १५२० पौषकृ० ५ शुक्रवार के दिन श्रीमूलसंघीय  
व्य० कृष्णराज मा० झबुवाई पुत्र माणक मा० वारुवाई के  
पुत्र हरिदासने सरस्वतीगच्छीय भट्टा० सकलकीर्त्ति के पट्टधर  
भट्टा० श्रीविमलेन्द्रकीर्त्ति के द्वारा श्रीआदिनाथ का विम्ब  
प्रतिष्ठित करवाया । ( दिगम्बरमतीय )

( २६५ )

सं० १६११ फाल्गुनकृ० २ शुक्रवार के दिन कहुआ-  
मतानुयायिनी निसम्बवाईने और थिरापद्रनिवासी मुहत्तावाईने  
श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब ( प्रतिष्ठित ) करवाया ।

( २६६ )

सं० १६६१ फाल्गुनकृ० २ शुक्रवार के दिन गृहीरद्व-

( २७९ )

वत मा० ह्वासाई क पुत्र बापराजन भीमभिनन्दनस्वामी  
का विम्ब ( प्रतिष्ठित ) करवाया ।

( २६७ )

सं० १५८— ब्रह्मासक्त० ५ के दिन बलागरीत्राय  
निवासी प्राम्बाट्टातीय झाड़ इदगवने मा० आणीसाई पुत्र  
अयवंतराज सहित अपने कस्याणार्थ श्रीभेषासनाथजी का  
विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय मङ्गा० श्री  
शिवहयगुरि क उपदेश से हुई ।

सुतारों की सेरी के शांतिनाथचैत्य में धातुमूर्तियाँ

( २६८ )

सं० १४८३ ज्येष्ठशु० ९ मयलवार क दिन भीभीमाठ-  
वातीय व्य० महिपाल मा० भीनतसाई पुत्र हरिजन, रौं  
चापा, पान्हा, सिन्धु नरबदने पिता, माता, आता, तथा  
पुत्रों के भेषार्थ श्रीआदिनाथसुखचतुर्विंशतिविम्बपङ्क करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा चारपञ्चमपक्षीय भीष्मान्तिष्ठरिने की ।

( २६९ )

सं० १५१८ कार्तिकशु० १ सोमवार क दिन उपकेश  
वातीय नाहरमोत्रीय व्य० कृष्णचन्द्रने मा० कीशहयसाई  
पुत्र त्रिहुवा, महना, पैमा, खंनर सहित अपने पिता व स्व-  
भेषार्थ भीसुविधिनाथचतुर्विंशतिविम्बपङ्क करवाया, जिसकी  
प्रतिष्ठा

की ।

( २७३ )

( २७० )

सं० १५८७ वैशाखकृ० ७ सोमवार के दिन काका-  
ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय भे० साइआ पुत्र भे०  
सवाने भा० वानूवाई पुत्र लटकण भा० लाखणदेवी समस्त  
कुटुम्बी जनों के सहित श्रीशान्तिनाथप्रभु का विम्ब कर-  
वाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीसूरिने की।

( २७१ )

सं० १६१७ ज्येष्ठशु० ५ सोमवार के दिन ओमवाल-  
ज्ञातीय व्य० रायमल भा० श्रीवाई पुत्र हीरा भा० जीवा-  
वाई पुत्र सिंहराजने श्रीशान्तिनाथजी का विम्ब करवाया,  
जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीविजयदानसूरिने की।

( २७२ )

सं० १५१९ मार्गशिरशु० ६ शनिवार के दिन रत्नपुर-  
वासी प्राग्वाटज्ञातीय लघुशास्त्रा में मं० अरिसिंह भा० बाई-  
देवी पुत्र सं० गोपासुआवकने भा० सुलहश्री पुत्र देवदास,  
शिवदास, सहित अपने श्रेयार्थ अंचलगच्छाधिराज श्रीजय-  
केशरसूरि के उपदेश से श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया,  
श्रीसंघने उसकी प्रतिष्ठा करवाई।

( २७३ )

सं० १४९४ माघशु० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-



भारतीय स्प० साहबण भा० सोनइछदेवी के पुत्र संग्रामसिंहने पितृव्य छाड़ा के भेषार्थ पूर्णिमापक्षीय भीष्मयममद्यरि के उपदेश से बीड़न्पुनायस्वामी का विम्ब करवाया और भीसंपने उसकी प्रतिष्ठा करवाई ।

### श्री जीरापल्ली ( जिराउला ) तीये—

भीराबला पार्थनाय नाम से यह तीर्थ प्रसिद्ध है । इस पुस्तकगत लेखों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह तीर्थ पन्द्रहवीं शताब्दि में अधिक प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है; जिसका प्रारम्भ तेरहवीं शताब्दि का अन्त या चौदहवीं शताब्दि में हुआ होना चाहिये । इस वाचन बिना छपवाले सौचधिसखी मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा मगबास पार्थनाय की है । पहली, पाँचवीं, सोसहवीं, चौबीसवीं, पचीसवीं, छम्बीसवीं और सत्तासीसवीं देवकृतिका ऐसी हैं कि बिन में से कुछ पर तो लेख हैं ही नहीं और के लेख अतिभीर्ण और अस्पष्ट हैं । इनके सर्व देवकृतिकामों के शिखासेस इस में हैं । देवकृतिका नम्बर छियालीस, और अज्ञाने के शिखासेस १४११, सं० १४१२ छीसवीं देवकृतिका का द्वितीय और चतुर्थ में

रि के पट्टधर श्री रामचन्द्रसूरि का नाम है और तृतीय लेख में श्रीविजयसेनसूरि के शिष्य श्रीरत्नाकरसूरि का नाम है ।

सतरहवीं, अड़तालीशवीं और बियालीशवीं देवकुलिकाओं के लेखों में किसी भी आचार्य या साधु का नाम नहीं है, परन्तु देवकुलिकाओं के अतिरिक्त एक लेख के सर्व ही लेख पन्द्रहवीं शताब्दि के ही हैं । अन्तिम लेख सं० १४९२ का है । इस तीर्थ की प्रसिद्धि करवाने का अधिक श्रेय तपागच्छ के महान् आचार्य श्रीदेवसुन्दरसूरि के शिष्य श्रीसोमसुन्दरसूरि की शिष्य परम्परा में श्री जयचन्द्रसूरि श्री भुवनचन्द्रसूरि और श्री जिनचन्द्रसूरि को है ।

देवकुलिका नम्बर आठ, नौ, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पन्द्रह, उन्नीश, तेवीश और इक्कावन के शिलालेखों में श्रीसोमसुन्दरसूरि के चतुर्थ पट्टधर श्रीभुवनचन्द्रसूरि का नाम है । देवकुलिका नम्बर अठारह के लेख में कृष्णपिंगच्छ के श्रीजयसिंहसूरि का, देवकुलिका नम्बर बीस के लेख में धर्मधोषगच्छ के श्रीविजयचन्द्रसूरि का और देवकुलिका नं० बावीस के द्वितीय लेख में मल्लधारीगच्छ के श्रीविद्यामागरसूरि का नाम है । ये सर्व लेख सं० १४८३ भाद्रपदकृष्ण सप्तमी गुरुवार के हैं । इन लेखों से प्रगट होता है कि सं० १४८३ में जीरापछीतीर्थ में उक्त चारों



सूरि के पट्टधर श्री रामचन्द्रसूरि का नाम है और तृतीय के लेख में श्रीविजयसेनसूरि के शिष्य श्रीगुणाकरसूरि का नाम है ।

मतरहवीं, अडतालीशवीं और वियालीशवीं देवकुलिकाओं के लेखों में किसी भी आचार्य या साधु का नाम नहीं है, परन्तु देवकुलिकाओं के अतिरिक्त एक लेख के सर्व ही लेख पन्द्रहवीं शताब्दि के ही हैं । अन्तिम लेख सं० १४९२ का है । इस तीर्थ की प्रसिद्धि करवाने का अधिक श्रेय तपागच्छ के महान् आचार्य श्रीदेवसुन्दरसूरि के शिष्य श्रीमोमसुन्दरसूरि की शिष्य परम्परा में श्री जयचन्द्रसूरि श्री भुवनचन्द्रसूरि और श्री जिनचन्द्रसूरि को है ।

देवकुलिका नम्बर आठ, नौ, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पन्द्रह, उन्नीश, तेवीश और इक्कावन के शिलालेखों में श्रीसोमसुन्दरसूरि के चतुर्थ पट्टधर श्रीभुवनचन्द्रसूरि का नाम है । देवकुलिका नम्बर अठारह के लेख में कृष्णपिंगच्छ के श्रीजयसिंहसूरि का, देवकुलिका नम्बर बीस के लेख में धर्मघोषगच्छ के श्रीविजयचन्द्रसूरि का और देवकुलिका नं० बासीस के द्वितीय लेख में मल्लधारीगच्छ के श्रीविद्यासागरसूरि का नाम है । ये सर्व लेख सं० १४८३ भाद्रपदकृष्णा सप्तमी गुरुवार के हैं । इन लेखों से प्रगट होता है कि सं० १४८३ में जीरापछीतीर्थ में उक्त चारों

आचार्यों का एक साथ चतुर्मास था और इन आचार्यों के दक्षिणार्ध अनेक समीपवर्ती ग्राम नगरों से व्यक्ति और संघ जाये थे । कलबर्गी नगर का संघ अधिक उल्लेखनीय है । इस संघ के व्यक्तियों द्वारा विनिर्मित उक्त देवकुलिकाओं में श्रीहृषिकेशचन्द्रप्रिय का नाम है, जिस से प्रगट होता है कि कलबर्गी में अधिकतर बौद्ध तथागच्छक अनुयायी थे । इस समय तक बीरापल्ली एक प्रसिद्ध खान बन गया था और उसकी समृद्धि इतनी बढ़ गई थी कि उक्त चारों महान् आचार्यों के चतुर्मास का भार एक साथ वहन करने की उस में क्षमता थी ।

पन्द्रहवीं, सोलहवीं, सतरहवीं और उन्नीसवीं शताब्दि के पूर्वार्ध का कोई लेख नहीं है । अन्तिम लेख बाबनवी देवकुलिका के चतुर्मासिकिका के सन्म पर उत्कीर्णित सं १८५१ आश्विन पूर्णिमा का है, जब कि श्रीरंग विमलप्रियजी द्वारा इस तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाया गया था और १०११) रुपये इस काम कार्य में व्यय हुए थे । एक से एकतालीस तक के सिक्कासेस इसी तीर्थ के हैं, जिनका हिन्दी अनुवाद नीचे दिया गया है । लेखों में जो तिथियाँ और दिवसों की जर्जीब मनमेसता है, मरसक सुसज्जाने का प्रयत्न करने पर भी कहीं कहीं पूरी असफलता रही है । एक उदाहरण नीचे देखिये—

निर्माण दिवस	देवकु०	लेखाङ्क	आचार्य
सं० १४८३ वै० कृ० १३ गुरुवार	२८	२१	जयकीर्तिसूरि
" " " "	२९	२३अ-य	"
सं० १४८३ प्र० वै० कृ० १३ गुरुवार	३०, ३४	२३, २७	"
" " " "	३५	२८	"
" प्र० वै० कृ० ७ रविवार	४३, ४४	३२, ३३	जयचन्द्रसूरि
, भाद्र० कृ० २ गुरुवार	५१	४०	भुवनसुन्दसूरि
" भाद्र० कृ० ७ शुक्रवार	५२(अ)	४१	"

देवकुलिका नं० २८, २९ के शिलालेख संवत् १४८३ वैशाखकृष्णा त्रयोदशी गुरुवार के हैं और देवकुलिका नं० ३०, ३४ के शिलालेखों में वैशाख के पीछे 'प्रथम' शब्द जुड़ा है, परन्तु तिथि, वार और आचार्य का नाम देखते हुए ये सर्व लेख एक ही दिन और एक ही मास के हैं। हो सकता है दोनों प्रथम लेख वैशाख के हो अथवा द्वितीय के। कभी कभी संभवतः तिथियों की ऐसी भी घटती बढ़ती हो सकती है कि दो महिनों की कुछ तिथियाँ और वार एक ही आ पड़ते हैं। परन्तु अन्तर तो यहाँ आ पड़ता है कि प्र० वैशाख कृष्णा त्रयोदशी को दिन गुरुवार था जो प्र० वै० कृ० सप्तमी को रविवार कैसे पड़ सकता था। इसी प्रकार भाद्रपदकृष्णा द्वितीया को और सप्तमी को क्रमशः गुरुवार और शुक्रवार कैसे पड़ सकते हैं ? जब कि लेखाङ्क ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, २० के

अनुसार मात्रपदकृष्णा सप्तमी को गुरुवार था। दो दो ठिपियों के टूटने पर ही ऐसा संभाव्य है, तो प्रायः संभव नहीं अति कठिन है।

( २७४ से २७६ )

देवकुलिका न० २, ३, ४

स्वस्ति श्री सं० १४८१ वैशाखशु० ३ के दिन बृह  
स्पतिपक्ष मङ्गल० श्रीरत्नाकरधरि क अनुक्रम से हुए श्री  
अमरसिंहधरि क पट्टाकर श्रीधरसिंहकलीधर के पाट को  
अलंकृत करनेवाले मङ्गलक श्रीरत्नसिंहधरि के उपदेश से  
बीससन्नगरनिवासी शाखाटवश को सुशोभित करनेवाले श्री०  
खेठसिंह का पुत्र श्री० देवसिंह का पुत्र श्री० लोसा मा०  
पिंगलदेवी उसके पुत्र सं० सादा, सं० दादा, सं० मादा,  
सं० कासा, सं० सिषा द्वारा इस तीर्थ के चैत्य में तीन देव  
कुलिकायें अपने कल्याणार्थ बनवाईं।

पूर्वचन्द्र नाहर एम ए. बी एल ने अपने 'लेखसंग्रह'  
प्रथम भाग के लेखाङ्क ९७७ को जो लेख उद्धृत किया है,  
इससे बहुत अधिक मिलता है। उन्होंने पिंगलदेवी के  
स्थान पर पिनलदेवी, सं० मूदा सं० मादा० क स्थान पर  
और देरक, दादा न लिख कर स्पष्ट देवल और दादा  
लिखा है और सं० सासा का नाम ही नहीं है जो बिषा  
रणीय है।

( २७९ )

( २७७ )

## देवकुलिका नं० ६.

सं० १४८७ पौषशु० २ रविवार के दिन अंचलगच्छ के श्रीमेरुतुङ्गसूरि के पट्टधर गच्छनायक श्रीजयकीर्तिसूरि के उपदेश से पुंगलनिवासी प्राग्वाटज्ञाति के शा० माणा पुत्र शा० जामद ( जामट ) की पत्नी सं० .. ..... ..

( २७८ )

## देवकुलिका नं० ७.

सं० १४८७ पौषशु० २ रविवार के दिन तपागच्छीय श्रीदेवसुन्दरसूरि के पट्टधर श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीमृणिसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि श्रीभुवनसुन्दरसूरि श्रीजिनचन्द्रसूरि के उपदेश से पत्तन निवासी प्राग्वाटज्ञातीय शा० लाला के पुत्र शा० नाथू शा० मेघा पुत्र भीमा, खीमाने अपने कल्याणार्थ देवकुलिका करवाई ।

लेखाङ्क ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, २० के अनुसार सं० १४८७ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के रोज तपागच्छ के देवसुन्दरसूरि के पट्टधर दुर्धरचारित्र धारक सोमसुन्दरसूरि मृणिसुन्दरसूरि जयचन्द्रसूरि भुवनसुन्दरसूरि के उपदेश से कलवर्गानगर के जिन निवासीयोंने देवकुलिकायें—आठ, नौ, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह,



( २८० )

पन्द्रह, उभीष्ट और तेहीष्ट बनवाई केवल उनका उक्त  
छेत्तों में वर्जित वंशों का परिचय ही यथाक्रम दिया  
जायगा । प्रतिष्ठाकर्त्ता इन सब के एक ही आचार्य हैं,  
अतः प्रतिष्ठाकर्त्ता का नामोल्लेख भी पुनः पुनः नहीं  
किया जायगा ।

( २७९ )

### देवकुलिका न० ८

××××××× फलवर्गनिवासी ओसवालझातीय  
श्री० चमसिंह की सन्तति में श्री० अयता मा० ठिठकूबाई  
के पुत्र समरसिंह, सं० मोक्षसिंहने श्रीरावसायैत्य में देव  
कुलिका बनवाई । श्रीपार्षनाथ की कृपा से मंगल होवे ।

( २८० )

### देवकुलिका न० ९

××××××× फलवर्गनगरनिवासी ओसवाल  
झातीय श्री चमसी सन्तानीय श्री० अयता बाई ठिठकू पुत्र  
सं० समरसिंह सं० मोक्षसिंहने श्रीश्रीरावसायैत्य में  
देवकुलिका करवाई । श्रीपार्षनाथ की कृपा से मंगल होवे ।

( २८१ )

### देवकुलिका न० १०

××××××× फलवर्गनगरनिवासी ओसवालझातीय

( २८१ )

शा० घणसी ( घनसिंह ) सन्तति में शा० जयता ( जयंत-  
सिंह ) भा० तिलकबाई पुत्र सं० समरसिंह सं० मोखसिंहने  
श्रीजीराउलातीर्थ के चैत्य में देवकुलिका बनवाई । पार्श्वनाथ  
की कृपा से मंगल होवे ।

( २८२ )

देवकुलिका नं० ११

××××××× कलवग्रानगरनिवासी ओसवाल  
कटारिया गोत्रीय कोठारी छाहड़ सामन्त की मन्तति में  
को० नरपति भा० देमाई के पुत्र सं० तूकदेव, पासदेव, पुनसी  
( पृण्यसिंह ), मूलाने जीरापल्लीतीर्थ के चैत्य में देवकुलिका  
करवाई । श्री पार्श्वप्रभु की कृपा से मंगल होवे । मेरा श्रेष्ठ  
कटारिया गोत्र है, मेरे पिता नरपति, मेरी माता देमाई हैं,  
और श्रीसोमसुन्दरस्वरिजी मेरे गुरु हैं जो श्रीछीलज ? मेड़ता  
मात्र की पौपालों में वन्दनीय गुरुदेवों के गुरुदेव माने जाते हैं ।

पूर्णचन्द्रनाहरने अपने ' लेखसंग्रह ' के प्रथम भाग में  
यह लेख कुछ अंश को छोड़ कर सारा लेखाङ्क ९७४ में  
उद्धृत किया है । उसमें नाहरजीने ' श्रीछालजमंडनमात्र-  
शालं ' उल्लिखित किया है; जिसका भी क्या अर्थ बैठता  
है ? समझ में नहीं आया । छालज की जगह छाहड़ होता  
तो भी कुछ संगति होती ।

( ६८२ )

( २८३ )

### देवकुलिका न० १२

××××× कसबगानिवासी ओसवालवासीय  
बरहियागोत्र के छा० सोसा की सन्तति में छा० उदयन  
मा० छीह के पुत्र सं० आशपासने जीरापल्ली चैत्य में देव  
कुलिका कराई, श्रीपादमाय की कृपा से मंगल होवे ।

( २८४ )

### देवकुलिका न० १३

××××× कसबगानिवासी ओसवालवासीय  
नाहरमोत्र में छा० बीगा की सन्तति में छा० उदयसी  
( उदयसिंह ) मा० वामरुदेवी क पुत्र छा० पचसिंहने जीरा  
ठसाठीर के चैत्य में देवकुलिका कराई । पार्थप्रभु की  
कृपा से मंगल होवे ।

( २८५ )

### देवकुलिका नं० १४

××××× कसबगानिवासी ओसवालवासीय  
साबरमोत्र में छा० पचसिंह की सन्तति में सं० माका मा०  
सं० पूर्ण के पुत्र अगसिंह, सं० खोजसी मा० बार्दीरू के  
पुत्र सं० कमलसिंहने अपनी माता कस्तूरी के अपार्थ पार्थ  
नाथ की कृपा से जीराठसाथैय में देवकुलिका कराई ।

( २८३ )

लेखाङ्क आठ में वर्णित वंश में प्रसिद्ध पुरुष धणसीह ही इस लेख में वर्णित धणसिंह हैं । अन्तर इतना ही है कि इस लेखाङ्क में गोत्र दिया है और उममें नहीं । दोनों कुल एक ही संतति के हैं ।

( २८६ )

देवकुलिका नं० १५

××××××× कलचर्गानिवासी ओसवालज्ञातीय सं० मलुसिंह की सन्तति में सं० रतना मा० वीरुवाई के पुत्र आमलसिंहने अपने पुत्र सं० गुणराज, सं० हंमराज के सहित पार्श्वप्रभु की कृपा से जीरावलार्चन में देवकुलिका बनवाई ।

( २८७ )

देवकुलिका नं० १७

सं० १४७४ श्रावणशु० ५ अर्निवार के दिन खरतर-पक्षीय सं० लूणा सन्तान में सं० झूला, हापल सन्तान में सं० मूला पुत्र भीमा, हीरु, बाल्हण ... .. सं० हीराने .....

( २८८ )

देवकुलिका नं० १८

सं० १४८३ भाद्रपद कु० ७ गुरुवार के दिन कृष्णर्षि-

( ६८९ )

( ९८३ )

### देवकुलिका न० १२

××××× कलवर्गानिवासी ओसवालवासीय  
बरहियागोत्र के छा० शांसा की सन्तति में छा० उदयन  
मा० छींदू के पुत्र सं० बाधपालने जीरापल्ली चैत्य में देव  
कुलिका करवाई, भीपार्थनाथ की कृपा से मंगल होवे ।

( ९८४ )

### देवकुलिका न० १३

××××× कलवर्गानिवासी ओसवालवासीय  
नाहरगोत्र में छा० बीपा की सन्तति में छा० उदयसी  
( उदयसिंह ) मा० बामलदेवी क पुत्र छा० पणसिंहने जीरा  
ललातीर्थ के चैत्य में देवकुलिका करवाई । पार्थप्रद की  
कृपा से मंगल होवे ।

( ९८५ )

### देवकुलिका न० १४

××××× कलवर्गानिवासी ओसवालवासीय  
साबसगोत्र में छा० धनसिंह की सन्तति में स० माछा मा०  
सं० रूनाई के पुत्र अयसिंह, सं० सोलसी मा० बाईरीरू के  
पुत्र सं० कमलसिंहन अपनी माता कस्तूरी के मेपार्थ पार्थ  
नाथ की कृपा से जीराठसाचैत्य में देवकुलिका करवाई ।

( २८३ )

लेखाङ्क आठ में वर्णित वंश में प्रसिद्ध पुरुष धणसींह ही इस लेख में वर्णित धणसींह है । अन्तर इतना ही है कि इस लेखाङ्क में गोत्र दिया है और उसमें नहीं । दोनों कुल एक ही संतति के हैं ।

( २८६ )

देवकुलिका नं० १५

××××××× कलवर्गानिवासी ओसवालजातीय  
मं० मलुसिंह की सन्तति में सं० रतना भा० वीरुवाई के  
पुत्र आमलसिंहने अपने पुत्र सं० गुणराज, सं० हंसराज के  
सहित पार्श्वप्रभु की कृपा से जीरावलाचैत्य में देवकुलिका  
बनवाई ।

( २८७ )

देवकुलिका नं० १७

सं० १४७४ श्रावणशु० ५ शनिवार के दिन खरतर-  
पक्षीय मं० लूणा सन्तान में मं० हूला, हापल सन्तान में  
मं० मूला पुत्र भीमा, हीरु, वालहण .. .... मं० हीराने  
..... ।

( २८८ )

देवकुलिका नं० १८

सं० १४८३ माद्रपद कृ० ७ गुरुवार के दिन कृष्णपिं-

( २८९ )

संपविष्णी राजदेवी के पुत्र सं० तुकदेव सं० सहदेवने बीरा-  
उठीचैत्य में चतुष्पिका बनवाई ।

( २९३ )

देवकुलिका न० २३

XXXXXXX कलचर्पोनिवासी श्रीमालझाठीय  
ठ० रूंगर मा० चपादेवी के पुत्र ठ० मोलसिंह रतनसिंहने  
बीरापल्लीतीर्थचैत्य में चतुष्पिका शिलर बनवाया ।

( २९४ )

देवकुलिका न० २८

सं० १४८३ वैशाखकृ० १३ गुरुवार के दिन अंबल  
मण्ड के भीमयक्तीसिंहरी के उपदेश से ओसवालझाठीय  
हुग्गेडगोत्र के शाह लक्ष्मणसिंह धा० भीमल धा० देवल  
धा० सारंग धा० सांझा मा० मेरुबाई, धा० पूजा, मंजा  
आदिने देवकुलिका करवाई ।

( २९५ अ )

देवकुलिका नं० २९

सं० १४८३ वैशाखकृ० १३ गुरुवार के दिन अंबल-  
मण्ड के भीमयक्तीसिंहरी के उपदेश से हुग्गेड( हुग्गेडिया )  
घास्ता में धा० लक्ष्मणी( लक्ष्मणसिंह ) धा० भीमल, धा०  
देवल, धा० सारंग के पुत्र धा० होसा मा० लक्ष्मीबाई धा०  
बापा, धा० रूंगर, धा० मोलाने देवकुलिका करवाई ।

( व )

... .. शा० सारंग मा० प्रतापरंजी के पुत्र  
 होसा भार्या लक्ष्मीदेवी, शा० चांपा, शा० हुंगर, मा०  
 की पुत्रवधू भीखी और कौतुकदेवी, पित्रव्य शा० हुंगर  
 देवगुरु की कृपा से तीन देवकुलिकायें अंघलाचार्य श्री-  
 मेरुतुद्रसूरि के पट्टधर श्रीजयकीर्तिसूरि के उपदेश से आरा-  
 पल्लीतीर्थचैत्य में करवाई ।

शिलालेखों का अध्ययन भी एक कला है । निम्न-  
 लेखों के अर्थकर्ता ही इस कला की जटिलता को समझ  
 सकते हैं । देवकुलिका नम्बर २८, २९ के लेखों में दुग्ध-  
 वंशी जिन जिन व्यक्तियों का नामोद्धेख है, वह इस दंग से  
 है कि अधिकांश के पारस्परिक सम्बन्ध का अनम्यस्त पाटकों  
 को सहज पता नहीं पड़ता । लेखाङ्क २९४ के अनुसार  
 लखसी ( लक्ष्मणसिंह ), भीमल, देवल, सारंग, पूजा और  
 भजा भ्रातृगण हैं । इनके मध्य में पुत्र आदि कोई विमाजक  
 शब्द नहीं है । विशिष्ट चिह्न 'शा' का प्रयोगक्रम भी  
 यही सिद्ध करता है ।

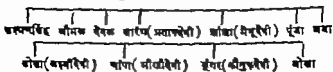
लेखाङ्क २९५ ( अ ) के अनुसार उपरोक्त स्थिति  
 को ध्यान में रखते हुए यही प्रतीत होता है कि होसा,  
 चांपा, हुंगर, मोखा भ्रातृगण हैं और ये सारंग के पुत्र  
 हैं । ( ब ) के अनुसार सारंग की पुत्रवधू भीखी और



शा० लक्ष्मणसिंह, मीमल, देवल या तो इस समय तक मर चुके हैं या निस्सन्तान हैं या देवकुलिकाओं के बनवाने में उनका द्रव्य नहीं लगा है, इसीलिये उनकी सन्तान और स्त्रियों का नामोल्लेख नहीं है । पूजा और भवा का भी द्रव्य देवकुलिकाओं के करवाने में व्यय नहीं हुआ प्रतीत होता है । शांका की स्त्री का नामोल्लेख होना और चारंग की स्त्री का नामोल्लेख लेसाह २९४ में नहीं होना प्रगट करता है कि देवकुलिका नं० २८ शांका ने अपने द्रव्य से बनवाई और अपने आता के नाम सौजन्यता और आत्मीयता के कारण अपने छिलालेख में उल्लेख करवाये ।

लेसाह २९५ ( अ ) से भी यही सिद्ध होता है कि होसाने द्रव्य व्यय किया और लेख में उसके आताओं का नाम होना उसकी सौजन्यता प्रकट करता है । लेसाह २९५ ( ब ) में बृंगर, चापा की स्त्रियों का भी नाम है तथा पितृव्य शा० पूजा का भी नाम है इस से सिद्ध होता है कि इस लेख में लिखने की व्यक्ति है उन सब का द्रव्य लगा है ।

### कुम्भेड ब्रह्मकुल ।



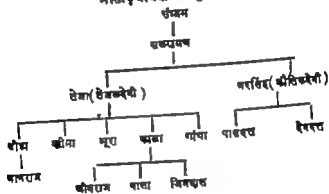
देवकुलिका नं० ३०, ३१, ३२, ३३, ३४ ।

सं० १४८३ वैशाखकृ० १३ गुरुवार के दिन अंचल-  
गच्छ के श्रीमेरुतुङ्गधरि के पट्टधर जगच्चूडामणि श्रीजय-  
कीर्तिधरि के उपदेश से पत्तनवास्तव्य ओसवालजातीय  
मीठड़िया गोत्र के शाह संग्राम पुत्र शाह सलखमण पुत्र  
शा० तेजा भार्या तेजलदेवी पुत्र शा० डीडा, शा० खीमा,  
शा० भूरा, शा० काला० शा० गांगा, शा डीडा पुत्र शा०  
नागराज, काला पुत्र शा० पासा, शा० जीवराज, शा०  
जिनदास, शा तेजा का द्वितीय भ्राता शा० नरसिंह भार्या  
कौतिक(कौतुक)देवी पुत्र शा० पासदत्त और देवदत्तने  
जीरापल्लीतीर्थ चैत्य में तीन देवकुलिकायें बनवाईं । श्रीदेव-  
गुरु की कृपा से उत्तरोत्तर मंगल वृद्धि होवे ।

३१ से ३४वीं नम्बर की देवकुलिकाओं पर भी लेख  
इसी प्रकार के सांगोपांग मिलते हुए कुछ परिवर्तन के साथ  
अलग अलग उत्कीर्णित हैं । उन में अन्तर इतना ही है कि  
३२वीं देवकुलिका शा० डीडा के पुत्र नागराज की पत्नी  
नारंगीने, ३३वीं देवकुलिका शा० नरसिंह की पत्नी रुबी  
भार्याने और ३४वीं देवकुलिका शा० खीमा की पत्नी  
खीमादेवीने अपने अपने श्रेयार्थ बनवाईं । उक्त लेख

में तीन देवकुलिकायें बनवाने का स्पष्ट उल्लेख है, परन्तु ऐसा ज्ञान पड़ता है कि दो देवकुलिका उपरोक्त लेख उगाने के बाद में बनावाई गई हों और बाद में उन पर लेख उत्कीर्णित हुए हों। भीठकिया गोत्रवंश का वृक्ष इस प्रकार है—

भीठकियाचहापोबहुस ।



( ३०१ )

देवकुलिका न० ३५

सं० १४८३ विद्यास क० १३ गुरुवार के दिन अथर्व षष्ठ के भीमस्तुष्टिहारि क पञ्चम भीमपक्षीर्तिहारि के उपरक्ष से स्वम्भतीर्थ निवासी भीमासीद्धातीय परीक्षक अमरा मा० माऊ के पुत्र परीक्षक गोपाल, प० राउल, प० रोठा मार्या दिव्य पुत्र प० पूना मार्या ऊरी, प० सोमा,

प० राउल पुत्र मोजा, प० सोमा पुत्र आशा और  
हिचकूने अपने श्रेयार्थ देवकुलिका (जीरापल्ली तीर्थ में)  
करवाई ।

पारी, पारीख और पारख गोत्र आज भी विद्यमान है  
जो परीक्षक का अपभ्रंश शब्द है । गिलालेखकोंने लेखों में  
परीक्षक न लिख कर 'परीक्ष' लिख दिया है ।

( ३०२ )

देवकुलिका नं० ३८ के स्तम्भ पर—

सं० १५३४ वैशाखकृ० १० सोमवार के दिन सं०  
रत्ना के मित्र, न्याति मलुकगोत्रीय सं० जीवा के पुत्र मं०  
मडन, जीवन, जीवदेव, खेता महित माडलगढ़ से ( यहाँ  
अभिवर्द्धित भाव से ) यात्रा करने के लिये आया ।

इस लेख की रचना थोड़ी होकर भी अजीबदंग की  
है । फिर भी रत्ना न्याति परिवार से यहाँ यात्रार्थ माडल-  
गढ़ से आया इतना तो स्पष्ट है ।

( ३०३ अ )

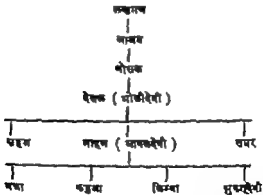
देवकुलिका नं० ४१

सं० १४२१ ज्येष्ठ शु० १२ बुधवार के दिन मूलनक्षत्र  
और सिद्धिनामक योग में उपकेशगच्छीय श्रीकृष्णदाचार्य-

१ लेखाद् ५२ में रविवार लिखा है ।

सन्तानीय भीष्मस्यारि के पङ्क को सुशोभित करनेवाले  
भीदेवगुप्तस्यारि के उपदेश से उपदेशदात्रीय भीष्मगोत्र के  
भीष्म के वंशज सा० ससमन पुत्र मावङ्ग पुत्र सा० गोसल  
पुत्र सा० देसल मार्या मोली पुत्र सा० सहस, सा० माहस,  
सा० समर सा० माहस मार्या मावङ्गदेवी पुत्र सं० भष्मा,  
सा० कङ्कमा, सा० सिम्बा, भगिनी सुकट् आदि के सहित  
साप्पी मावङ्गदेवी के द्वारा भीषार्चनाचरैत्य में आत्म  
कल्याण के लिये देवकुटिका करवाई ( व्यय समरने किया  
अधिक संभाव्य है )

### भीष्म गोत्र वंशवृक्ष



( व )

सं० १४८३ वैशाखकृ० ७ के दिन बृहस्पतिगण्डाधि  
पति भीदेवसुन्दरस्यारि के पङ्कपत्रों में सुकट् के समान भी-

( २९३ )

सोमसुन्दरस्वरि श्रीमृणिसुन्दरस्वरि श्रीजयचन्द्रस्वरि श्रीभुवन-  
सुन्दरस्वरि श्रीजिनसुन्दरस्वरि के उपदेश से श्रीमालज्ञातीय  
..... पुत्र ठ० सारंग पुत्र ठ० गुणराज पुत्र नागराजने  
अपनी भार्या के कल्याणार्थ यहाँ अग्रशिखर बनवाया ।

( ३०४ अ )

देवकुलिका नं० ४२

कल्याणकारी जय और अभ्युदय हो । “ प्रतिष्ठराजा  
के नन्दन और सुसीमाराणी के अंग से उत्पन्न श्रीपद्मप्रम-  
जिनेन्द्र रक्त कमल की प्रभा के ममान दिखाई देते हैं वे  
पवित्र करें । ” सं० १४२१ कार्तिक शु० ५ रविवार के  
दिन हस्तनक्षत्र में कोढ़ीनारनगरनिवासी आगमिकगच्छा-  
नुयायी मोढ़ज्ञातीय सुश्रावक झाल्हा, ममदेव, ठ० बीना,  
ठ० सणसव, जयता पुत्र सं० अजितने भार्या हिवा (शिवा)  
देवी आदि कुटुम्ब परिवार सहित भव को जीतने के लिये  
श्रीपद्मप्रमस्वामी का विम्ब करवाया । नेहड़ भार्या अहिंव-  
देवीने श्रीपार्श्वनाथ की देवकुलिका बनवाई ।

( व )

सं० १४८३ वैशाखशु० ७ के दिन मट्टारक श्रीदेव-  
सुन्दरस्वरि के पट्टधर सोमसुन्दरस्वरि मृणिसुन्दरस्वरि जय-  
चन्द्रस्वरि भुवनसुन्दरस्वरि जिनसुन्दरस्वरि के धर्मोपदेश से  
श्रीमालज्ञातीय विजयसिंह पुत्र जगतसिंह पुत्र गुणपति,

रत्नसिंह पत्नी कामुदेवी पुत्र रंगदेवने ( अपने ) करया  
पार्य देवकुलिका करवाई ।

( ३०५-३०६ )

देवकुलिका न० ४३, ४४

सं० १४८३ वैशाख० ७ रविवार के दिन उपगच्छ-  
नायक श्री देवसुन्दरछरि के पट्ट को बलहृत करनेवाले महा०  
श्रीसोमसुन्दरछरि श्रीहनुसुन्दरछरि श्रीवपबन्धरि के उप  
देव सं योमिनीपुर के निवासी धा० रूखा पुत्र हसराम,  
पुत्री हसादेवी पुत्र रंगदेवने करवाई ।

( ३०७ )

देवकुलिका न० ४५

सं १८८३ वैशाख० १३ के दिन उपमण्डाधिराज  
श्रीदेवसुन्दरछरि के पट्ट को बलहृत करनेवाले श्रीसोमसुन्दर  
छरि श्रीवपबन्धरि के उपदेव सं रत्नपुरनिवासी सं०  
सरुमण पुत्र सं० राधण, मंत्री गोसल पुत्र सोमप्रमराज भार्या  
रंगादेवी पुत्र सोमदेवने रंगादेवी के अपार्य ( देवकुलिका )  
करवाई ।

इन सत्तों में हनुसुन्दरछरि के नाम संभवतः हमलिये  
नहीं है कि ये दोनों आचार्य धीरापल्लीतीर्थ में उस समय  
विद्यमान नहीं थे । देवकुलिका न० ४१, ४२ के प्रतीय

लेखों में जो पश्चात्कर्त्ती और वैशाखशुक्ला सप्तमी के हैं, इन दोनों आचार्यों का नाम विद्यमान है। भुवनसुन्दरसूरि और जिनचन्द्रसूरि अनुक्रम से श्रीजयचन्द्रसूरि से छोटे हैं, इसलिये श्रीजयचन्द्रसूरि के लिये इनके उपस्थित होने पर ही इनका नाम देना मर्यादानुसार उचित है।

( ३०८ अ )

### देवकुलिका नं० ४६

सं० १२६३ अढाढ़क० २ गुरुवार के दिन श्रीधर्मघोष-सूरि के उपदेश से ओमवालजातीय सं० आंवड़ पुत्र जगसिंह, पुत्र उदयसिंह भार्या उदयादेवी के पुत्र नैणसिंहने इम जीरापल्लीपार्श्वतीर्थ में मोक्षरूपी धन प्राप्त करने के लिये देवकुलिका करवाई।

धर्मघोषसूरि नामक दो प्रसिद्ध आचार्य तेरहवीं शताब्दि में हो गये हैं। एक वे हैं जो श्रीजयसिंहसूरि के पट्ट को अलंकृत करनेवाले थे और जिनके पश्चात् श्रीमहेन्द्रसिंहसूरि हुए। उनका जन्म सं० १२०८, दीक्षा सं० १२२६, आचार्य-पद सं० १२३४ और निर्वाण सं० १२६८ में हुआ। द्वितीय श्रीदेवेन्द्रसूरि के पट्टधर और सोमप्रभसूरि के गुरु थे। माडवगढ़ के प्रसिद्ध महामंत्री पृथ्वीकुमार(पेथड़) के ये गुरु थे। निर्वाण सं० १३३२ में हुआ। दोनों आचार्यों के कालों पर विचार करने से यही उचित प्रतीत होता है कि तत्काल



देवकुलिका का द्वितान्यास सं० १२६३ में भीमपतिहरी के पङ्कपर भीममैयोपहरी के उपदेश से हुआ । सं० १२६५ में य आचार्य आछोर गये थे और वहाँ पर भीमसिंह नामक क्षत्रिय को प्रतिषेध देकर सहस्रदुग्ध जैनधर्मी बनाकर ओस बाळहाति में सम्मिश्रित किया था । इस घटना से इन आचार्य का सिरोही प्रान्त में सं० १२६३ में विहार हुआ होना ही चाहिये, प्रमाणित हो जाता है ।

( ब )

सं० १४८१ माद्रपदक० ७ गुरुवार के दिन तपामल्ल नायक भीमसुन्दरहरी के पङ्कमूष मङ्गारक भीमोमसुन्दरहरी भीमनिसुन्दरहरी भीमपन्नहरी भीमवनसुन्दरहरी के उपदेश से संमातनिवासी ओसबाळहातीय सोनी नरिआ पुत्र सोनी पद्मसिंह (छद्मपतिह) भार्या भास्वदेवीदेवी और पञ्चोत्तीर्षचैत्य में अष्टभुजिका के ऊपर शिवर बसवाया ।

( १०९ )

देवकुलिका न० ४८

“ अपने सप्त-कणों के द्वारा भीपाद्यमाधप्रसु संसारवासियों की और भीसंधों की सात मयों और सात नरक क मयों से रक्षा करते हैं, वे पार्थमाव आपसोंगों का रखन ॥ ” सं १४१३ फागुनशु० ११ के दिन स्वातिनक्षत्र

में बृहद्गच्छीय श्रीदेवचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरि के पट्ट को मृक्ताहार के समान सुशोभित करनेवाले श्रीरामचन्द्रसूरिने अपने आत्मश्रेयार्थ जीरापल्लीतीर्थ के चैत्य में देवकुलिका बनवाई । जीरापल्लीयगच्छ के सकल संघ को शुभकर हो । जब तक पृथ्वी रहेगी, सुमेरु रहेगा और सूर्य, चन्द्र गगन में प्रकाशक रहेंगे तब तक यह देवकुलिका लोगों के द्वारा प्रशंसा पाओ । ” सकल संघ और जीरापल्लीयगच्छ का मंगल होवे ।

( ३१० )

### देवकुलिका नं० ४९

“ श्रीपार्श्वनाथ भगवान् अपने मात फणों के द्वारा-संसारवासियों एवं संघ समुदायों की सिंहादि और रत्न-प्रभादि नरक मन्वन्धि सात भयों से रक्षा करते हैं, वे पार्श्वप्रभु आप लोगों का रक्षण करें । ” सं० १४११ चैत्र-कृ० ६ बुधवार के दिन अनुराधा नक्षत्र में बृहद्गच्छीय श्रीदेवचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरि के गादीधर तप से नमे हुए तप रूप धनवाले तपस्वी साधुओं के परिवार से परिवेष्टित जीरापल्लीय श्रीरामचन्द्रसूरिने पवित्र श्रीपार्श्वनाथ के चैत्य में देवकुलिका बनवाई । “ जब तक पृथ्वी, सुमेरु-पर्वत और आकाश में प्रकाशमान सूर्य चन्द्र स्थिर रहें तब तक यह देवकुलिका अभिनन्दिता ( जयवती ) रही । ”

( २९८ )

( ३११ )

### देवकुलिका न० ५०

“भीष्मान्वितनाथप्रभु का आत्मयस्य सुकिरमणी के ललाट स्थित मौजों को आनन्द देनेवाला है और प्रभु के चन्द्रमा का मित्र ( मृत ) संछन है जो दोष युक्त लोगों में नहीं पाया जाता ।” सं० १४१२ आधिन० ४ बुधवार के दिन कृषिका नक्षत्र में ओसवालझातीय व्य० अमरपाल भार्या राजलक्ष्मी पुत्र व्य० बीकामल भार्या पूषीबाई पुत्र ईंगर, पारहा, दोरहाने समस्तपरिवार सहित अपने कुटुम्ब के कल्याणार्थ भीषार्थनाथचैत्य में भीष्मान्वितनाथ की दक्ष कुलिका भीमिन्द्रयसेनछरि के शिष्य भीरत्नाकरछरि के उपदेश से बनवाई ।

( ३१२ )

### देवकुलिका न० ५१

सं० १४८१ माद्रपद० ७ गुरुवार के दिन उपागच्छ-नायक भीरेवसुन्दरछरि के पट्टपर भीसोमसुन्दरछरि भीमय चन्द्रछरि भीशुबनसुन्दरछरि के उपदेश से कलवर्मानिवासी ओसवालझातीय धा० मांडव, धा० धिबि के पुत्र देमाने सीरापल्लीठीर्यचैत्य में देवकुलिकाका शिखर बमबाया ।

---

१ केप्लाड ३९० के अनुसार ये आचार्य मध्यमगच्छीय हैं ।

( ३११ )

( ३१३ )

देवकुलिका नं० ५२

सं० १४८३ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के दिन वीमा भार्या  
वामादेवी, गोष्ठी सोनानी हीरा ।

( ३१४ )

सं० १४९२ मार्गशिरकृ० १४ रविवार के दिन घोघा-  
ग्रामनिवासी आड़ भार्या अहड़देवी पुत्री झमकुवाईने शिखर  
करवाया ।

( ३१५ )

देवकुलिका के छजा में—वामादेवी के पुत्र सीहड़ गोष्ठीने  
देवकुलिका करवाई ।

( ३१६ )

मूलजिनालय के पीछे देवकुलिका के स्तम्भ पर—

सं० १४८७ अरिहन्तों को नमस्कार हो । गून्दी कर  
पीपलगच्छ में त्रिमविया श्रीधर्मगेखरसूरि के शिष्य वाचक  
देवचन्द्र मुद्राकला से और तालध्वजीय वाचक सहजसुन्दर  
अर्हन्तों और जिनेश्वरों को नित्य वन्दन करता है ।

( ३१७ )

पटचतुष्किका के स्तम्भ पर—

सं० १८५१ आपादशुक्ला पूर्णिमा के दिन भीत्रीरा-

( १०० )

पल्ली के मन्दिर के शिखर का शीर्षोद्धार सकलमहारक-  
पुरन्दर महारक श्री श्री श्री १००८ श्रीरंगविमलेश्वरि के  
सदुपदेश से रु० ३०२११) व्यय करके छा० रुपा, छा०  
बोयता, छा० आनन्दा, छा० धीरम, छा० रामश्री, छा०  
इबादवीन सिरौही नगर से श्रुष्य संभय कर श्रीरापल्ली  
निवासी गजधर सोमपुर केसा दहा के द्वारा करवाया ।

( ११८ )

छोटानातीय में कायोरसर्गस्थ प्रतिमा—

सं० ११३० ज्येष्ठशु० ५..... के दिन निर्वाति  
हस क भीनन्द ( और ) आसपासन श्रीशेखरेश्वरि द्वारा भेट  
श्रीपार्श्वबिन की दो प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई ।

( ११९ )

अपमदेव पावुका—

सं १८६९ पौषशु० १३ गुरुवार के दिन श्रीअपम  
देवजी की पावुका को नमस्कार हो जो श्रीविद्यमलस्त्रीश्वरि  
के द्वारा छोटीपुर पत्तन में प्रतिष्ठित हुई ।

( १२० )

मठप में स्थापित सपरिकर प्रतिमा—

११४४ वैशाख० ४ के दिन प्राग्वाट्यातीय व्य०

( ३०१ )

श्रे० यापु भार्या देवीने श्रीवर्धमानस्वामी की प्रतिमा करवाई  
जो आहनगोत्रीय सहदेवने श्रीदेवाचार्य के द्वारा लोहापत्र  
( पुरस्थ ) आदिनाथ के मन्दिर में प्रतिष्ठित करवाई ।

( ३२१ )

### धातुमय पंचतीर्थ—

सं० १०११ में प्राग्वाट शा० नल का पुत्र सिंहदेव  
भार्या जामलदेवीने श्रीशान्तिनाथ ( पंचतीर्थ ) प्रतिमा  
उपकेशगच्छीय श्रीदेवगुप्तस्वरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाई ।

( ३२२ )

### सेलाबड़ा ( सिरौही ) धातुचतुर्विंशति—

सं० ( १३ ) २८ वैशाखक० ५ गुरुवार के दिन ब्रह्माण-  
गच्छीय श्रीविमलस्वरि के पट्टघर भ० श्रीबुद्धिस्वरि के द्वारा  
राणपुरनिवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० भूमव भार्या गृही  
देवी का पुत्र सरवण भार्या टमकुदेवी पुत्र धर्मा और ऊदा  
पितृव्य जूगणजीने श्रीधर्मनाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट प्रतिष्ठित  
करवाया ।

इस लेख का संवत् घिस जाने से पढ़ने में नहीं आया  
और २८ जो पढ़ने में आया वह भी अमात्मक तो नहीं है ।  
ब्रह्माणगच्छ के श्रीविमलस्वरि के कुछ लेख जिन्होंने

( ३०२ )

धरणी 'प्राचीनमैनलेखसंग्रह' नामक पुस्तक में संग्रहित किये हैं। उनका अंतिम खल सं० १३१६ का है। वैसे उक्त पुस्तक के खलाह ४६५ से प्रगट होता है। पाठ पोषीसी के उक्त लेख से स्पष्ट प्रगट है कि यह खल उस समय क पश्चात् का है जब बुद्धिसागर विमलधरि के पद पर आरुढ़ हो चुके थे। अतः यह खल सं० १३२८ का होना चाहिये। प्राचीनमैनलेखसंग्रह में इनके दो खल ४९५, ५०० नम्बर के १३२६ क हैं।

( ३२३ )

महावीरमुछाला के मंदिर के छज्जा में—

संवत् १०१३ में संवत्सिद्धने यह छज्जा करवाया।

( ३२४ )

महावीरमुछाला चैत्य में सुरक्षित पद्मासन पर—

सं० १२१४ कास्वुनशु० ५ के दिन भीषिणीय मांडव मीश के यशोमहधरि सन्तानीय अनुयायी रंजी भीसौदार के द्वारा भीषीसिद्धरिणी की उत्थापधानता में पद्मासन बनवाया।

( ३२५ )

वरमाण के चैत्य में प्रतिमा—

सं० ११५१ माघकृ० १ सोमवार के दिन प्राम्बाट

( ३०३ )

ज्ञातीय श्रे० झांझण भार्या राउल पुत्र सिंहराजने भार्या पद्मादेवी, लज्जालूवाई पुत्र पद्माजी भार्या मोहिनी पुत्र विजयसिंह सहित श्रीपार्श्वनाथजी की (कायोत्सर्ग) प्रतिमा करवाई ।

( ३२६ )

सं० १३५१ में ब्राह्मणगच्छीय भेता भंडाहड़िय श्रे० पूनसी ( पुण्यसिंह ) भार्या पद्मलदेवी पुत्र पद्मसिंहने (कायोत्सर्गस्थ) जिनयुग्म प्रतिष्ठित करवाये ।

( ३२७ )

**षट्चतुष्िका स्तम्भ पर—**

सं० १४८६ वैशाखकु० १ बुधवार के दिन ब्राह्मण-गच्छ के भट्टारक श्रीपुण्यग्रामसूरि के पट्टधर श्रीभद्रेश्वरसूरि के पट्टाधिपति श्रीविजयसेनसूरि के पट्टधर श्रीरत्नाकरसूरि के शिष्य श्रीविमलसूरि के द्वारा पुण्यार्थरंगमंडप बनवाया ।

( ३२८ )

**पद्मशिला की छत में—**

सं० १२४२ चैत्र शु० पूर्णिमा के रोज ब्राह्मणगच्छा-नुयायी श्रीपूनिगपुत्री ब्रह्मदत्ता जिनहा पोलहा, नानकी सहित श्री अजितनाथजी की देवकुलिका के लिये वीरप्रभु



( ३०४ )

की प्रतिमा तथा पद्मशिला करवाई । फूहड़ के द्वारा लेख उत्कीर्ण करवाया ।

( ३२९ )

सं० १६७३ वैशाख शु० ११ बुधवार के दिन ठ० सांझान माता आंजना ( अंजना ) देवी, पुत्र के कन्याधार्थ इच्छसपीप महारक श्रीपद्मनन्दी के सद्गुणदेव से श्रीपद्मप्रम स्वामी का ( पचतीर्थी ) चिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३३० )

सं० १६०६ काशुन शु० १० गुरुवार के दिन श्री भीमासप्तातीथ व्य० सुलस की भार्या सोहगदेवी के कन्या धार्थ पुत्र व्य० बांधकने श्रीपद्मेश्वरेश्वरि क द्वारा श्रीधार्थ नाथ का ( पचतीर्थी ) चिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३३१ )

दयाणा ( सिरोही ) कायोत्सर्गस्य प्रतिमा—

सं० १०११ आषाढ़ शु० ६ अमिबार के दिन सनड भार्या नपनाबाई पुत्र बसिषा, भार्या बपमलदेवी पुत्र सप्तमगसिंहने श्रीधार्थनाथ के पुत्र ( हो कायोत्सर्गस्य ) चिम्ब पुरहगच्छीय परमानन्देश्वरि के शिष्य के द्वारा प्रतिष्ठित करवाये ।

( ३०५ )

( ३३२ )

काछोली (सिरोही) मूलनायक के परिवार

सं० १३४३ में कछीलिका-पासनाथमन्दिर के  
( कार्यवाहक ) श्रेष्ठ श्रीपाल भार्या पिरियादेवी पुत्र  
श्रे० बोंड़ा भार्यावीरादेवी पुत्र श्रे० रांकदेव, पंथा देवी पुत्र  
सलखा पुत्र गला, श्रे० कर्मा भार्या अनुपमादेवी पुत्र  
अजयसिंहने श्रे० भातुखीदा और मोहन के साथ  
सिंह पुत्र श्रे० धनसिंह, शंभुपाल, श्रे० पुनद पुत्र  
सोहड़ पुत्र विजयसिंह, श्रे० शाक्षण पुत्र रामवि  
गोष्ठिकों के सहित माता पिता के कल्याणार्थ श्रीपासनाथ  
प्रभु का हार परिकर सहित कछोलीगच्छ के गुरुओं  
उपदेश से करवाया ।

कछोली, कछोली और कछोलीवाल गच्छ का परिवार  
अवश्य ग्रन्थों एवं लेखों में मिलता है, परन्तु मुनिमेरु (धन्व,  
विजय, सुन्दर) नामक कोई आचार्य या माधु वैरागी  
शताब्दि में हुए हैं, कोई पता नहीं लगता ।

( ३३३ )

पिंडवाडा ( सिरोही ) महावीर मन्दिर में छोटी  
धातुप्रतिमा—

सं० १००१ में श्रीश्रेयांसनाथ का चिम्न पुंवणने अपने  
कल्याणार्थ बनवाया ।

( ३०६ )

यह लेख इस संग्रह में सर्वश्रेष्ठों से प्राचीनतम है ।  
परन्तु दुःख है कि यह अति छोटा और वह भी अपूर्ण और  
अस्पष्ट है । गच्छ, आचार्य, गोत्र, वंश किसीका भी इसमें  
उल्लेख नहीं है ।

( ३३४ )

मीठडियातीर्थ में धातुपञ्चतीर्थ—

सं० १३१७ वैशाखशु० ९ के दिन प्राग्वाटझातीय  
मे० विद्वज्जगत्सिंह भार्या हांसलदेवी के कन्याधार्य० पुत्र  
मे० सोमाने श्रीमान्निनायजी का विष्णु महाप्रतिपदशुद्ध के  
श्रीचन्द्रसिंहछरि के विष्णु भीरविकरछरि के द्वारा प्रतिष्ठित  
करवाया ।

( ३३५ )

सं० १५३५ भाषक० ९ छनिवार के दिन कटुबपुर  
निवासी प्राग्वाटझातीय क्य० कज्जा भार्या देवीबाई पुत्र  
मोहाने स्वपत्नी रातुलबाई पुत्र हांसा, रघु, आदि परिव्रजों  
के सहित अपने पिता माता के कन्याधार्य तथागच्छ के  
श्रीलक्ष्मीसागरछरि के द्वारा श्रीमान्निनायजी का विष्णु  
प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३३६-३३७ )

धरणयुगल का लेख—

सं० १८३७ वीषक० १३ सोमवार के दिन महारक

श्रीश्री श्री १००८ श्रीहीरविजयसुग्रीश्वर गुरुवर को नमस्कार हो । श्रीहेतुविजयगणी के चरणयुगल हैं, श्रीमहिषाविजयगणी के चरणयुगल हैं ।

( ३३८ )

पार्श्वनाथचैत्य के भृगुह की पंचतीर्थी—

स० १५०७ माघमास में कावलीग्रामनिवासी श्रे० हूंगर भार्या रूपी पुत्र मालाने स्वभार्या टीयूबाई पुत्र कर्मा हेमा आदि परिजनों के सहित तपागच्छनायक श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि के शिष्य श्रीरत्नशेखरसूरि के द्वारा श्रीसुमतिनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३३९ )

स० १३३४ वैशाखकृ० ५ बुधवार के दिन श्रीजिनेश्वरसूरि के शिष्य श्रीजिनप्रबोधसूरि के द्वारा शा० बोद्धि पुत्र शा० वहजलने स्वभ्रातृ मूलदेव आदि के साथ अपने और अपने कुटुम्ब के कल्याणार्थ श्रीगौतमस्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई ।

( ३४०-३४१ )

पवामन की मिति के स्तंभ पर ' श्रीजीराउलाजी

---

१ अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंग्रह भा० द्वि० के लेखांक ३१७ के अनुसार ये आचार्य खरतरगच्छीय हैं ।

मूः उ ठ फ' और सीढ़ी के पासवाले स्तंभ पर 'मा अस  
 पवल संपरति' ये दो लेख उत्कीर्णित हैं, परन्तु इनके  
 रचना अर्थ समझ में नहीं आये, इसलिये इनका अनुवाद  
 छोड़ दिया है।

**भीलदियाग्राम के गृहमन्दिर में मूलनायक—**

इस गृहमन्दिर में मूलनायक प्रतिमा के अतिरिक्त  
 आदिनाथ और चन्द्रप्रभु की प्रतिमाएँ दोनों ओर विराज  
 मान हैं। इन तीनों प्रतिमाओं के लेख एक ही हैं।

( ३४९ )

सं १८९२ वैशाखशु० १३ बुधवार के दिन भीलड़ी  
 के तपागच्छीय समस्त महाजन संघन भीमेश्वरजी की  
 प्रतिमा करवाई। भीरहरमण्ड में चन्द्रप्रभुस्वामी और भी  
 आदिनाथस्वामी के बिम्बों की अंजनघसाका हुई ऐसा इन  
 कल्पों से सिद्ध होता है।

( ३४३ )

**अम्बिका की मूर्ति—**

सं० १३४४ ज्येष्ठशु० १० बुधवार के दिन भे० लक्ष्मण  
 सिंहने अम्बिका की मूर्ति करवाई।

( ३४४ )

## अधिष्ठायक मूर्ति—

सं० १३४४ ज्येष्ठशु० १० बुधवार के दिन श्रे० लक्ष्मणने अधिष्ठायक मूर्ति करवाई ।

( ३४५ )

## नेसड़ा ( पालनपुर ) के पार्श्वनाथ चैत्य में धातुमयमूर्ति—

सं० १२४४ माघ शु० १० सोमवार के दिन श्री-प्रमन्नसूरि के द्वारा डीसावाल श्रे० राणा पुत्र आशपाल, आता प्रेमसेन, शा० कलत्र रत्नदेवने भार्या सिरियादेवी के कल्याणार्थ यह चतुर्विंशतिजिनप्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई ।

कलत्र का यहाँ क्या अर्थ होता है, यह अस्पष्ट है ।  
वैसे कलत्र का प्रचलित अर्थ स्त्री है यहाँ आशपाल और प्रेम-सेन के कुटुम्बी जन से अर्थ लिया हुआ अधिक संगत है ।

( ३४६ )

सं० १३६९ फाल्गुन कृ० ५ सोमवार के दिन श्री-मुनिचन्द्रसूरि के उपदेशसे श्रीसूरि के द्वारा श्रीमालज्ञातीय श्रावक सज्जनने पिता खेता (क्षेत्रसिंह) माता लच्छुबाई के कल्याणार्थ श्रीआदिनाथपचतीर्थी प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई ।

( ११० )

( १४७ )

घात्यम ( दियोधर ) के चैत्य में पंचतीर्थी—

सं० १४४९ वैशाख शु० ६ शुकवार के दिन जंपल गण्ड के श्रीमेरुतुंगधरि के उपदेश से भीमरि के द्वारा शाला खाइ ठ० राजा मार्या मोलीदेवी पुत्र विक्रमसिंहने अपने माता पिता क कल्याणाय श्रीमहावीरवामी ( पंचतीर्थी ) विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( १४८ )

सं० १७८९ वैशाख शु० पुर्निमा गुरुवार के दिन प० श्रीजयविजयजी, प० श्रीशुक्रविजयजी, प० श्रीनित्यविजयजी, प० श्रीहीरविजयजी, प० श्रीबीरविजयजी की पादुकायें प्रतिष्ठित हुई ।

( १४९ )

वासणा ( पालनपुर ) के चन्द्रप्रभचैत्य में—

सं० १२४० माघ १३ क दिन लखमसी ( लखमन-सिंह ), रणसी ( रणसिंह ) से वीण ( सिंह ) और देपाल ( सिंह ) श्रीपञ्चदेवधरि के द्वारा ( चातुपंचतीर्थी ) प्रतिष्ठित करवाई ।

( १५० )

मूलनायक प्रतिमा—

सं० १९५५ फागुन ४० ५ गुरुवार क दिन प्राग्बाट

( ३११ )

केरा के पुत्र रूपा तल्लाजीने श्री( चन्द्रप्रभस्वामी का ) चिम्ब करवाया जिसकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका तपागच्छीय आहोर-नगर के संघने मट्टा० श्रीविजयराजेन्द्रसूरि के द्वारा आहोर में करवाई ।

( ३५१ )

**दक्षिणभाग में स्थापित—**

सं० १९५५ फाल्गुनकृ० ५ गुरुवार के दिन आहोर-निवासी तपागच्छीयसंघने श्री( चन्द्रप्रभप्रभु का ) चिम्ब करवाया । जसरूप जीतमलने श्रीराजेन्द्रसूरि के द्वारा आहोर में जिसकी प्रतिष्ठा ( अंजनशलाका ) करवाई ।

✓( ३५२ )

**बायें भाग में स्थापित—**

सं० १९५५ फाल्गुनकृ० ५ गुरुवार के दिन साधू-निवासी वृद्धशाखीय ओसवाल शा० केशरीमल कस्तूरचंदने श्री( चन्द्रप्रभप्रभु का ) चिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा आहोर नगर में मट्टा जसरूप जीतमलने म० श्रीराजेन्द्रसूरि के करकमल से करवाई ।

( ३५३ )

**पद्मासन के नीचे के प्रस्तर पर—**

श्रीराजेन्द्रसूरि, श्रीघनचन्द्रसूरि, श्रीभूपेन्द्रसूरि मद्-



( ३१९ )

गुरुजी को नमस्कार हो । सं० १९९७ मारवाड़ी पंचांग के अनुसार ठसम माह कार्तुनकृष्ण ६ के दिन कुम्भस्थ स्थिरांश सोमवार को प्रातःसमय बासनानगरनिवासी श्री माछडासीय बृहच्छास्त्रीय श्रीसंपने वर्तमानाचार्य महाराज श्री श्री १००८ विजयपरीन्द्रधरि क आदेश से मुनिर भीमद्वर्षविजय के द्वारा डा० भीमसिंह के राज्यकाष्ठ में स्थापित करवाई । श्रीसौधर्मबृहत्पगण्ड में शुभ कारक हो ।

( ३५४ )

लुभाणा ( दियोवर ) के आदिनाथ चैत्य में  
प्रस्तर प्रतिमा—

धातु घोषीशी पञ्चतीर्थियाँ—

सं० १९५५ कार्तुनकृ० ५ के दिन सियावानगर के समस्त संपने० श्रीराजन्द्रधरिजी क द्वारा ( बाहोर में श्री विमलनाथजी का ) विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३५५ )

सं १९५५ कार्तुमकृ० ५ के दिन सियावानिवासी संपने ( भीमहावीरप्रभु का ) विम्ब करवाया । जिसकी प्रतिष्ठा बाहोर में अमरूप भीतमसम सौधर्मबृहत्पगण्ड के म० श्रीविजयपराजेत्रधरि के द्वारा करवाई ।

( ३१३ )

( ३५६ )

सं० १५११ माघशु० ९ सोमवार के दिन जाणदीग्राम निवासी श्रीमालज्ञातीय व्य० पाल्हा भार्या पाल्हणदेवी पुत्र वानरने अपनी भार्या वीकलदेवी और सुपुत्र सहित पिता, माता, पितृव्य जाल्हा, आता पीताम्र और पूर्वजों के कल्याणार्थ श्रीअजितनाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट पूर्णिमागच्छीय श्रीराजतिलकस्वरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३५७ )

सं० १५२२ माघशु० ९ शनिवार के दिन सह्याला-ग्रामनिवासी प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० विरुआ भार्या आनीदेवी पुत्र सं० सांकडा भार्या झालीवाई पुत्र सं० अर्जुनने अपनी पत्नी अहिवदेवी सहित द्वितीया पत्नी रामती के कल्याणार्थ वृहत्तपागच्छीय प्रभु भट्टारक श्री श्री श्रीजिनरत्नस्वरि के द्वारा श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की प्रतिमा (पंचतीर्थी) प्रतिष्ठित करवाई ।

( ३५८ )

सं० १५२३ वैशाखशु० ३ के दिन वीरमगाँव निवासी प्राग्वाटज्ञातीय सं० नापाने भार्या लखमा ( लक्ष्मी ) देवी पुत्र खोना, ढाहय, हांमा, जावड, भावड भार्या क्रमशः अमरादेवी, नाथीदेवी, कनाईदेवी, मेघाईदेवी, आशादेवी उनके पुत्र नाकर, झटका, रूपा, सूर्रा आदि परिजनों सहित

( ३१४ )

भीरत्नक्षेत्रधरि के पञ्चपर भीमस्त्रीसागरधरि के द्वारा भीममठनाथ ( पंचतीर्थी ) विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३५९ )

सं० १५१७ कात्थुनशु० १ शुकवार के दिन विमल गच्छीय भीधर्मसागरधरि के द्वारा अहमदाबाद में श्रीमातङ्गहारीय दाह नागसिंह मार्या काशीबाई पुत्र बानर मा० आश्वीदेवीन स्वकन्यापार्ष भीममठनाथ—पंचतीर्थी प्रतिष्ठित करवाई ।

( ३६० )

सं० १५०५ माघशु० ५ रविवार के दिन पूर्वमातङ्गहारीय भीगुणसुन्दरधरि के उपदेश से श्री भीमातङ्गहारीय अ० बजरसिंह मार्या सोमलदेवी पुत्र समधरजन अपने माता पिता के कन्यापार्ष भीकन्युनाथ ( पंचतीर्थी ) विम्ब उद्विधि प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३६१ )

सं० १५१२ वैशाखशु० १० शुकवार के दिन श्री श्री वल्लीय मन्त्री घमा ( जनराज ) मार्या बापलदेवी पुत्र मन्त्री पांचा(पंचराज ) सुभाबकने स्वभार्या कङ्क, पुत्र मई० साठिम सहित पिता के पुण्यार्थ अंचलमन्त्र क मोक्षपक्षेधरधरि के उपदेश से सोलाकाग्राम में ( संमन्तः सुभापा ) श्रीतन भीसुमतिनाथ पंचतीर्थी विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३६५ )

( ३६२ )

सं० १६२४ विक्रम, शक सं० १४८८ माघशु० १  
सोमवार के दिन ओमवालज्ञातीय श्रे० घग्णा भार्या घरणा-  
देवी पुत्र देवचन्द्र भार्या सुजाणदेवी, प्रेमलदेवीने अपने  
वंश के कल्याणार्थ माधु पूर्णिमापक्ष के श्रीविद्याचन्द्रसूरि के  
उपदेश से श्रीवासुपूज्यस्वामी का ( पंचतीर्थी ) विम्ब  
बनवाया और संघने उमको प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३६३ )

सं० १५१३ पौषकृ० ३ शुक्रवार के दिन महाजनी  
सुहृद् भार्या सुहृदादेवी पुत्र भोजराजने भार्या अमरादेवी,  
माता पिता तथा आत्मकल्याणार्थ पूर्णिमापक्ष के श्रीकमल-  
सूरि के द्वारा श्रीशान्तिनाथ का ( पंचतीर्थी ) विम्ब प्रतिष्ठित  
करवाया ।

( ३६४ )

सं० १५९० वैशाखशु० ५ के दिन तपागच्छीय बृद्ध-  
शाखा के श्रीधनगत्तनसूरि के द्वारा पत्तन नगर में मोदज्ञातीय  
बृहच्छाखा के भणशाली भागा भार्या सोनाई ( सुवर्णदेवी )  
पुत्र तुलखाईने आत्म कल्याण के लिये श्रीशान्तिनाथ  
( पंचतीर्थी ) विम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३६५ )

सं० १५१० फाल्गुनशु० ३ गुरुवार के दिन नागेन्द्र-

( ३१९ )

गण्डीय भीगुणसमुद्रसरि के द्वारा वाराही ग्राम निवासी भीभीमालङ्कातीय सोरठियागोत्र के भ० मोरुठ मार्या सोदागदेवी पुत्र गोईद ( गोविन्द ) ने माता, पिता, पित्रूपत्र ( पचेरी माई ) त्रिहुन ( त्रिभुवन ) मार्या मांगूदेवी क कन्यागार्य भीहुन्पुनापषतुर्दिशसिन्निनपहु प्रतिष्ठित करवाया ।

( ३६६ )

स० १६६५ वैशाखशु० ६ के दिन रायपुर में भीभीमालङ्कातीय छाह बड़ोला नागा मार्या रूनीबाई पुत्र द्विबसिहन मार्या रत्नादेवी पुत्र भवसिंह मार्या बीरादेवी प्रहस्य कुटुम्ब सहित ( मर्ब या स्व ) कन्यागार्य भीगार्य नाय ( पचतीर्थी ) विम्ब करवाया जिनकी प्रतिष्ठा तथा गण्डीय महारक भीहीरविजयसरि के पहु को सुशोभित करनेवाले महारक भीविजयसोमसरि के द्वारा हुई ।

( ३६७ )

स० १५८२ वैशाखशु० १० छुक्रवार के दिन खैरा-ग्राम निवासी भीभीमालङ्कातीय व्य बख्ता मार्या मोरु बाई पुत्र सोमा मार्या सुदपदेवी पुत्र भीवाल मार्या भी देवीने अपने पूर्वजों के आत्मकन्यागार्य भीनमिनाय ( पंच तीर्थी ) विम्ब करवाया, जिनकी प्रतिष्ठा चैत्रगण्ड में परप पट्टीय भ० भीविजयदेवसरि के द्वारा हुई ।

( ३६७ )

( ३६८ )

सं० १५१५ आपादशु० ५ के दिन श्रीश्रीमालहातीय परीक्षक हंसराज भार्या वरजूबाई पुत्र भोजराजने स्वभार्या सोनीबाई, स्वकुटुम्ब के महित आत्मश्रेयार्थ श्रीविमलनाथजी का ( पंचतीर्थी ) विम्ब करवाया, जो पूर्णिमापक्षीय श्रीमागरतिलकसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित हुआ ।

लेखाङ्क ३५६ से ३६८ तक की धातुमूर्तियाँ बनासकांठा उत्तरगुजरात के छोटे गाँव एटा के समीपवर्ती एक कृषीकार के क्षेत्र में हल चलाते समय प्रस्तरमय श्री आदिनाथजी की सर्वाङ्गसुन्दर प्रतिमा के सहित भूमि से प्रगट हुई हैं । लुआणा के जैनसंघने वहाँ से लाकर अपने गाँव के सौधशिखरी जिनालय में अष्टाद्विक-महोत्सव पूर्वक श्री आदिनाथप्रभु को मूलनायक के स्थान पर और धातुमूर्तियों को ऊपर शिखर में विराजमान की हैं । मूलनायक की प्रतिमा पर लेख नहीं है । परन्तु इनके दहिने और बाँये भाग में श्रीविमलनाथजी और श्रीमहावीरस्वामी की प्रतिमाएँ स्थापित हैं, जो अर्वाचीन हैं और इनके लेख लेखाङ्क ३५४ तथा ३५५ में आ गये हैं । एटा गाँव लुआणा से ३ मील दूर थराद की ओर है । किसी समय यहाँ मन्व्यतम जैनमन्दिर होगा और जैनों के विशेष घर भी होंगे । वर्तमान में यहाँ न मन्दिर है और उसका न कुछ चिह्न है और न

( ३१८ )

एक भी मैत्र पर है । यह एषीस-सीस रुपरु होंगों का ग्राम रह गया है । यही तो काठ की विचित्रता है ।

( ३१९ )

मोटी पाघड़ ( घाघ-घनासफांठा )-

स० १५०९ अष्टक० ११ सोमवार के दिन धीमाठ शाहीप पीठा बुहरा माठा माल्हीदेवी पिठा माठा कन्याभार्य पुत्र देमा, पूड़ा, पन्ना आदिन भीशान्तिनाथ बहुबिंछतित्रिन पट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगण्डीय थीरनसिंह छरि के द्वारा हुई ।

जेतडा ( थराद ) के चौरय में स्थापित-

मूलनाथक की प्रतिमा का लेख विस्तार आने से बिक छुट जांचा नहीं आता । इनके दोनों ओर एक पार्श्वनाथ की और दूसरी चन्द्रप्रमप्रसू की प्रतिमाये स्थापित हैं । दोनों पर लेख एक ही व्यक्तिओं के हैं ।

( ३७०-३७१ )

संवत् १८११ माघशु० शुक्रवार के दिन गेठावाघ-निवासी भीमीमासशाहीप समस्तसंघम चन्द्रप्रमस्वामी और पार्श्वनाथप्रसू का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भीदिबय विनेन्द्रछरि के द्वारा हुई ।

( ३१९ )

( ३७२ )

## धातुमय पंचतीर्थियाँ—

सं० १४२५ वैशाखशु० ११ के दिन ब्रह्माणगच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय पितामही रामादेवी, पिता नथमल, माता लीलादेवी श्रे० ठ० श्रीपालने श्रीशान्तिनाथ की पंचतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीबुद्धिसागरसूरि द्वारा हुई ।

( ३७३ )

सं० १४८८ मार्गशिरकृ० ५ गुरुवार के दिन श्रीमाल-ज्ञातीय व्य० आंजन( अर्जुन ) भार्या भोलीबाई पुत्र आका- ( अक्षयराज )ने श्रीपार्श्वनाथजी का ( पंचतीर्थी ) विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीसोमसुन्दसूरि के द्वारा हुई ।

( ३७४ )

सं० १४२४ माघशु० ८ के दिन व्य० जयता भार्या हंसादेवी पुत्र बाहद( बाग्मट )ने अपने पिता माता के कल्याणार्थ श्रीपद्मप्रभस्वामी का (पंचतीर्थी) विम्ब करवाया ।







## शुद्धिपत्रकम्



अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
अनुक्रमणिका	अनुक्रमणिका	२	१८
सकती है	सकती हैं	३	२२
पुस्तक में	पुस्तक में	४	२०
कर्म हैं	कर्म है	५	११
यतीन्द्र	धातुप्रतिमा	५	११
प्राप्ति में	प्राप्ति में	५	१३
सौ० स्त्रियों के	सौ स्त्रियों के	६	१३
वहा	वहाँ	६	१६
गया हैं	गया है	७	५
क्रम भी	क्रम भी	८	१९
होता हैं	होता है	९	९
प्राचीनतम्	प्राचीनतम	१०	८
करानेवाले	करानेवाला	१०	१८
वर्षों	वर्षों	१४	३
गुम	गुम	१५	५
करते ही है	करते ही हैं	१५	९
विधर्मी	विधर्मी	१५	१९
वचानेवाली हैं	वचानेवाली है	१६	११

पशुपुत्र	पुत्र	पुत्र	पुत्र
पटपुत्रिका	पटपुत्रिका	२१	११
पुत्र	पुत्र	२४	१
पुत्र	पुत्र	२४	२०
पुत्र	पुत्र	४३	२
पुत्र	पुत्र	४३	४
पुत्र	पुत्र	४८	२२
पुत्रों की	पुत्रों की	६४	१
पुत्र	पुत्र	६८	२
पुत्र	पुत्र	६८	१९
पुत्र	पुत्र	७४	७
पुत्र	पुत्र	७८	११
पुत्र	पुत्र	७९	३
पुत्र	पुत्र	८६	८
पुत्र	पुत्र	८८	५
पुत्र	पुत्र	८९	२
पुत्र	पुत्र	९७	७
पुत्र	पुत्र	९७	१२
पुत्र	पुत्र	९८	११
पुत्र	पुत्र	१११	७
पुत्र	पुत्र	११५	३
पुत्र	पुत्र	१२०	१०
पुत्र	पुत्र	१४७	५

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
स	स०	१५०	७
पद्मावतंस	पद्मावतंस	१५८	३
प्राग्वाटे	प्राग्वाटे	१६९	१२
असरूप	जसरूप	१७४	२
षडेरक	प(ख)डेरक	१९०	१५
स्पष्ट है	स्पष्ट है	१९१	५
विग्व	विग्व	१९४	१७
अचलगच्छे	अचलगच्छे	१९८	१
श्रीश्रीमाल	श्रीश्रीमाल	२०१	१
वन रहा रहा है	वन रहा है	२०४	४
टही कुवाई	टहीकु वाई	२०७	१४
मा०	भा०	२१५	९
मा०	भा०	२१९	५
मुनिसिंह	मुनिसिंह	२२१	१०
जीवितस्वामि	जीवितस्वामी	२२३	६
श्रीश्रीमालजातिय	श्रीश्रीमालजातीय	२२७	१८
डसिंह	घडसिंह	२२८	११
।	म	२२९	५
माडन	माडण	२३१	१०
प्रवार्थ	श्रेयार्थ	२३१	१२
जीवितस्वामि	जीवितस्वामी	२३६	३

अनुय	गुय	पृष्ठ	वंशि
मापू	मापू	२३९	१५
मांजीबाई	मांजीबाई	२४०	१२
बनविक्रमपुरि	बनविक्रमपुरि	२४८	१७
बबने	बबने	२५२	१३
ब्यस्ता	ब्यस्ता	२५४	८
बनराज	बनराज	२५६	८
माभाठ	माभाठ	२५६	१३
मेहण	मेहण	२५८	१४
मं० सुषा	मं० सुषा	२८१	१५
छा	छा०	२८९	१०
पटवतुकिका	पटवतुकिका	२९९	१९
सोमपुर	सोमपुरा	३००	६
दो	दो कायोत्सव	३००	११
सेष्मबाडा	सेष्मबाडा	३०१	१०
मडाहडिया	मडाहडिया	३०३	६
बिमडा	बिमडा	३०३	१८
झांझाने	झांझाने	३०४	५
मिष्ठा है	मिष्ठा है	३०५	१३
कमठा	कमठा	३०५	१५
कस्यापार्थ	कस्यापार्थ	३०९	८
नीसोमसुन्दरपुरि	नीसोमसुन्दरपुरि	३१९	११

